नसीम

[ग़ज़ाला उपन्यास का दूसरा भाग]

लेखक

शौकत थानवी

अनुवादक

श्रीकृष्ण गुप्त

रिवाल्वर ग़ायब था। उसने उठने का इरादा ही किया था कि एक व्यक्ति बाकायदा कोट और ब्रिजेस पहिने अपने गम-बूट की सहायता से भारी कदम रखता हुआ उसके समीप आया। उस व्यक्ति के साथ दो तीन व्यक्ति और भी थे। परन्तु मालूम होता था कि वह ही इन सब का सरदार है। उसने आते ही कहा—"कहिये मिस्टर क्या हाल है? कैसी है अब आप की तबीयत ? मेरी सलाह यह है कि आप एक प्याली चाय की पी लें। और कोई चीज़ मुश्किल से हज़्म कर सकेंगे, अभी आपको मितली हो रही होगी ?"

नसीम ने साहस से काम लेकर कहा—"मैं कहां हूँ, यह क्या जगह है ?'

उस व्यक्ति ने निहायत बेपरवाही से कहा—"यह जगह ? इसको अब आप अपना निवास स्थान समझिए। यहां आपको उस समय तक कोई कष्ट न होगा जब तक कि आप मनुष्यता में रहेंगे। हां, अगर आपने सिर उठाया और विद्रोह करना चाहा तो यही स्थान आसानी से जहन्नुम बन सकता है।"

नसीम ने कहा..."आपकी तारीफ़ ?"

उस व्यक्ति ने कहा—"तारीफ़ तो उस खुदा की है जिसने जहां बनाया। इस सेवक को आप शान्तिप्रिय रहकर अपना सेवक और विद्रोही बनकर अपना काल कह सकते हैं। सिगरेट तो नहीं पीते आप ? मगर पहले चाय पी लीजिए।

नसीम ने कहा—"मुझको चाय से ज्यादा यह मालूम करने की इच्छा हो रही है कि मैं आखिर हूं कहां ?"

उस व्यक्ति ने बड़े अजीब ढंग से कहा—"हर बात जो इन्सान मालूम करना चाहे मालूम नहीं हुआ करती, और मान लीजिए कि आपको मालूम भी हो जाए तो आप क्या करेंगे ?"

नसीम ने कहा—"कम से कम जिज्ञासा शान्त हो जायेगी।"

उस व्यक्ति ने कहा—"यह श्रीमान एक पहाड़ी दर्रा है अब आप पूछेंगे पहाड़ का नाम ? और यह बात आपसे असम्बन्धित है अतः मैं बता न सकूंगा इसलिए उचित यही है कि इसको अतिथिगृह समझ कर हम लोगों को अतिथि-सत्कार का अवसर दें।

नसीम ने कहा—"तो मैं यहां गिरफ्तार हूँ।"

उस व्यक्ति ने कुछ हास्य-मिश्रित स्वर में कहा—"तोबा, तोबा गिरफ्तार नहीं हैं साहब, आप अतिथि हैं, गिरफ्तार हों आपके दुश्मन । हां, मित्रतापूर्ण निवेदन है कि इस सीमा से बाहर होने का प्रयत्न न करें ।"

नसीम ने कहा—"वह सीमा क्या है ?"

उस व्यक्ति ने कहा—"मतलब यह कि आप हमें आतिथ्य-सत्कार से वंचित करने का प्रयत्न न कीजियेगा। इस दर्रे के अन्दर जितना जी चाहें घूम-फिर लें, दर्रे के बाहर न पधारियेगा । वरना सम्भव है कि कोई रक्षक किसी प्रकार की गुस्ताखी कर बैठे। तीसरी बात यह कि व्यर्थ में इस प्रकार के सोच विचार में समय नष्ट न कीजियेगा कि निश्चित रास्तों के अतिरिक्त जिन पर कड़ा पहरा है और कौन सी राह आपको भागने की मिल सकती है ? यदि आपको पुस्तकें पढ़ने का शौक हो तो पुस्तकों की व्यवस्था कर दी जाए, ब्रिज वग़ैरह से दिलचस्पी हो तो यह सेवक स्वयं हाजिर है और ब्रिज के दूसरे साथी भी मौजूद हैं। दैनिक पत्रिकाएं यहां नहीं पहुँचती, इस विषय में आशा है कि आप क्षमा करेंगे ।"

इतनी देर में वही भूरा व्यक्ति एक ट्रे में चाय तमीज़ के साथ लेकर आ गया, "चाय साब ।"

नसीम ने उस सरदार नुमा व्यक्ति से कहा—"मैं आपको किस नाम से सम्बोधित करूं ?"

उस व्यक्ति ने कहा—"बस सेवक कह दिया कीजिए ! नाम क्या करियेगा मालूम करके ?"

नसीम ने कहा—"सेवक ! खूब नाम है वढाइए, ओहदा ही बता दीजिए ?"

उस व्यक्ति ने कहा—"आपको धीरे-धीरे पूरी वंशावली ही बता दूंगा । इस समय आप चाय नोश फ़रमाएं। लीजिए मैं भी आपका साथ देता हूं।"

यह कह कर उस व्यक्ति ने एक फ़ोल्डिंग चेयर पलंग के नीचे से निकाली और उसको खोलकर बैठते हुए कहा—"यदि भूख हो तो कुछ नाश्ता भी हाजिर किया जा सकता है, परन्तु आपकी मितली आपको खाने न देगी

नसीम ने कहा,"मुझे मितली के अलावा सख्त चक्कर आ रहे हैं इस वक्त।"

उस व्यक्ति ने कहा—"मैं जानता हूँ। इस समय आप एक प्याली चाय पीकर तसल्ली के साथ विश्राम करें। अपने मस्तिष्क को उन बातों में न उलझाएँ जिनको समझने की इस वक्त आप में सामर्थ्य नहीं है।"

उस व्यक्ति ने खुद नसीम के लिए भी चाय बना दी और दूसरी प्याली अपने लिये बनाकर कहा—"बिस्मिल्लाह। शुरू कीजिए ना।"

नसीम ने चाय का एक घूँट लेकर कहा—"इतना तो खैर मालूम हो ही गया कि आप मुसलमान हैं।"

उस व्यक्ति ने हँसकर कहा—"केवल इसलिए कि मैंने कहा बिस्मिल्लाह, जनाब वाला। यह तो जबान है। प्रतिदिन की बोल-चाल में इन मजहबी चीजों को भी एक व्यवहारिक रूप प्राप्त हो गया है। धार्मिक दृष्टिकोण से बिस्मिल्लाह के अर्थ कुछ और होंगे और व्यवहारिक दृष्टिकोण से कुछ और हैं। फिर भी मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मैं न मुसलमान हूँ न हिन्दू, मैं इनसान हूँ और ऐसी सूरत में जबकि मेरी इनसानियत भी खतरे में है और मेरे कर्तव्य ने मुझको इनसान से भटका रखा है। मैं मजहब की ओर ध्यान ही नहीं दे सकता।"

नसीम ने चाय का एक प्याला मुश्किल से खत्म करते हुए कहा—"बस जनाब मैं इससे अधिक साहस नहीं कर सकता, यही चाय उमड़ी आ रही है।"

उस व्यक्ति ने—"यह दशा तो आज की रात तो जरूर रहेगी, सुबह आप की स्थिति बिल्कुल ठीक होगी। जबकि रात को आपको नींद अच्छी तरह आ गई। आपको सर्दी तो नहीं मालूम होती इन दो कम्बलों में ?"

नसीम ने कहा—नहीं।

फिर भी एहतियात के तौर पर मैं दो कम्बल और रखवा दूँगा। हालांकि रात को आप शायद एक और कम्बल इस्तेमाल करें। वरना यह चौथा कम्बल भी मौजूद रहेगा, आप इस्तेमाल कर सकते हैं। अच्छा अब आप सोने की चेष्टा करें और मुझको सुबह तक के लिए इजाजत दें।

नसीम ने कहा—"जरा देर और ठहरिये। मैं समझता हूं कि एकान्त में

घबराने की बजाए आप से बातें करते-करते मुझे नींद आ जाए। आपने चाय के बाद कुछ सिगरेट की बात की थी ?"

उस व्यक्ति ने कहा—"मुझे याद थी सिगरेट मगर मैं चाहता था कि आप भूल जाएँ। फिर भी लीजिए जितने कम कश ले सकें, उतना ही अच्छा है। कल से जितना चाहें सिगरेट पीजियेगा।"

नसीम ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा—"अगर यह कैद है, तो अजीब कैद है जिसमें आप जैसा रक्षक मिला है।"

उस व्यक्ति ने हँसकर कहा—"अगर आपने यह मेरी तारीफ़ की है तो शुक्रिया। वास्तव में मुझको थोड़ी-थोड़ी दोनों बातें आती हैं चारित्रिक भी अचारित्रिक भी। जहाँ तक मेरे कर्त्तव्य का सम्बन्ध है यदि आप मेरे साथ सहयोग प्रदान करते रहे और मेरे कर्तव्य को सरल बनाते रहे, कोई कारण नहीं कि मैं आपके साथ बुरा व्यवहार करूँ। हाँ, विद्रोह के रूप में, कहने वालों का यह कथन है कि चंगेज़खाँ और नादिरशाह के इतिहास के पृष्ठ भी मेरे ज़ुल्म से काँपने लगते हैं। मैं सुबह आपको दोनों रूप दिखाऊँगा, शर्त यह है आप देखना चाहें। यों आप भरोसा रखिये कि मैं आपका बेहतरीन दोस्त साबित हो जाऊँगा। बात यह है कि खुद मेरी जिन्दगी को कुछ अपनी जैसी रुचि वालों की तलाश रहती है, जो इस कठोर कर्त्तव्य को मेरे लिए सुखद बना सकें। मुझको आपके सम्बन्ध में जब से यह सूचना मिली है कि आप माशाअल्लाह शिक्षित हैं, बुद्धिमान भी, साहित्य-प्रेम भी रखते हैं और अच्छी सोसायटी के गुण भी आप में हैं, मुझको अत्यधिक प्रसन्नता हुई है। कि—

"खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो !"

नसीम ने कहा—"आप अगर इतने समझदार हैं तो इस बात का अन्दाजा तो आपको होना ही चाहिये कि मैं उस समय तक यहाँ से भागने का प्रयत्न नहीं करूँगा जब तक कि खुद आपकी तरफ़ से उसका मौका न दिया जाए। और यह भी बिलकुल सच है कि यदि मौका मिल गया तो केवल चारित्रिक और लिहाज के भाव को लिए हुए यहाँ बैठा भी न रहूँगा।"

उस व्यक्ति ने नसीम से हाथ मिलाते हुए कहा—"बहुत उम्दा, बहुत

नसीम ने कहा, "मुझे मितली के अलावा सख्त चक्कर आ रहे हैं इस वक्त।"

उस व्यक्ति ने कहा—"मैं जानता हूँ। इस समय आप एक प्याली चाय पीकर तसल्ली के साथ विश्राम करें। अपने मस्तिष्क को उन बातों में न उलझाएं जिनको समझने की इस वक्त आप में सामर्थ्य नहीं है।"

उस व्यक्ति ने खुद नसीम के लिए भी चाय बना दी और दूसरी प्याली अपने लिये बनाकर कहा—"बिस्मिल्लाह। शुरू कीजिए ना।"

नसीम ने चाय का एक घूंट लेकर कहा—"इतना तो खैर मालूम हो ही गया कि आप मुसलमान हैं।"

उस व्यक्ति ने हँसकर कहा—"केवल इसलिए कि मैंने कहा बिस्मिल्लाह, जनाब वाला। यह तो ज़बान है। प्रतिदिन की बोल-चाल में इन मजहबी चीज़ों को भी एक व्यवहारिक रूप प्राप्त हो गया है। धार्मिक दृष्टिकोण से बिस्मिल्लाह के अर्थ कुछ और होंगे और व्यवहारिक दृष्टिकोण से कुछ और हैं। फिर भी मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मैं न मुसलमान हूँ न हिन्दू, मैं इनसान हूँ और ऐसी सूरत में जबकि मेरी इनसानियत भी खतरे में है मेरे कर्तव्य ने मुझको इनसान से भटका रखा है। मैं मजहब की ओर ध्यान ही नहीं दे सकता।"

नसीम ने चाय का एक प्याला मुश्किल से खत्म करते हुए कहा—"बस जनाब मैं इससे अधिक साहस नहीं कर सकता, यही चाय उमड़ी आ रही है।"

उस व्यक्ति ने—"यह दशा तो आज की रात तो जरूर रहेगी, सुबह आप की स्थिति बिल्कुल ठीक होगी। जबकि रात को आपको नींद अच्छी तरह आ गई। आपको सर्दी तो नहीं मालूम होती इन दो कम्बलों में ?"

नसीम ने कहा—नहीं।

फिर भी एहतियात के तौर पर मैं दो कम्बल और रखवा दूंगा। हालांकि रात को आप शायद एक और कम्बल इस्तेमाल करें। वरना यह चौथा कम्बल भी मौजूद रहेगा, आप इस्तेमाल कर सकते हैं। अच्छा अब आप सोने की चेष्टा करें और मुझको सुबह तक के लिए इजाज़त दें।

नसीम ने कहा—"ज़रा देर और ठहरिये। मैं समझता हूँ कि एकान्त में

घबराने की बजाए आप से बातें करते-करते मुझे नींद आ जाए। आपने चाय के बाद कुछ सिगरेट की बात की थी ?"

उस व्यक्ति ने कहा—"मुझे याद थी सिगरेट मगर मैं चाहता था कि आप भूल जाएँ। फिर भी लीजिए जितने कम कश ले सकें, उतना ही अच्छा है। कल से जितना चाहें सिगरेट पीजियेगा।"

नसीम ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा—"अगर यह कैद है, तो अजीब कैद है जिसमें आप जैसा रक्षक मिला है।"

उस व्यक्ति ने हँसकर कहा—"अगर आपने यह मेरी तारीफ की है तो शुक्रिया। वास्तव में मुझको थोड़ी-थोड़ी दोनों बातें आती हैं चारित्रिक भी अचारित्रिक भी। जहाँ तक मेरे कर्तव्य का सम्बन्ध है यदि आप मेरे साथ सहयोग प्रदान करते रहे और मेरे कर्तव्य को सरल बनाते रहे, कोई कारण नहीं कि मैं आपके साथ बुरा व्यवहार करूँ। हाँ, विद्रोह के रूप में, कहने वालों का यह कथन है कि चंगेजखाँ और नादिरशाह के इतिहास के पृष्ठ भी मेरे जुल्म से काँपने लगते हैं। मैं सुबह आपको दोनों हृदय दिखाऊँगा, शर्त यह है आप देखना चाहें। यों आप भरोसा रखिये कि मैं आपका बेहतरीन दोस्त साबित हो जाऊँगा। बात यह है कि खुद मेरी जिन्दगी को कुछ अपनी जैसी रुचि वालों की तलाश रहती है, जो इस कठोर कर्तव्य को मेरे लिए सुखद बना सकें। मुझको आपके सम्बन्ध में जब से यह सूचना मिली है कि आप माशाअल्लाह शिक्षित हैं, बुद्धिमान भी, साहित्य-प्रेम भी रखते हैं और अच्छी सोसायटी के गुण भी आप में हैं, मुझको अत्यधिक प्रसन्नता हुई है। कि—

"खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो !"

नसीम ने कहा—"आप अगर इतने समझदार हैं तो इस बात का अन्दाजा तो आपको होना ही चाहिये कि मैं उस समय तक यहाँ से भागने का प्रयत्न नहीं करूँगा जब तक कि खुद आपकी तरफ़ से उसका मौका न दिया जाए। और यह भी बिलकुल सच है कि यदि मौका मिल गया तो केवल चारित्रिक और लिहाज के भाव को लिए हुए यहाँ बैठा भी न रहूँगा।"

उस व्यक्ति ने नसीम से हाथ मिलाते हुए कहा—"यह

सच्ची बात कही आपने। यदि मैं कहीं समझदार न होता तो इस सुन्दर बात को समझ ही न सकता। देखिये इस तरफ़ से आप बिलकुल निश्चिन्त रहें कि मैं निहायत ईमानदारी के साथ उस बेईमानी को निबाहने की पूरी कोशिश करता हूँ। आपको तशरीफ़ ले जाने का मौका सम्भवतः न मिल सकेगा। यदि आपने राज़ी-बरज़ा रह कर इन पाबन्दियों को जबरदस्ती तोड़ना न चाहा, तो सम्भवतः आपको मुझसे और मेरे आदमियों से कोई शिकायत पैदा न होगी। और यदि आपने ज़बर्दस्ती शुरू कर दी तो प्रकट है कि उसका परिणाम तो कुछ होगा नहीं अलबत्ता कुछ अरुचि उत्पन्न हो जाएगी और अच्छे दिल बुरे होंगे।"

नसीम ने इस परेशानी और स्थिति के होते हुए, जो उसको हो सकती थी—हंसकर कहा, "जो कुछ होना था वह तो हुआ, मगर आपकी बातचीत निहायत दिलचस्प है। शुरू-शुरू में मुझको आपके बात करने के ढंग से व्यंग का सन्देह-सा हुआ परन्तु मालूम यह हुआ कि आपका बात करने का ढंग ही है।"

उस व्यक्ति ने कहा—"देखिये मिस्टर नसीम! मेरा विश्वास यह है कि सुखद, सभ्य और मधुर ढंग की वार्तालाप सुनने वाले से अधिक बात करने वाले को अधिक आनन्द प्राप्त होता है। यदि मैं अपने-आपको एक ज़ालिम रक्षक समझ कर कटु बातचीत करूँ तो प्रकट है कि इससे मेरे अधिकार, मेरी प्रतिभा, मेरे रोब-दाब का अन्दाज़ा अवश्य हो जाएगा मगर खुद मुझको आत्मिक आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। यह सच है कि मैं रक्षक भी हूँ और ज़रूरत पड़ने पर ज़ालिम भी बन सकता हूँ। मगर व्यर्थ में मैं अपने खून को क्यों खौलाऊँ। बिना वजह अपने स्वभाव को क्यों चिड़चिड़ा बनाऊँ। मेरा उद्देश्य तो हमेशा यह रहा है कि इस सुरक्षित स्थान को अपने अलावा आप लोगों के लिए भी एक क्लब के रूप में प्रस्तुत करूँ, ताकि मेरा समय खुशी और दिलचस्पी के साथ व्यतीत हो और आपके अरुचिकारक क्षण भी साधारणतः गुजरते रहें। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी आ जाते हैं जो मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझको सख्ती करने के लिए विवश कर देते हैं। मेरा काम केवल यह है

कि मैं आपको यहाँ से निकलने नहीं दूँगा। इस कर्त्तव्य को मैं चाहता हूँ कि प्रेम, हमदर्दी और सुखद ढंग से पूरा कर लूँ। किन्तु जब मजबूर कर दिया जाता हूँ तो दूसरी सूरत अख्तियार कर लेता हूँ। मगर इसकी जिम्मेदारी खुद मुझ पर नहीं होती।"

नसीम ने कहा—"अच्छा खैर अब तो अपना नाम बता दीजिये।"

उस व्यक्ति ने कहा—"आप मुझको तिवारी कह सकते हैं। अच्छा अब आप वास्तव में आराम करें, आपके लिए नींद का आना अत्यन्त आवश्यक है कल सुबह मुलाकात होगी।"

तिवारी के जाने के बाद उस वातावरण के बारे में देर तक सोच-विचार करता रहा और उसी दशा में खुदा जाने कब आंख लग गई? नींद तो फाँसी के तख्ते पर भी आ जाती है न।

सच्ची वात कही आपने। यदि मैं कहीं समझदार न होता तो इस सुन्दर वात को समझ ही न सकता। देखिये इस तरफ़ से आप विलकुल निश्चिन्त रहें कि मैं निहायत ईमानदारी के साथ उस वेईमानी को निवाहने की पूरी कोशिश करता हूँ। आपको तशरीफ़ ले जाने का मौका सम्भवतः न मिल सकेगा। यदि आपने राज़ी-वरज़ा रह कर इन पावन्दियों को जवरदस्ती तोड़ना न चाहा, तो सम्भवतः आपको मुझसे और मेरे आदमियों से कोई शिकायत पैदा न होगी। और यदि आपने जवर्दस्ती शुरू कर दी तो प्रकट है कि उसका परिणाम तो कुछ होगा नहीं अलवत्ता कुछ अरुचि उत्पन्न हो जाएगी और अच्छे दिल वुरे होंगे।"

नसीम ने इस परेशानी और स्थिति के होते हुए, जो उसको हो सकती थी—हँसकर कहा, "जो कुछ होना था वह तो हुआ, मगर आपकी वातचीत निहायत दिलचस्प है। शुरू-शुरू में मुझको आपके वात करने के ढंग से व्यंग सन्देह-सा हुआ परन्तु मालूम यह हुआ कि आपका वात करने का ढंग ही है।"

उस व्यक्ति ने कहा—"देखिये मिस्टर नसीम! मेरा विश्वास यह है कि सुखद, सभ्य और मधुर ढंग की वार्तालाप सुनने वाले से अधिक वात करने वाले को अधिक आनन्द प्राप्त होता है। यदि मैं अपने-आपको एक ज़ालिम रक्षक समझ कर कटु वातचीत करूँ तो प्रकट है कि इससे मेरे अधिकार, मेरी प्रतिभा, मेरे रोव-दाव का अन्दाज़ा अवश्य हो जाएगा मगर खुद मुझको आत्मिक आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। यह सच है कि मैं रक्षक भी हूँ और ज़रूरत पड़ने पर ज़ालिम भी वन सकता हूँ। मगर व्यर्थ में मैं अपने खून को क्यों खौलाऊँ। विना वजह अपने स्वभाव को क्यों चिड़चिड़ा वनाऊँ। मेरा उद्देश्य तो हमेशा यह रहा है कि इस सुरक्षित स्थान को अपने अलावा आप लोगों के लिए भी एक क्लव के रूप में प्रस्तुत करूँ, ताकि मेरा समय खुशी और दिलचस्पी के साथ व्यतीत हो और आपके अरुचिकारक क्षण भी साधारणतः गुजरते रहें। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी आ जाते हैं जो मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझको सख्ती करने के लिए विवश कर देते हैं। मेरा काम केवल यह है

कि मैं आपको यहाँ से निकलने नहीं दूँगा । इस कर्तव्य को मैं चाहता हूँ कि प्रेम, हमदर्दी और सुखद ढंग से पूरा कर लूँ । किन्तु जब मजबूर कर दिया जाता हूँ तो दूसरी सूरत अख्तियार कर लेता हूँ । मगर इसकी जिम्मेदारी खुद मुझ पर नहीं होती ।"

नसीम ने कहा—"अच्छा और अब तो अपना नाम बता दीजिये ।"

उस व्यक्ति ने कहा—"आप मुझको तिवारी कह सकते हैं । अच्छा अब आप वास्तव में आराम करें, आपके लिए नींद का आना अत्यन्त आवश्यक है कल सुबह मुलाकात होगी ।"

तिवारी के जाने के बाद उस वातावरण के बारे में देर तक सोच-विचार करता रहा और उसी दशा में खुदा जाने कब आंख लग गई ? नींद तो फांसी के तख्ते पर भी आ जाती है न ।

च्ची बात कही आपने। यदि मैं कहीं समझदार न होता तो इस सुन्दर बात
ो समझ ही न सकता। देखिये इस तरफ़ से आप बिलकुल निश्चिन्त रहें कि
निहायत ईमानदारी के साथ इस बेईमानी को निबाहने की पूरी कोशिश
रता हूँ। आपको तशरीफ़ ले जाने का मौका सम्भवतः न मिल सकेगा।
दि आपने राज़ी-बरज़ा रह कर इन पाबन्दियों को जबरदस्ती तोड़ना न
ाहा, तो सम्भवतः आपको मुझसे और मेरे आदमियों से कोई शिकायत पैदा
होगी। और यदि आपने ज़बर्दस्ती शुरू कर दी तो प्रकट है कि उसका
रिणाम तो कुछ होगा नहीं अलबत्ता कुछ अरुचि उत्पन्न हो जाएगी और
अच्छे दिल बुरे होंगे।"

नसीम ने इस परेशानी और स्थिति के होते हुए, जो उसको हो सकती थी—हंसकर कहा, "जो कुछ होना था वह तो हुआ, मगर आपकी बातचीत निहायत दिलचस्प है। शुरू-शुरू में मुझको आपके बात करने के ढंग से व्यंग सन्देह-सा हुआ परन्तु मालूम यह हुआ कि आपका बात करने का ढंग ही है।"

उस व्यक्ति ने कहा—"देखिये मिस्टर नसीम! मेरा विश्वास यह है कि सुखद, सभ्य और मधुर ढंग की वार्तालाप सुनने वाले से अधिक बात करने वाले को अधिक आनन्द प्राप्त होता है। यदि मैं अपने-आपको एक ज़ालिम रक्षक समझ कर कटु बातचीत करूँ तो प्रकट है कि इससे मेरे अधिकार, मेरी प्रतिभा, मेरे रोब-दाब का अन्दाज़ा अवश्य हो जाएगा मगर खुद मुझको आत्मिक आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। यह सच है कि मैं रक्षक भी हूँ और जरूरत पड़ने पर ज़ालिम भी बन सकता हूँ। मगर व्यर्थ में मैं अपने खून को क्यों खौलाऊँ। बिना वजह अपने स्वभाव को क्यों चिड़चिड़ा बनाऊँ। मेरा उद्देश्य तो हमेशा यह रहा है कि इस सुरक्षित स्थान को अपने अलावा आप लोगों के लिए भी एक क्लब के रूप में प्रस्तुत करूँ, ताकि मेरा समय खुशी और दिलचस्पी के साथ व्यतीत हो और आपके अरुचिकारक क्षण भी साधारणतः गुजरते रहें। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी आ जाते हैं जो मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझको सख्ती करने के लिए विवश कर देते हैं। मेरा काम केवल यह है

कि मैं आपको यहां से निकलने नहीं दूंगा। इस कर्त्तव्य को मैं चाहता हूँ कि प्रेम, हमदर्दी और सुखद ढंग से पूरा कर लूं। किन्तु जब मजबूर कर दिया जाता हूँ तो दूसरी सूरत अख्तियार कर लेता हूँ। मगर इसकी जिम्मेदारी खुद मुझ पर नहीं होती।"

नसीम ने कहा—"अच्छा खैर अब तो अपना नाम बता दीजिये।"

उस व्यक्ति ने कहा—"आप मुझको तिवारी कह सकते हैं। अच्छा अब आप वास्तव में आराम करें, आपके लिए नींद का आना अत्यन्त आवश्यक है कल सुबह मुलाकात होगी।"

तिवारी के जाने के बाद उस वातावरण के बारे में देर तक सोच-विचार करता रहा और उसी दशा में खुदा जाने कब आंख लग गई? नींद तो फांसी के तख्ते पर भी आ जाती है न।

२

नसीम के गुम हो जाने से जो स्थिति नवाब साहब के यहाँ हो सकती थी वह प्रकट है। आज नसीम को ग़ायब हुए दूसरा दिन हो चुका है। और इस बीच में न तो किसी को खाने का होश है न पीने का। ग़ज़ाला की यह हालत है कि उसको ग़श-पर-ग़श आ रहे हैं। और जब थोड़ी देर के लिए होशियार हो जाती है तो रोते-रोते बुरा हाल कर लेती है। अब उसको इसकी भी परवाह नहीं है कि उसकी इस दशा को देखने वाले क्या कहेंगे। बेग़म साहिबा को क्या सम्भालतीं, खुद उनको संभालने वाला कोई नहीं था। हद यह है कि खुशकदम तक बौखलाई-बौखलाई फिर रही है और इधर-उधर कोने में मुँह डालकर रो लेती है या रो-रोकर दुआ के लिए आँचल फैला-फैलाकर रह जाती है। नवाब फ़लक रफ़अत जिनको खुद अपने मुकदमे के सम्बन्ध में कचहरी तक जाना अखरता था, चौकी थाने फिर रहे हैं। और जहानदार मिर्जा साहब हृदय को दृढ़ करने के पश्चात् भी दिल के दौरे में ग्रस्त हैं। ग़फ्फ़ूर ने कई बार शकूर से मिलने का प्रयत्न किया परन्तु सफल न हुआ। नाहीद यह खबर सुनते ही कल ही ग़ज़ाला के पास आ गई थी और आफ़ताब ने अलग दौड़ धूप शुरू कर रखी थी—किन्तु अब तक कोई पता न चला था। इसको सौभाग्य ही कहना चाहिये कि आफ़ताब और नसीम दोनों के सहपाठी मुनीर उन्हीं दिनों डी० एस० पी० होकर लखनऊ आ गये थे, उनकी वजह से पुलिस पूरी छानबीन कर रही थी और खुद मुनीर अपना पूरा ज़ोर लगा रहे थे कि नसीम का कुछ सुराग़ मिले। आफ़ताब उनके साथ-साथ थे मगर अभी तक कोई सफलता प्राप्त न हुई थी। इस समय भी आफ़ताब और मुनीर

दोनों,सुवह के गए हुए थे दोपहर को थके-हारे नवाव साहव की हवेली में पहुँचे थे और दोनों नवाव साहवान के पास बैठे हुए सोच-विचार में तल्लीन थे ।

आफताव ने कहा—"मुझको असल में शकूर की तलाश है उसको जरूर कोई-न-कोई खबर होगी । मगर वह यहाँ नहीं आ रहा है इसमें भी कोई-न-कोई बात है ।"

मुनीर ने कहा—"मेरी अब भी यही राय है कि अगन साहव और दुलारे मिर्जा बल्कि सुलेमान कदर को भी हिरासत में ले लिया जाए ।"

आफताव ने कहा—"इस वक्त यह कार्य उचित नहीं है । मैं आपको हर्गिज राय न दूँगा ।"

जहानदार मिर्जा साहव ने कहा—"क्यों, आखिर क्यो ? मेरी राय में तो डिप्टी साहव की राय बहुत ठीक है ।"

आफ़ताव ने कहा—"पूज्यवर बात यह है कि इस तरह नसीम का पता बजाये चलने के और भी न चल सकेगा । अगन साहब और दुलारे मिर्जा मामूली तरह के अपराधी नहीं हैं कि वे पुलिस की जरा सी सख्ती से अपराध स्वीकार कर लें । मैं तो यह चाहता हूँ कि किसी तरह शकूर आ जाता और उससे पूरी स्थिति मालूम हो जाती । इसके बाद हम कोई असली कदम उठाते ।

उसी वक्त एक थानेदार ने आकर मुनीर को सैल्यूट करते हुए कहा—

"हुजूर एक पठान रस्सियों से बंधा हुआ वेलीगारद के निकट नाले मे पाया गया है । उसका कथन है कि वह नसीम साहव के दो अंगरक्षकों में से एक है ।"

आफताव ने कहा—"जी हाँ, जी हाँ । उसे जरूर कुछ हाल मालूम होगा ।"

मुनीर ने कहा—"देखिये पंडितजी ! उस आदमी को मेरे पास ले आइये । मैं खुद उससे कुछ सवाल कर लूगा ।"

मुनीर से सब-इन्सपेक्टर ने कहा—"मैं लाया हूँ हुजूर । इजाजत हो तो यहाँ ले आऊँ ?"

मुनीर ने कहा—"जरूर, जरूर ।"

सबने इन्सपेक्टर के जाने के बाद आफताव से कहा—"खुदा , से कुछ पता चल जाए ।"

मुनीर ने कहा--"इससे क्या पता चल सकता है ! इसको तो बांधकर यहीं डाल दिया गया। हां शायद यह बता सके कि नसीम की गिरफ़्तारी की जड़ क्या थी।"

सब-इन्सपेक्टर के साथ जान मुहम्मद बहुत खस्ता हालत में अन्दर आ गया। नवाब साहब ने उसको देखते ही कहा—"अरे जान मुहम्मदखां तुम ?"

मुनीर ने कहा—"क्यों खान तुम बता सकते हो कि नसीम साहब को किसने पकड़ा, और तुमको किसने बांधकर डाल दिया ? आख़िर हुआ क्याथा ?"

खान ने अपनी पश्तो-मिश्रित उर्दू ज़बान में बयान देना शुरू किया —

"जनाब दो रोज़ हो, नसीम साहब आफ़ताब साहब से मिलने गया था। वहां से लौट रहा था रास्ते में चोतसा आदमी उनको घेर लिया। अम उनको पहचानता नहीं। हमारा दूसरा साथी गुलबाज़ खां एक दम ऊपर चढ़ दौड़ा। अम बोला भाई अम तो तुम्हारा भाई है। हम जान मुहम्मद खां है। तुम क्या घबराया है कि अम को भी नहीं जानता। गुलबाज़खां ने अमारा एक बात नहीं सुना। अमको रस्सी में दो साथियों के साथ मिलकर बांधा, फिर नसीम साहब को एक मोटर पर डाला और ले गया न जाने किदर। अम को दो आदमियों ने नाले में डाल दिया।"

मुनीर ने कहा—"और वह गुलबाज़ खां कहां गया ?"

जान मुहम्मद ने कहा—"ओ काफिर का बच्चा उसी मोटर पर लेट गया था जिसमें नसीम को डाला गया था।"

मुनीर ने सब-इन्सपेक्टर से कहा—"इस बेचारे को कुछ खाने पीने को दिलवाइये।"

नवाब साहब ने कहा—"अरे भई छोटे खां से कहिये कि इस बेचारे को कुछ दे खाने को।"

सबइन्सपेक्टर और जान मुहम्मद खां के जाने के बाद मुनीर ने कहा— "इसका मतलब यह हुआ कि दूसरा अंगरक्षक गुलबाज़ खां असल में उन ही लोगों का आदमी था और अब भी वह ऐसी जगह उन लोगों की तरफ से तैनात होगा जहां नसीम है।"

नवाब फ़लक रफ़अत साहब ने कहा—"डिप्टी साहब ! बस आपसे केवल इतनी विनती है कि नसीम को इससे पहले कि कुछ नुकसान पहुँचे, किसी तरह से ढूंढ ही निकालिये।"

मुनीर ने कहा—"हुजूर वाला ! आप चूँकि बेहद परेशान हैं इसलिए कह रहे हैं वरना नसीम मेरा दोस्त है बहुत प्यारा दोस्त और मैं बाकी काम छोड़े हुए सिर्फ यह ही एक काम कर रहा हूँ।"

छोटे खाँ ने अन्दर आकर कहा—"हुजूर ! मैं अभी बाजार गया था, वहाँ ग़फूर मेरी इन्तजार में था। उसने आफ़ताब मियाँ से कहा है कि मैं न तो हवेली आ सकता हूँ न वहाँ जा सकता हूँ ! जिस तरह भी हो सके मुझ से इसी वक्त रोमी दरवाजे के पास आकर मिल लें।"

आफ़ताब ने खुश होकर कहा—"बस अब काम बन गया। मुझे सिर्फ़ ग़फूर की तलाश थी। मेरी राय में मुनीर तुम भी चलो।"

मुनीर ने कहा—"आप अगर राय न भी देते तो मैं चलता।"

फ़लक रफ़अत साहब ने कहा—"अरे भई तुम लोग कुछ नाश्ता तो कर लेते ?"

मुनीर ने कहा—"इन्शा अल्लाह करेंगे, लम्बा-चौड़ा नाश्ता; यह वक्त तकल्लुफ का नहीं है।"

जहानदार मिर्ज़ा साहब बोले—"मैं चल सकता हूँ आपके साथ ?"

मुनीर ने हाथ जोड़ कर कहा—"माफ कीजियेगा, मैं इसको उचित नहीं समझता, आप यहीं पर तशरीफ रखें, हम लोग खुद ही थोड़ी देर में हाजिर होते हैं।"

रोमी दरवाजे के पास ग़फूर को तलाश करने में ज़रा भी देर न लगी। उसने खुद ही एक झाड़ी से निकल कर हाथ के इशारे से बताया कि मोटर को आगे बढ़ा कर उस तरफ़ से मोटर लाइये। आफ़ताब और मुनीर ने चारों ओर देख कर इतमीनान करते हुए मोटर को झाड़ियों की ओट में छोड़ कर ग़फूर के करीब पहुँचना चाहा परन्तु वह खुद ही निकट आ पहुँचा था। उसने आते ही कहा—"आप लोग निश्चिन्त रहिये यहाँ कोई नहीं आ सकता।"

—

आफताब ने कहा—"यह डिप्टी साहब हैं, मेरे और नसीम के दोस्त। इनसे कोई परदा नहीं है।"

शकूर ने हँसकर कहा—"मुझको मालूम है सरकार! और मुझको क्या, वहां भी सबको मालूम है कि मुनीर आलम साहब उन लोगों की बदकिस्मती से यहां आ गये हैं। मगर सरकार उनको बिलकुल परवाह नहीं। इसलिए कि वह खुद तो इस बीच में आये ही नहीं हैं बड़े साहूकार बने बैठे हैं।"

आफताब ने कहा—"तुमको तो मालूम हो चुका होगा कि नसीम को कहाँ पहुंचाया गया है?"

शकूर ने कहा—"मैं अभी सब बताये देता हूं। बहुत कुछ मालूम हो चुका है मगर मैं अभी बहुत कुछ मालूम करना चाहता हूं। इसलिए मैंने आपको यहाँ बुला लिया है कि कहीं आप लोग अग्गान साहब और दुलारे मिर्जा को न पकड़वा दें। यदि ये लोग पकड़े गये तो समझ लीजिये कि पता चलना मुश्किल हो जाएगा। माफ कीजियेगा हुजूर डिप्टी साहब! इस वक्त पुलिस से ज्यादा मेरा काम जरूरी है।"

मुनीर ने कहा—"ठीक है, ठीक है। हम खुद तुम्हारे काम में दखल देना नहीं चाहते। मतलब तो इससे है कि किसी तरह नसीम का पता चल जाय।"

शकूर ने कहा—"नसीम मियाँ को पहुंचाया गया है नैनीताल के आस-पास किसी खोह में। जहाँ इन लोगों का एक गरगा तिवारी नाम का सारा कारखाना लिए है। उसी खोह में जाली नोट भी बनाए जाते हैं मगर बहुत कम। जाली दस्तावेजें भी अग्गान साहब बनाते हैं और खुदा जाने क्या-क्या होता होगा। नसीम मियाँ के जो दो अंगरक्षक रखे गये थे उनमें से गुलबाज उन्हीं लोगों का आदमी था। उसी के मुखबरी और सहायता से ये सब कुछ हुआ है। परन्तु आप विश्वास रखिये नसीम मियाँ बहुत आराम के साथ वहाँ हैं। हरेक आदमी को वहाँ विशेष चेतावनी दे दी गई है कि उन्हें किसी किस्म का कोई कष्ट न हो। बस उनको वहाँ से निकलने न दिया जाए। अब आज ही कल में बनारस वाले नवाब साहब भी वहाँ पहुँचा दिये जाएँगे।"

मुनीर ने कहा—"इसका मतलब यह हुआ कि हवेली पर सख्त पहरे की जरूरत है।"

शकूर ने कहा—"जी नहीं सरकार, बल्कि यह मौका देने की जरूरत है, कि बनारस वाले नवाब साहब को ये लोग ले जा सकें। हाँ आप नैनीताल के रास्ते में इस बात का प्रबन्ध करें कि जिस वक्त यह मोटर जाए बहुत होशियारी के साथ उसका पीछा किया जा सके। ताकि उस खोह का पता चल सके, जहाँ नसीम मियाँ को रखा गया है। और जहा उन बदमाशों की बदमाशियों का अड्डा है।"

मुनीर ने कहा—"वास्तव में सलाह बहुत उचित है, यद्यपि हम उन भगाने वालों को ही पकड़ लें तो उनके फरिश्तों को बताना पड़ेगा, सब कुछ।"

शकूर ने कहा—"सरकार वे मरते दम तक नहीं बताएँगे, चाहे जान चली जाए। जो युक्ति मैं बता रहा हूँ वह बहुत बढ़िया है। आज सुबह की बातचीत से इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि आज ही रात को बनारस वाले नवाब साहब को ले उड़ने की कोशिश होगी। इसकी खबर आप नवाब साहब को हरगिज़ न होने दें बल्कि उनको बिलकुल बेखबर रखें और स्वयं यह युक्ति करें जो बताई है।"

मुनीर ने कहा—"मैं इसी वक्त उसका प्रबन्ध करता हूँ। मेरे आदमी अगर इसी वक्त नहीं गये तो काम न बनेगा।"

शकूर ने कहा—"बगैर इस तरकीब के भी ख़ैर काम तो चल ही जाएगा मगर देर लगेगी। बात यह है कि खुदा जाने वे लोग कब परस्पर की बातों में उस जगह का पता निशान उगलें। वैसे इस विषय में खुद मुझको भी चिन्ता है और अपनी घरवाली को मैंने समझा दिया है कि वह भी जरा इसका खयाल रखे। हाँ एक बात तो मैं बताना ही भूल गया कि जिस मोटर पर नसीम मियाँ को भेजा गया है बरेली तक, उसको वही ड्राईवर ले गया था मजीद जो नवाब साहब के यहाँ नौकर था बरेली से एक पहाड़ी ड्राईवर ले गया। इसका मतलब यह हुआ कि मजीद से भी उस स्थान को छिपाना था।"

मुनीर ने कहा—"देखो भाई अब जरूरत इस की है कि तुम किसी न किसी

तरह रोजाना मिलते रहो, ताकि हमको सब स्थिति मालूम होती रहे । अब कल मुलाकात क्योंकर होगी और कहाँ होगी ?"

शकूर ने कहा—"बात यह है कि अगर आज रात को वे लोग बनारस वाले नवाब साहब को ले जाते हैं, तो कल आपका बहुत ही व्यस्तता का दिन होगा। कल कहीं शाम तक आप को पता चल सकेगा कि आपके आदमियों को किस हद तक सफलता प्राप्त हुई। यह हो सकता है कि कल रात को ग्यारह और बारह बजे के बीच आपको इसी जगह मिल जाऊँ।"

मुनीर ने कहा—"ठीक है हम लोग कल रात को ग्यारह-बारह बजे के बीच यहाँ आयेंगे। अच्छा वक्त कम है मुझको आदमी भेजना है इसलिए चलें।"

मुनीर ने वहाँ से लौटते ही कोतवाली से एक सब-इन्सपेक्टर को साथ लिया। कुछ ज़रूरी बातें उसको समझाईं और हवेली आ गया। दोनों नवाब साहबान आफ़ताब और मुनीर की बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहे थे। मुनीर को देखते ही जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"खुशखबरी कोई ?"

मुनीर ने कहा—"खुशखबरी यही है कि भाग-दौड़ के दरवाज़े खुलते जाते हैं। हाँ फिर भी इतमीनान हो गया है कि नसीम कुशलता से है और बहुत आराम से है। जहानदार मिर्ज़ा साहब से यह कहकर मुनीर सब-इन्सपेक्टर को लेकर बाहर आ गये और चुपके से इन्सपेक्टर के कान में कहा—"यही हैं वह बुजुर्ग, आपने अच्छी तरह पहचान लिया है ना ?"

सब-इन्सपेक्टर ने कहा—"जी हाँ अब नज़र धोखा नहीं खा सकती।"

मुनीर ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—"बस तो अब आप तशरीफ़ ले जाएँ। मुझको उम्मीद है कि सफल होकर वापस आयेंगे, मैं कल इन्तज़ार करूँगा।"

सब-इन्सपेक्टर सेल्यूट करके चला गया और मुनीर ने कमरे में वापस आकर कहा—"साहब यह शकूर बहुत फ़ायदे का आदमी है, बड़ा समझदार और अच्छी सूझ-बूझ का इन्सान। उसने यह बात बिलकुल सच कही कि इस पुलिस से ज़्यादा ज़रूरी उसकी सेवायें हैं।"

आफ़ताब ने कहा—"आप जब तक यहाँ तमाम बातें सुनाएँ मैं नाहीद

को बुलाकर कम-से-कम यह तसल्ली दिला दूँ कि नसीम खैरियत से है।"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"हाँ बेटे यह ज़रूर करो। साहबज़ादी साहिबा ने तो अपना वह हाल बना रखा है कि देखा नहीं जाता और नाहीद से कहो कि कोशिश करके उसको कुछ खिला दें।"

आफताब ने कहा—"मैं वहाँ भी खिलाता हूँ सबको और यहाँ भी मंगाता हूँ नाश्ता। इस बदशगुनी का तो कोई खयाल ही नहीं है कि तीन-तीन फाके गुज़र गये सब पर।"

आफ़ताब यह कह कर उधर चले और मुनीर ने शकूर से मुलाक़ात की विस्तार से सब बातें सुनाना शुरू कर दी।

३

रात के समय सुलेमान कदर अपने पलंग पर लेटे हुए थे। अग़ान साहब और दुलारे मिर्ज़ा पलंग के समीप कुर्सियों पर बैठे हुए थे। शकूर चुप्पी करने में इस प्रकार तल्लीन था जैसे खुद अपनी किसी धुन में बैठा हुआ है। अग़ान साहब और दुलारे मिर्ज़ा किसी गहरी चिन्ता में थे कि सुलेमान कदर ने कहा—

"और फ़र्ज़ कर लीजिये कि पुलिस ने छाप मारा मेरे यहाँ ?"

अग़ान साहब ने कहा—"तो क्या होगा ? आप के यहाँ पुलिस को क्या मिल सकता है। अव्वल तो एक इज़्ज़तदार व्यक्ति के यहाँ छापा मारने के लिये भी पुलिस को हिम्मत चाहिये। और मान लीजिये छापा इस ख़याल से मारा गया चूँकि आपके और नवाब फ़लक रफ़अत साहब को बीच मुकदमा चल रहा है और नसीम उस मुकदमे के प्राण हैं, उनको विचित्र तरीके से ग़ायब किया ही गया है, तो एक शुबा आप पर भी हो सकता है। परन्तु इस गुम करने के सम्बन्ध में हम लोग आपको सामने लाए ही नहीं बल्कि हम लोग भी दूर-ही-दूर रहें। अतः यह तो किसी प्रकार भी सिद्ध ही नहीं हो सकता कि अग़वा में हमारा हाथ है।"

सुलेमान कदर ने कहा—"हाथ हो या न हो परन्तु बदनामी कितनी बड़ी है ? दूसरे इन पुलिस वालों के हथकंडों से अल्लाह बचाए। अग़वा सिद्ध न हो तो खुदा जाने और क्या सिद्ध कर देंगे। फिर तुम यह भी कहते हो कि नये डिप्टी साहब नसीम के मित्रों में से हैं।"

दुलारे मिर्ज़ा ने कहा—"जी हाँ ! साथ के पढ़े हुए हैं और इस विषय में

बड़ी दिलचस्पी से रहे हैं।"

मगन साहब ने कहा—"लौंडे हैं अभी। ऐसे-ऐसे खुदा जाने कितने डिप्टी हमने बना डाले हैं। बड़ी दिलचस्पी तो ले रहे हैं परन्तु इनके फ़रिश्तों को भी पता नहीं चल सकता कि नसीम को जमीन खा गई या आसमान निगल गया। और आज तो जहानदार मिर्ज़ा के गायब होने के बाद उनको और भी परेशान होना पड़ेगा कि एक नहीं दो-दो।"

सुलेमान कदर ने कहा—"इन हज़रत के लिए सब सामान पूरे हैं ना ?"

मगन साहब ने कहा—"बस एक घन्टे के अन्दर-अन्दर आप तक यह खबर आ जाएगी कि जहानदार मिर्ज़ा छूमन्तर हो गये। मैंने आखिरी वक्त में यह फैसला किया कि जहानदार मिर्ज़ा को इस समय सीधे नैनीताल भेजना उचित नहीं है। हम को फूंक-फूंक कर कदम रखना चाहिये। यद्यपि पुलिस को या किसी को कानों-कान यह खबर नहीं हो सकती कि नैनीताल में हमारा प्रधान कार्यालय कहाँ है फिर भी मैंने यह प्रबन्ध किया है कि अभी जहानदार मिर्ज़ा को मसूरी पहुँचा दिया जाए साहिबा के यहाँ, इसके बाद परसों वह हज़रत भेज दिये जाएँगे नैनीताल।"

सुलेमान कदर ने गफूर की ओर ध्यान देते हुए कहा—"अब थक गये होंगे तुम ?"

गफूर ने कहा—"निस्सन्देह हुमस तो बहुत है। मैं यही देख रहा हूँ कि एक पत्ता भी नहीं हिल रहा है।"

हमारे मिर्ज़ा हँसकर बोले—"सुब्हान अल्लाह ! पूछी जमीन की, तो कही आसमान की।"

गफूर ने कहा—"पंखा ले आऊँ वह बड़ा खजूर वाला ? थोड़ी देर तो हवा खायें आप लोग ?"

सुलेमान कदर ने इशारे से कहा—"हाँ ले आओ।"

बातें चूँकि बहुत महत्व की हो रही थीं अतः गफूर ने पंखा लाने में बिजली की-सी तेज़ी से काम लिया, कि कोई काम की बात न [illegible]

से। इस वक्त अग़ान साहब कह रहे थे—"ज़रा पुलिस की यह दौड़-धूप खत्म हो ले, और आपके यहाँ जो पुलिस आने वाली है आ चुके, तो मैं आपको भी नैनीताल की सैर करा लाऊँ। ज़रा नसीम साहब से चलकर मिल आइये।"

दुलारे मिर्ज़ा ने तुरन्त कहा—"जी नहीं, कहीं ऐसी मूर्खता भी न कीजियेगा। हम लोगों में से किसी को वहाँ जाने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। हमारे लिए जो मैदान यहाँ साफ़ हो रहा है उससे अब फ़ायदा उठाना है।"

उसी समय दरवाज़े से एक व्यक्ति प्रविष्ट हुआ। अग़ान साहब ने ऊँची आवाज़ में कहा—"कौन इलाही बख्श ?"

इलाही बख्श ने उत्तर दिया—"जी हाँ मैं हूँ।"

अग़ान साहब ने कहा—"आ जाओ, मैं इन्तज़ार ही कर रहा था।"

इलाही बख्श ने आते ही कहा—"हो गया साहब काम।"

अग़ान साहब ने कहा—"शाबाश ! पार्सल कर दिया जनाब नवाब साहब को ? कोई खास बात ?"

इलाही बख्श ने कहा—हम लोगों को उनके बिस्तर तक जाने की ज़रूरत ही न पड़ी। वह खुद गुसलखाने जा रहे थे कि रास्ते ही में हमारे आदमियों ने उनको जा लिया।"

अग़ान साहब ने कहा—"बाकायदा बेहोश कर दिया था ?

इलाही बख्श—"तुरन्त ही बेहोशी का असर हो गया उन पर।"

अग़ान साहब ने कहा—"मेरे खयाल में दो-तीन बजे तक सलून पहुंच जाएंगे।"

इलाही बख्श ने कहा—"और क्या ? इससे ज्यादा वक्त नहीं लग सकता।"

अग़ान साहब ने जेब से एक नोटों की गड्डी निकाल कर इलाही बख्श को देते हुए कहा—"देना उस वक़्त चाहिए था जब उनकी रसीद आ जाती परन्तु यह भी तो सिद्ध करना है कि यहाँ कितना नकद मामला है ?"

इलाही बख्श ने नोट लेकर गिनते हुए कहा—"हमारी तो यही तमन्ना

थी कि आप हम से कोई बड़ा काम करवाएं यह भी कोई काम मे काम है, आपके कदमों की कसम अभी एक हफ्ता हुआ कि सेठ बद्रीप्रसाद के यहां लाला द्वारकानाथ की बहू को पहुँचाया है, तमाम जेवरों सहित। और क्या मजाल जो किसी को शुबह तक हुआ हो। कोई और होता तो कम-से-कम जेवर तो उतार ही लेता। परन्तु हम हराम समझते है ऐसी बेईमानी को। बस वही चटनी रोटी काफी है जो हक हलाल की है।"

अग्गन साहब ने कहा—"अरे भई काम तो बराबर लेना ही है लो यह पचास रुपये खास इनाम के रूप मे लेते जाओ।"

इलाही बख्श ने ये रुपये भी लिए और दुआएं देते हुए चला गया। उसके जाने के बाद सुलेमान कदर ने हंसकर कहा—"बुरी तरह से हंसी आ रही थी मुझको, इस हक-हलाल की रोटी पर। जेवर उतार लेना तो मानो बेईमानी है और यह बहुत बडी ईमानदारी है कि किसी की बहू-बेटी को उठाकर किसी के यहां पहुँचवा दिया जाय।"

अग्गन साहब ने कहा—"सात मर्तबा जेल जा चुका है मगर क्या मजाल जो किसी को कानोंकान खबर होने दे कि उसने किसके लिए अपराध किया है। और उस अपराध से उसका क्या उद्देश्य था। अपने फन का उस्ताद है। अगर कहिये तो कल ही बडे-बडे आदमियों की बहन-बेटी, पत्नी, लडकी सब यहां मौजूद हों परन्तु अपराध की स्वीकृति, यदि कोई बोटियां भी काट डाले तो उससे न होगी।"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"अच्छा जनाब ये दोनों किले तो आपने जीत लिए और आपके रास्ते के दो बड़े कांटे हट गये। अब कहिये क्या इरादा है और क्या प्रोग्राम है?"

अग्गन साहब ने कहा—"फिलहाल तो इन दोनो को गायब कराने के बारे में पुलिस जो हाथ-पांव मारेगी उसका इन्तजाम करना है। मेरा खयाल यह है कि पुलिस को यहां जरूर आना चाहिये बल्कि पुलिस यहां नही आती तो ज्यादा बुरा है।"

सुलेमान कदर ने कहा—"कई बार उस्ताद तुम्हारी उस्तादी के गुर कम-

से-कम मेरे तो पल्ले पड़े नहीं। मसलन यह क्या बात हुई कि यदि पुलिस यहाँ न आए तो ज्यादा बुरा है मानो आप खुद चाहते हैं कि पुलिस को यहाँ आना चाहिए।"

अग़न साहब ने वास्तव में उस्तादों जैसी शान से कहा—"जी हाँ ? मैं चाहता हूँ बात यह है कि पुलिस के लिए सीधा रास्ता यही है कि वह इन दोनों के ग़ायब होने के सम्बन्ध में अपनी खोज का आरम्भ इसी घर से करे। यह तो निश्चित है कि इन दोनों के अग़वा के सम्बन्ध में सबको इस बात का यक़ीन होगा कि इनको ग़ायब कराने में हमारा हाथ है। इसलिए कि और से न कोई अदावत न कोई दुश्मनी, अब यदि पुलिस यहाँ नहीं आती तो इस का मतलब सिर्फ़ यह हो सकता है कि पुलिस को मानों मालूम है कि इन दोनों को यहाँ तलाश नहीं करना है। इसका अर्थ यह हुआ कि पुलिस एक हद तक सही रास्ते पर है।"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"कायल होना पड़ता है साहब इस व्यक्ति की ी का ; वाकई पुलिस को अगर भटकना है तो उसको पहले इस घर रुख करना चाहिए।"

सुलेमान कदर ने कहा—"बात तो ख़ैर बिलकुल ठीक है परन्तु बस यही एक ख़याल था कि पुलिस के यहाँ आने में ज़रा बदनामी है।"

अग़न साहब ने कहा—"सुब्हान अल्लाह ! इसमें बदनामी की क्या बात है ? अगर पुलिस यहाँ आकर कोई सुराग़ लगा ले और खुदा-न-खास्ता शैतान के कान बहरे।"

सुलेमान कदर को हँसी आ गई और अग़न साहब चकित रह गये कि यह हँसी का कौन-सा मौका था। सुलेमान कद्र ने कहा—"शैतान के कान बहरे कहने के बारे में मेरी नज़र शकूर की ओर खुद-ब-खुद उठ गई। आप सम्भवतः अख़्तर शुमारी में संलग्न हैं ?"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"अरे भाई शकूर चाय पिलवा सकते हो इस वक़्त, वक़्त तो बहुत आ गया है मगर तुम जो जादूगर हो सेवा के सम्बन्ध में। इस वक़्त अगर चाय पिलवाओ तो समझें कि तुम क्या हो।"

अग्गन साहब ने कहा—"वाकई चाय की ज़रूरत तो मुझे भी महसूस हो रही है।"

शकूर को निरन्तर पंखा झलते हुए देखकर सुलेमान कदर ने कहा—"अरे भाई चाय मांग रहे हैं ये लोग ?" .

शकूर ने कहा—"जी हां यही कोई बारह का अमल होगा।"

सुलेमान कदर ने हँसकर उसको समीप आने का संकेत करते हुए कान में कहा—"तुम्हारे अग्गन साहब और दुलारे मिर्जा को चाय की तलब सता रही है, कुछ कर सकते हो इन्तज़ाम ?"

शकूर ने कहा—"चाय अभी लीजिए, बादाम के दूध की चाय।"

अग्गन साहब ने कहा--"क्या दूध नहीं है ?"

शकूर ने उत्तर दिया—"क्या मजाल जो जरा भी खराब हो जाए। मैंने कह दिया है वरना पहचान भी मुश्किल थी। बल्कि ठहरिये, ठीक है याद आ गया, डिब्बे का दूध रखा हुआ है।"

अग्गन साहब ने जोर से कहा—"जय हो तुम्हारी।"

शकूर ने कहा—"जो कुछ कहिये ! बिस्कुट होंगे, क्रीम क्रेकर और हलवा है शायद ! केक भी है थोड़ा सा।"

अग्गन साहब ने सकेत से मना कर दिया कि किसी और चीज की ज़रूरत नहीं।

शकूर ने जाते-जाते लौट कर कहा—"चाय बना दूं या काफी ?"

अग्गन साहब ने कहा—"लाहौल विला कूवत ! मालूम नहीं ये हुक्के का पानी कौन लोग पीते हैं ? मुझको तो उस दिन नवाब साहब ने काफी हाऊस ले जाकर परेशान कर दिया।" और फिर सकेत द्वारा कहा, "काफी नहीं चाय।"

शकूर ने कहा—"काफ़ी नहीं तो फिर चाय लाता हूँ अभी दस मिनट में।"

सुलेमान क़दर ने कहा—"ईमान की बात यह है कि मुझको जितना आराम शकूर से मिलता है किसी और नौकर से नहीं मिलता। इस आदमी को कुछ काम करने का शौक़ है। दिल से चाहता है कि आराम पहुंचाए।"

अग़न साहब ने कहा—"आप तो खैर मालिक हैं इसके, हम लोगों की खिदमत करने की भावना भी इस प्रकार विना किसी रुकावट के साथ पैदा होती है और यही हाल इसकी बीवी का है।"

सुलेमान कदर ने कहा—"बीवी ने दिलवर के घर का रंग ही वदल दिया है। हरेक कमरे में एक सलीके का साफ़-सुथरापन, क्या मजाल कि कोई चीज इधर-की-इधर हो जाए। फिर सबसे बड़ी वात यह है कि काम के लिए कहने की जरूरत नहीं पड़ती। बस उसके लिए इतना ही काफ़ी है कि चाय के वक्त कुछ लोग पहुँच गये हैं तो चाय हर प्रकार से मुकम्मिल आयेगी। खाने का वक्त है तो क्या मजाल कि दिलवर को या किसी को कुछ समझाना पड़े। मैंने तो दिलवर से साफ़ कह दिया कि अब अगर तुम इस की वेकद्री करोगी तो यह वहुत बड़ी भूल होगी।"

अग़न साहब ने कहा—"नहीं साहब वह वेहद कद्र करती है और पठानी खुश है खुद भी। जरा-सा इन झगड़ों से छुटकारा मिले तो इन मियाँ-बीवी के साथ भी जैसा दिल चाहता है वैसा सलूक किया जाय! लीजिये वह आ रहे हैं कुछ तैयार ही है।"

शकूर ने करीब आकर कहा—"पाँच मिनट की मोहलत और दे दीजिये वस तैयार ही है।"

और वाकई दस मिनट के वाद चाय मौजूद थी। जिससे निवत्त होकर वे दोनों अपनी-अपनी तरफ चल दिये।

४

हर प्रकार से ग़ज़ाला को यह विश्वास दिलाया जा चुका था कि नसीम बहुत कुशलता में हैं और उनको वापस लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। परन्तु उसको विश्वास केवल उसी वक्त हो सकता था जब नसीम को वह स्वयं अपनी आँखों से कुशलतापूर्वक देख लेती। नाहीद ने जिस दिन से नसीम ग़ायब हुए थे अपने घर का रास्ता ही भुला दिया था और वह दिन-रात इसी चिन्ता में रहती थी कि किसी तरह ग़ज़ाला का दिल बहलाये। परन्तु मुसीबत जब आती है तो अकेली तो आती नहीं। अभी नसीम के लिए खोज चल रही थी कि सुबह एक घटना और शुरू हो गई कि नवाब जहानदार मिर्ज़ा साहब भी ग़ायब हैं। अन्दर से लेकर बाहर तक एक कोहराम मच गया। नसीम के गुम होने ने कसर ही कौन-सी छोड़ी थी जो अब नवाब साहब या बेगम साहिबा या ग़ज़ाला पर इस नये प्रभाव का अन्दाज़ा किया जाता। नवाब साहब का यह हाल कि जैसे कुछ खोये-खोये से नज़र आते थे। और बेगम साहिबा की यह दशा कि वह नवाब साहब को अपने पास से हटने ही न देती थीं। उनका पूर्णविश्वास था कि अब स्वयं उनकी बारी है। ग़ज़ाला से भी आखिर सहन न हो सका और उसने दौड़ कर बाप से लिपटते हुए कहा—

"अब्बा जान, आप तमाम रियासत से त्यागपत्र लिख कर उस कमबख़्त को भेज दीजिए।" और यह कह कर रोना प्रारम्भ कर दिया।"

नवाब साहब ने ग़ज़ाला का सिर सहलाते हुए कहा—"बेटी इस तरह के मौक़ों पर हौसला और हिम्मत से काम लेना चाहिये है [illegible] ज़रा

आफ़ताव मियाँ को बुलाओ किसी से कह कर।"

इस दृश्य को सहन न करके नाहीद वेपर्दा नवाव साहव के सामने खड़ी हुई थी। उसने कहा—'भाई जान तो शायद आ चुके हैं वाहर मैंने मोटर साइकिल की आवाज़ सुनी थी।"

ग़ज़ाला ने कहा—"अव्वा जान आफताव भाई को अन्दर ही वुला लीजिए वह मेरे भाई हैं मैं उनसे पर्दा नहीं कर सकती और आपको मैं वाहर न जाने दूँगी।"

वेगम साहिवा ने कहा—"हाँ, हाँ, वुला लो, पर्दा ही क्या अपना ही वच्चा है। इस वक्त अल्लाह उसको खुश रखे वही दौड़-धूप करने वाला है।"

नवाव साहव ने खुशक़दम से कहा—"सुना तुमने, आफ़ताव मियाँ को अन्दर वुला लो।"

खुशक़दम के साथ आफ़ताव ने घर में आते ही अत्यन्त आदर के साथ नवाव और वेगम साहिवा को सलाम करके कहा—"आप लोग आखिर इस क़दर परेशान क्यों हैं? मुझको और मुनीर को तो कल ही…"

वह वात कहते-कहते रुक गया और इधर-उधर देखने लगा। नवाव साहव ने कहा—"नहीं-नहीं यहाँ कोई ऐसा नहीं है तुम आज़ादी से वात कर सकते हो।"

आफ़ताव ने कहा—"वास्तव में मुझको और मुनीर को तो कल ही यह सूचना मिल गई थी कि आज वड़े नवाव साहव को ग़ायव किया जायेगा। शकूर की यह वाकई राय थी कि कोई रक्षा की युक्ति न सोची जाए। दुश्मनों को इसका मौका दिया जाए कि वह वड़े नवाव साहव को लेकर चले जाएँ।"

नवाव साहव ने विस्मयपूर्वक कहा—"यह क्या? यानी यह क्यों?"

आफ़ताव ने कहा—"वजाय यहाँ पहरा चौकी करने के यह इन्तज़ाम किया गया है कि नैनीताल के रास्ते ही से उस मोटर का पीछा किया जाए कि यह मोटर कहाँ जाती है। इस तरह उन वदमाशों के अड्डे का पता चल जाएगा। शकूर से मालूम हुआ है कि नैनीताल के आस-पास एक खोह में उन लोगों का

अड्डा है जहाँ जाली नोट बनाने का सामान भी है। जाली दस्तावेज भी बनाई जाती हैं और खुदा जाने क्या-क्या होता होगा। उसी के एक भाग मे नसीम को रखा गया है। उस स्थान का पता सिर्फ इसी सूरत से चल सकता है कि अब नवाब जहानदार मिर्जा साहब को यह लोग साफ प्रकट है कि उस स्थान पर ले गये होंगे मुनीर ने सुबह ही से पुलिस का इन्तजाम रास्ते मे स्थान स्थान पर कर दिया है और चेतावनी दे दी है कि बहुत खामोशी के साथ उस वक्त केवल यह पता चला लें कि वह खोह है कहाँ पर, और उसका रास्ता किधर है। मानो नवाब जहानदार मिर्जा साहब को तो जानते हुए हम लोगों ने ले जाने दिया है।"

गजाला ने अब सन्तोष की सांस लेकर कहा—"बहुत उम्दा तरकीब है भैया जान यह।"

आफताब ने कहा—"यह तो बहुत आसानी से हो सकता है कि पुलिस इन बदमाशों को गिरफ्तार कर ले, मगर इस प्रकार अन्देशा है कि नसीम को और अब नवाब जहानदार मिर्जा साहब को भी नुकसान न पहुंच जाए। दूसरा उद्देश्य यह है कि एक दम से तमाम सुराग लगाने के बाद पुलिस ऐसा छापा मारे कि बदमाशों की तमाम बदमाशी रोशनी मे आ जाये और उनके लिए कोई छिपने को जगह बाकी न रहे।"

नवाब फ़लक रफअत साहब ने कहा—"बेटे! मेरा दिमाग़ तो काम ही नही करता, न जिन्दगी-भर इस प्रकार की परिस्थितियां सामने आईं न मुझ को ऐसे बदमाशों से काम पडा। यह तो मेरे ही पाले हुए एक सांप ने तमाम जहर फैला रखा है। तुमको नही मालूम कि नसीम मुझको कितना प्यारा है। मैं सच कहता हूँ कि अगर खुद मेरा अपना लड़का भी होता तो मुझको उससे भी यह आशा न हो सकती थी जो उसने पूरी कर दी। अब वह इस तरह दुश्मनों के कब्जे मे है तो रह-रह कर जैसे मेरा कलेजा मसले देता है खुदा जाने किस हालत मे होगा।"

आफताब ने कहा—"आप इस तरफ से पूर्ण विश्वास रखें शकूर से मालूम हो चुका है कि नसीम को वहाँ बहुत आराम से रखा गया है। बस पाबन्दी

यह है कि वह वहाँ से निकलने न पाए। इस पाबन्दी को हम तोड़...
में हैं और नवाब जहानदार मिर्ज़ा की तरफ़ से भी निश्चित रहिये कि
म के असर व रसूख और दौड़-धूप से आपके मुक़दमे को मदद न मिल
और नवाब जहानदार मिर्ज़ा साहब की तरफ़ से उनको अन्देशा है कि
हीं उनके पास जायदाद से सम्बन्धिक कोई काग़ज़ न हों, इसलिए उनको
स्ते हो से हटा दिया गया है।"

फ़लक रफ़अत साहब बोले—"अरे भई वह कमबख़्त मुझसे वकील ग़ज़ाला
वाकई त्यागपत्र लिखा लें।"

आफ़ताब ने कहा—"सुब्हान अल्लाह ! क्यों त्यागपत्र लिखा ले वकील
मुनीर। उसने नसीम और नवाब जहानदार मिर्ज़ा साहब को ग़ायब करके सबसे
बड़ी मूर्खता की है। यों तो शायद उसका जाल कामयाब भी हो जाता, मगर
अब बुरी तरह फँस गया है। आप देखिए तो सही ज़रा तमाशा। मुनीर तो उस
अग़न साहब और दुलारे मिर्ज़ा को ज़िन्दा दफ़न करा देगा।"

ग़ज़ाला बोली—"और सुलेमान कदर को किस सिलसिले में छोड़ा
... ?"

आफ़ताब ने कहा—"ख़ैर छूट तो वह भी नहीं सकते मगर मेरा ख़याल
तो यह है कि इस कम्बख़्त का क़सूर तो कम है और हिमाकत ज़्यादा है।"

नवाब साहब ने खिन्नता के साथ कहा—"बस, आफ़ताब मियाँ बस उस
कम्बख़्त का ज़िक्र मेरे सामने न करो। खुदा की क़सम अगर उसको ज़मीन में
आधा गाड़ कर तीरों से छलनी किया जाए तो भी शायद अब मुझको अफ़सोस
न होगा।"

ग़ज़ाला ने कहा—"मुझको तो खुशी होगी अब्बा जान।"

बेगम साहिबा बोलीं—"सचमुच भैया उसने तो हद ही कर दी। जो वा...
क़िस्से-कहानियों में सुना करते थे, उपन्यासों में पढ़ा करते थे, उन पर भी उस...
पानी फेर दिया।"

नवाब साहब ने नाहीद की तरफ़ देखते हुए कहा—"बैठ जाओ बे...
आओ इधर मेरे पास आकर बैठो। तुम सम्भवतः यह समझ रही होंगी

तुमने मेरे सामने आकर बड़ी आजाद खयाली का सबूत दिया है या मैंने ग़ज़ाला और उनकी माँ को आफ़ताब मियाँ के सामने करके बड़ा तीर मारा है। यह गलत है तुम को नहीं मालूम कि तुम्हारे अब्बा आबाद अहमद साहब मेरे कैसे दोस्त हैं। बचपन के साथी। और मुझको तो बड़ी खुशी होती है यह देख-देखकर कि आफताब मियाँ बिलकुल अपने बाप के नक्शे-कदम पर चल कर वही कर रहे हैं—दूसरों के काम आना, हरेक की दुआ लेना, दिलों में घर बनाना और गैरों को भी अपना लेना, ये हैं भाबाई के गुण।"

आफताब ने कहा—"फिर तो मुझको इस घर पर सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं।"

नवाब साहब ने कहा—"बेशक! बेशक! यकीनन प्राप्त हैं।"

आफताब ने कहा—"नाहीद तुम यह करो कि फौरन नाश्ता मंगाओ, ताकि मैं अपने सामने चचा जान और चाची जान···"

बेगम साहिबा ने बात काटकर कहा—"खैर मुझको तो चची जान कहो नहीं बेटा, मैं तो कुदसिया के रिश्ते से तुम्हारी खाला ही रहूँगी।"

आफताब ने कहा—"खैर ये रिश्ते बाद में तै होंगे। मुझको मालूम था कि आप लोगों ने इस वक्त नाश्ता गोल किया होगा इसीलिए मैं खुद भी बगैर नाश्ते के आ गया हूँ। मैं सबके साथ नाश्ता करूंगा।"

खुशकदम ने कहा—"मियाँ नाश्ता तो कब का तैयार रखा है खाने का होश ही किसे था।"

आफताब ने कहा—"खैर अब तुम लाओ नाश्ता।"

फौरन ही खुशकदम ने दस्तरखान बिछा दिया और नाहीद तथा गज़ाला ने मिल कर खाना चुन दिया। आफताब ने सबके पीछे पड़-पड़ कर खूब अच्छी तरह सबको नाश्ता करा दिया। नाहीद ने ग़ज़ाला के साथ जबर्दस्तियाँ करके सफलता प्राप्त की और आफताब ने नवाब साहब और बेगम साहिबा का जिम्मा ले रखा था। नाश्ते के समाप्त होते ही खुशकदम ने आकर सूचना दी—"डिप्टी साहब आये हैं।"

आफताब ने उठते हुए कहा—"मुनीर आ गये, देखो नाहीद शायद मुनीर

केवल यह है कि वह वहाँ से निकलने न पाए। इस पाबन्दी को हम तोड़ने की फ़िक्र में हैं और नवाब जहानदार मिर्ज़ा की तरफ़ से भी निश्चित रहिये कि नसीम के असर व रसूख और दौड़-धूप से आपके मुक़दमे को मदद न मिल सके और नवाब जहानदार मिर्ज़ा साहब की तरफ़ से उनको अन्देशा है कि कहीं उनके पास जायदाद से सम्बन्धिक कोई काग़ज़ न हों, इसलिए उनको रास्ते ही से हटा दिया गया है।"

फ़लक रफ़अत साहब बोले—"अरे भई वह कमबख़्त मुझसे वकील ग़ज़ाला के वाकई त्यागपत्र लिखा लें।"

आफ़ताब ने कहा—"सुब्हान अल्लाह ! क्यों त्यागपत्र लिखा ले वकील मुनीर। उसने नसीम और नवाब जहानदार मिर्ज़ा साहब को ग़ायब करके सबसे बड़ी मूर्खता की है। यों तो शायद उसका जाल कामयाब भी हो जाता, मगर अब बुरी तरह फँस गया है। आप देखिए तो सही ज़रा तमाशा। मुनीर तो उस अभ्गन साहब और दुलारे मिर्ज़ा को ज़िन्दा दफ़न करा देगा।"

ग़ज़ाला बोली—"और सुलेमान कदर को किस सिलसिले में छोड़ा ?"

आफ़ताब ने कहा—"ख़ैर छूट तो वह भी नहीं सकते मगर मेरा ख़याल तो यह है कि इस कम्बख़्त का क़सूर तो कम है और हिमाकत ज्यादा है।"

नवाब साहब ने खिन्नता के साथ कहा—"बस, आफ़ताब मियाँ बस उस कम्बख़्त का ज़िक्र मेरे सामने न करो। खुदा की क़सम अगर उसको ज़मीन में आधा गाड़ कर तीरों से छलनी किया जाए तो भी शायद अब मुझको अफ़सोस न होगा।"

ग़ज़ाला ने कहा—"मुझको तो ख़ुशी होगी अब्बा जान।"

बेगम साहिबा बोलीं—"सचमुच भैया उसने तो हद ही कर दी। जो बातें किस्से-कहानियों में सुना करते थे, उपन्यासों में पढ़ा करते थे, उन पर भी उसने पानी फेर दिया।"

नवाब साहब ने नाहीद की तरफ़ देखते हुए कहा—"बैठ जाओ बेटी, आओ इधर मेरे पास आकर बैठो। तुम सम्भवतः यह समझ रही होंगी कि

तुमने मेरे सामने आकर बड़ी आज़ाद खयाली का सबूत दिया है या मैंने ग़ज़ाला और उनकी मां को आफताब मियाँ के सामने करके बड़ा तीर मारा है। यह गलत है तुम को नही मालूम कि तुम्हारे अब्बा आबाद अहमद साहब मेरे कैसे दोस्त हैं। बचपन के साथी। और मुझको तो बड़ी खुशी होती है यह देख-देखकर कि आफ़ताब मियाँ बिलकुल अपने बाप के नक्शे-कदम पर चल कर वही कर रहे हैं—दूसरों के काम आना, हरेक की दुआ लेना, दिलो में घर बनाना और गैरो को भी अपना लेना, ये हैं आबाई के गुण।"

आफताब ने कहा—"फिर तो मुझको इस घर पर सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हैं।"

नवाब साहब ने कहा—"बेशक! बेशक! यकीनन प्राप्त हैं।"

आफताब ने कहा—"नाहीद तुम यह करो कि फौरन नाश्ता मंगाओ, ताकि मैं अपने सामने चचा जान और चाची जान..."

बेगम साहिबा ने बात काटकर कहा—"खैर मुझको तो चची जान कहो नही बेटा, मैं तो कुदसिया के रिश्ते से तुम्हारी खाला ही रहूँगी।"

आफताब ने कहा—"खैर ये रिश्ते बाद में तै होगे। मुझको मालूम था कि आप लोगो ने इस वक्त नाश्ता गोल किया होगा इसीलिए मैं खुद भी बगैर नाश्ते के आ गया हूँ। मैं सबके साथ नाश्ता करूंगा।"

खुशकदम ने कहा—"मियाँ नाश्ता तो कब का तैयार रखा है खाने का होश ही किसे था।"

आफताब ने कहा—"खैर अब तुम लाओ नाश्ता।"

फौरन ही खुशकदम ने दस्तरखान बिछा दिया और नाहीद तथा गज़ाला ने मिल कर खाना चुन दिया। आफ़ताब ने सबके पीछे पड़-पड कर खूब अच्छी तरह सबको नाश्ता करा दिया। नाहीद ने ग़ज़ाला के साथ जबर्दस्तियाँ करके सफलता प्राप्त की और आफताब ने नवाब साहब और बेगम साहिबा का जिम्मा ले रखा था। नाश्ते के समाप्त होते ही खुशकदम ने आकर सूचना दी—"डिप्टी साहब आये हैं।"

आफताब ने उठते हुए कहा—"मुनीर आ गये, देखो नाहीद शायद मुनीर

ने भी नाश्ता न किया हो, कुछ मौजूद है ना ?"

बेगम साहिबा ने कहा—"हाँ हाँ है क्यों नहीं। पूछने की भी क्या ज़रूरत है, भेज ही दो बेटी तुम।"

नवाब और आफ़ताब दोनों बाहर आ गये। आफ़ताब ने कहा—"मैं कोठी पर होता हुआ यहाँ आया हूँ। मालूम हुआ कि जनाब आराम फरमा रहे हैं।"

मुनीर ने कहा—"दो बजे रात को सोया था। बात यह हुई कि मैंने तै किया कि सीतापुर तक राउन्ड मैं खुद कर आऊँ। ग्यारह बजे के करीब मैं चल दिया और दो बजे तक बराबर इन्तज़ार किया मगर इस वक्त तक कोई पता न चला किसी मोटर का। या तो उसके बाद से गये होंगे ये लोग या इससे पहले ही निकल गये।"

नवाब साहब ने कहा—"रात को दस बजे भाई जान आराम करने गये थे। हम लोगों को तो सवेरे सूचना मिली इसलिए कि वह नमाज़ के वक्त जाग कर अपने नौकर को आवाज़ दिया करते थे। आज मैंने कोई आवाज़ न सुनी। प्रातः का प्रकाश फैलते ही उनका नौकर मेरे पास आया कि नवाब साहब कहाँ गये ? मैंने कोई महत्व न दिया। समझा कि गुसलखाने में होंगे या सम्भव है टहल रहे हों कहीं। मगर नौकर मुझको बेचैन नज़र आया। उसने कहा कि नवाब साहब का एक जूता मुझे चौंक में मिला है और दूसरा बागीचे के समीप क्यारी में। अब तो मैं भी बहुत परेशान हुआ। खुद उठकर मैंने दोनों जूतों को देखा और घास पर मुझको उनकी तस्बीह भी पड़ी हुई मिली।"

मुनीर ने उठकर कहा—"मैं ज़रा वह जगह देखना चाहता हूँ ?"

नवाब साहब ने उनको साथ ले जाकर सहन में बताया कि यहाँ एक जूता पड़ा हुआ था और फिर बाग़ीचे में ले जाकर एक क्यारी के पास बताया कि यहाँ दूसरा जूता पड़ा हुआ था। और कुछ आगे बढ़कर कहा—"यहाँ अल्लाह का नाम जपने की तस्बीह पड़ी हुई थी। मुनीर ने बागीचे में कुछ आगे बढ़कर घास को ग़ौर से देखा और जहाँ-जहाँ दबी हुई घास के निशान थे वह बराबर

आगे चलता गया। यहाँ तक कि कटहरे के पास पहुँच कर उसने कटहरे को हाथ ही लगाया था कि वह गिर पडा मालूम हुआ कि उसके पेच खुले हुए थे। उसने कहा—"इस रास्ते से वह लोग ले गये हैं। चाहे वह किसी रास्ते से ले गये हों, मगर यह मालूम नही किस वक्त ले गये ?"

नवाब साहब ने कहा—"यह तो मैं कह नही सकता।"

गफ़ूर ने आकर कहा—"नाश्ता लगा दिया है।"

आफ़ताब ने मुनीर से कहा—"आओ भई नाश्ता तो कर लो ?"

मुनीर ने कहा—"मैं थोड़ा-बहुत नाश्ता तो कर ही चुका हूँ मगर फिर भी शामिल हो जाऊँगा।"

आफ़ताब ने कहा—"शामिल नही ! हम लोग अभी नाश्ता करके उठे हैं।"

मुनीर ने कहा—"यार यह पंजाब और यू० पी० मे उठा-बैठी खूब है। पंजाब में—खा चुकने को कहते हैं, खा बैठा हूँ और यू० पी में कहते हैं अभी खाकर उठा हूँ।"

आफताब ने कहा—"वैसे दोस्त लोग ऐसे खाते है कि खाकर न उठें न बैठें बल्कि लेट जाएँ।"

मुनीर को आफ़ताब के पास छोड़ कर नवाब साहब टल गये आफ़ताब को मजबूरन मुनीर के साथ नाश्ता का निरीक्षण करना पड़ा। मुनीर ने कहा—"अरे भाई यह कमबख्त जमाल, रिजवी, आनन्द वगैरा आखिर कहाँ गायब हैं ?"

आफ़ताब ने कहा—"नतीजा निकलने के बाद सब अपनी-अपनी तरफ चले गये। आनन्द शायद कश्मीर गया हुआ है। यहाँ सिवाय सल्मा अन्सारी के और कोई नही है। जमाल तो अभी नसीम के गायब होने से एक ही दिन पहले गया है।"

मुनीर ने नाश्ता समाप्त करके कहा—"अच्छा अब मैं जा रहा हूँ रात को फिर मियाँ शकूर की पेशी में चलना है ! शायद उस वक्त तक कोई सूचना आ जाए।" आफ़ताब उनको मोटर तक पहुँचाने आया।"

५

रात को मुनीर ने गाड़ी भेज कर आफ़ताब को अपने ही यहां बुलवा लिया और कह दिया कि खाना मेरे ही साथ खाना। तथापि जिस वक्त आफ़ताब मुनीर की कोठी में पहुँचा है मुनीर अत्यन्त चिन्तित-से टहल रहे थे। आफ़ताब ने जाते ही मालूम किया—"सब इन्सपेक्टर साहब वापस आ गये ?"

मुनीर ने कहा—"हां वापस आ गये। मगर मैं उसी उलझन में हूं कि कोई पता न उस मोटर का चला न कोई और फ़ायदे की बात मालूम हुई। सवाल यह है कि आख़िर वे लोग किस वक्त और क्योंकर नवाब साहब को लेकर निकल गये ?"

आफ़ताब ने कहा—"यह तो बहुत बुरा हुआ।"

मुनीर ने कहा—"यही मैं भी ग़ौर कर रहा हूं परन्तु यह सोच-विचार वक्त से पहले है। खाना खा लो, फिर मुकर्रर वक्त पर शकूर से मिलकर कोई राय कायम कर सकते हैं। मालूम होता है कि हमको इन तरकीबों से हाथ उठाकर सीधी कार्यवाही करनी पड़ेगी। मैं इस वक्त शकूर से बात कर लूं उसके बाद यदि उचित जान पड़ा तो आज ही, वरना कल अग़ान साहब और दुलारे मिर्ज़ा बल्कि सुलेमान कदर को भी घरे लेता हूं।"

मुनीर के खानसामा ने खाने की मेज़ लगा दी। जिस पर आफ़ताब के अतिरिक्त मालूम हुआ मिसेज़ मुनीर भी आ रही हैं। आफ़ताब अभी तक अपनी उन भाभी जान से नहीं मिला था। इसलिए कि जब से मुनीर यहां आये थे नसीम के ग़ायब होने के बारे में आफ़ताब को इतना परेशान रहना पड़ा कि उसने यह सवाल ही नहीं उठाया। इस वक्त मिसेज़ मुनीर का ज़िक्र सुन-

नुकते को फ़ौरन समझ लिया।

आफ़ताब ने कहा—"फ़र्क़ बस यह होता है कि उस्ताद ससुर बन सकता है बाप यह हरकत नहीं कर सकता।"

जरीं ने हँसकर कहा—"खूब-खूब बहुत खूब। मगर आप कुछ खाते तो रहिये। ये लीजिए बेमौसम के सही, मगर हैं मटर। शिमले से आ गये थे कुछ।"

मुनीर ने कहा—"जान जाती है इस औरत की, मटर के नाम पर। चाहे वह वाकई नाम ही के मटर क्यों न हों। यह लो जी तुम शरीफ़ों के खाने की चीज़ तीतर और हाँ वह हरकत क्या छोड़ दी पुडिंग वाली? सुना तुमने जरीं हमारे आफताब भाई का अजीब उसूल था कि आप पुडिंग पहले खाते थे और खाना बाद में।"

आफ़ताब ने कहा—"उसूल नहीं था साहब। खास वजह से यह हरकत करनी पड़ी थी। एक-आध बार कटु अनुभव हो चुका था कि हमने जब कुछ खाना खत्म किया तो मालूम हुआ कि खाने वाले पहले ही पुडिंग खत्म कर चुके हैं। अतः हमने भी सिस्टम बदल दिया था।"

जरीं ने हँसकर कहा—"वास्तव में आप पुडिंग पहले खा लिया करते थे। मैं तो अब तक उनकी युक्ति समझी थी मगर आप से खाई कैसे जाती थी?"

आफ़ताब ने कहा—"बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाद में खाई जाती है। बात यह है कि और खाने तो हिसाब से ज्यादा तैयार होते हैं परन्तु पक्षपातवश पुडिंग को बहुत कंजूसी से थोड़ी मात्रा में तैयार किया जाता है। अतः अगर किसी ने ज़रा भी बेतकल्लुफ़ी बरती तो उस ग़रीब की बिसात ही क्या होती है बर्तन साफ़ होकर रह जाता है और बहुत से लोग तो मुँह देख कर रह जाते हैं। इस वजह से मैंने तम्त मालाखीर[1] से बिस्मिल्लाह[2] का तरीका अपनाया।"

मुनीर ने कहा—"क्या समझती हैं आप इसको? ज़रा वह हज़रत यूसुफ़ गुमगश्ता खैरियत से आ जायें तो इन लोगों से लम्बी मुलाकात होगी। बड़े-

---

[1]सबसे आखीर। [2]सबसे पहले।

बड़े कारनामे किये हैं इन बुजुर्ग ने। अच्छा नहीं जल्दी करो आफ़ताब, वक्त करीब है।"

आफ़ताब ने कहा—"देखिये आपने फिर पुडिंग के वक्त पर जल्दी चाला-कियाँ शुरू कर दीं।"

ज़रीं ने कहा—"जी नहीं! आप इनको कहने दीजिये, लीजिये पुडिंग निकालिये।"

आफ़ताब ने कहा—"जानती हो यह जो आपके शौहर हैं ना, इनका हमेशा से ही तरीक़ा है कि पुडिंग के वक्त कभी किसी के मरने की खबर सुना देंगे, कभी हिन्दू-मुस्लिम लड़ाई का ज़िक्र छेड़ देंगे, कभी कोई ज़रूरी काम याद दिला देंगे, मतलब यह होता है कि मेरा ध्यान भटक जायेगा पुडिंग खाने के बारे में।"

मुनीर ने जल्दी-जल्दी पुडिंग खाते हुए कहा—"आपका ध्यान बहके या रहे, मगर वाक़ई बहुत देर हो रही है।"

ज़रीं ने कहा—"कोई बात भी हो? क्यों हाथ-पैर फुला रहे हैं आप?"

मुनीर ने कहा—"मज़ाक़ नहीं वाक़ई ज़रूरी काम है।"

आफ़ताब ने उठते हुए कहा—"लो बाबा! अब तो खुश हो?"

जिस समय ये लोग निश्चित स्थान पर पहुँचे हैं, ग़फ़ूर उनके इन्तज़ार में टहल रहा था। इनको देखते ही वहीं घास पर बैठ गया और उन दोनों को भी बिठा कर कहा—"आपकी कोशिश तो बेकार हुई होगी डिप्टी साहब?"

आफ़ताब ने कहा—"लीजिये इनको पहले से पता है। अरे भाई अगर मालूम ही था तो बेकार में क्यों दौड़ कराई इतनी?"

ग़फ़ूर ने कहा—"मुझे मालूम होता तो बता देता ना? रात को जब बनारस वाले नवाब साहब को ग़ायब किया जा चुका, कोई सा[illegible] क़रीब उस वक्त मुझको मालूम हुआ कि उनको बजाय [illegible] ज़िनहान सलून भेजा गया है, सबिहा के यहाँ।"

आफ़ताब ने कहा—"सलन? यह कहाँ है?"

मुनीर ने कहा—"रायबरेली के जिले में एक कस्बा है। तो उनको सलून भेजा गया है। आखिर यह क्यों ?"

शकूर ने कहा—"बड़े उस्ताद हैं ये लोग। कल रात सुलेमान कदर साहब के मैं चप्पी कर रहा था अग़ान साहब दुलारे मिर्ज़ा वहां मौजूद थे। उसी वक्त यह जिक्र छिड़ा तो अग़ान साहब ने कहा—"कि नये डिप्टी साहब की वजह से पुलिस इस मामले में बहुत दिलचस्पी ले रही है और हालांकि अभी तक पुलिस को उसका पता नहीं चला है कि नसीम को किधर भेजा गया है। परन्तु सचेत रहना जरूरी है। इसीलिए मैंने आखिर वक्त तक यह फैसला किया कि नवाब साहब को बजाय नैनीताल भेजने के दो दिन के लिए साहिबा के यहां सलून भेज दूं। फिर वह नैनीताल भेज दिये जाएंगे।"

मुनीर ने कहा—"मैं खुद दो बजे रात तक सीतापुर वाली सड़क पर मँडराता रहा। मेरे आदमी बरेली, लाल कूआं और काठगोदाम के चक्कर काट आये मगर मोटर जाती तो मिलती ? अच्छा जनाब शकूर साहब अब क्या इन्तजाम किया जाय ?"

शकूर ने कहा—"सबसे पहला इन्तजाम तो आप यह कीजिये कि सुलेमान कदर बहादुर के यहां तहकीकात के लिए पहुंचिये।"

आफ़ताब ने कहा—"मगर तुमने तो मना किया था ?"

शकूर ने कहा—"अग़ान साहब, दुलारे मिर्ज़ा या खुद सुलेमान कदर की गिरफ्तारी के लिए तो मैं अब भी मना कर रहा हूँ। यह तहकीकात तो केवल खानापूरी के लिए होगी। बात यह है कि अग़ान साहब ने बहुत ही पते की बात कही है कि पुलिस का पहला काम यह होना चाहिये था कि वह यहां से पड़ताल शुरू करती। मगर मालूम नहीं क्यों अब तक पुलिस ने इधर को रुख नहीं किया है। यह बात बड़ी खतरनाक है और इसका मतलब यह है कि पुलिस को मानो इस बात का अन्दाजा हो चुका है कि नसीम या जहानदार मिर्ज़ा साहब का पता यहां से नहीं लग सकता। मैं आप से इसलिए कह रहा हूँ वहां पहुंचने के लिए, कि उनको इस बात का शक व शुबह भी न होना चाहिये कि पुलिस किसी सही नतीजे पर पहुंच चुकी है। उनको तो इसी बात

का यकीन दिलाना है कि पुलिस खुद गलत रास्ते पर है और इस गलत रास्ते को साबित करने के लिए आपको तहकीकात के लिए गुलेमान बदर साहब के यहाँ जाना चाहिये। और उनसे कहना कि चूँकि आपके कुसक रफ़अत साहब के जो मुकदमा चल रहा है उसमें नसीम साहब आगे-आगे थे। इसलिए हमको शुबह है। यह भी शुबह है कि उनको गायब करने में भी आपके आदमियों का हाथ जरूर है। दिखाने के लिए मगन साहब का, दुलारे मिर्ज़ा का, खुद नवाब साहब का और मेरा बयान भी ले लीजियेगा।"

मुनीर ने कहा—"बात यह ठीक कह रहे हैं मगर साथ-ही-साथ हमको अपनी ठोस कार्यवाही बराबर रखना चाहिये। मैं मलूम क्यों न भेज दूँ ,कुछ आदमी ? जो कम-से-कम उस मोटर का नम्बर और ड्राइवर का नाम ही लेकर आएँ; जो यहाँ से जहानदार मिर्ज़ा को लेकर नैनीताल जाने वाला है। बल्कि मेरी राय तो यह है कि दो-तीन दिन के लिए नैनीताल के रास्तों पर मेरे आदमी मौजूद रहें।"

ग़फ़ूर ने कहा—"आपका जो जी चाहे वह करें, बस मेरी खातिर से यह न कीजियेगा कि मगन साहब वगैरा को गिरफ्तार कर लें, वरना पता लगाने में बड़ी दिक़्क़त हो जाएगी। इसमें शक नहीं कि पता लग जाएगा परन्तु एक दिन का काम दिनों में होगा और मालूम नहीं वे लोग नसीम मियाँ को नैनीताल ही में इसके बाद रखें या कहीं और भेज दें। हाँ एक बात मैं आपको बताना ही भूल गया था कि जिस वक्त मैं गुलेमान बदर साहब की चम्पी कर रहा था और मगन साहब और दुलारे मिर्ज़ा वहाँ बैठे थे, उसी वक्त बनारस वाले नवाब को ले उड़ने की कार्यवाही जारी थी। कोई ग्यारह बजे के करीब इलाहीबख्श नाम का एक व्यक्ति मगन साहब के पास आया और उसने आकर यह सूचना दी कि जहानदार मिर्ज़ा साहब को रवाना कर दिया गया। मगन साहब ने उसको नोटों की एक गड्डी दी। मालूम हुआ कि यह व्यक्ति और उसकी जमायत इस किस्म की वारदातें बिजनिस के तौर पर करती है।

मुनीर ने कहा—"इलाहीबख्श ? मेरे दिमाग में उस आदमी का नाम है ? यह तो कई बार सज़ा भी पा चुका है।"

शकूर ने कहा—"जी हाँ ! अफ़ग़ान साहब यह भी कह रहे थे कि कई वार सज़ा पा चुका है मगर आज तक अपने किसी जुर्म को स्वीकार ही नहीं किया। और अगर उसकी वोटियां भी काट डाली जाएँ तो भी वह यह नहीं वता सकता कि उसने किसके लिए और किस ग़रज़ से जुर्म किया है।"

मुनीर ने कहा—"मैं समझ गया। यह वड़ा ख़तरनाक आदमी है। आजकल पुलिस को इसकी फिर तलाश है। हाल ही में एक इज्ज़तदार हिन्दू के यहाँ से एक लड़की ग़ायब हुई है।"

शकूर ने कहा—"लाला द्वारकानाथ तो नहीं ?"

मुनीर ने मानो चौंक कर कहा—"अरे, यह तुमको कैसे मालूम हुआ ? वाकई लाला द्वारकानाथ के यहाँ यह वारदात हुई है। उनकी वहू लापता है। दस-वारह हज़ार के लगभग उनके शरीर पर ज़ेवर हैं।"

शकूर ने कहा—"वे तमाम ज़ेवर तो ख़ैर सुरक्षित हैं लेकिन सवसे कीमती ज़ेवर अस्मत के वारे में कुछ नहीं कहा। वह लड़की सेठ वद्रीप्रसाद······।"

मुनीर ने बात काट कर कहा—"सेठ वद्रीप्रसाद ?"

शकूर ने कहा—"वद्रीनाथ ही नाम होगा। वहरहाल वह उनके यहाँ ही पहुँचाई गई है।"

मुनीर ने कहा—"यार कमाल के आदमी हो शकूर। यह मालूम कैसे हुआ ?"

शकूर ने कहा—"इस कारनामे का भी ज़िक्र था। हाँ, और इलाहीवख्श बहुत शान से यह कारनामा वता रहा था।"

मुनीर ने कहा—"चलो एक काम तो वना। अच्छा भाईजान अव प्रोग्राम यह है कि पुलिस जल्दी-से-जल्दी दिखावटी तौर से सुलेमान कदर साहव के यहाँ पहुँचे और मैं इसी वक्त इस वात का इन्तज़ाम करता हूँ कि सलून से लेकर नैनीताल के हर रास्ते पर मेरे आदमी पहुँच जाएँ। कोशिश करूँगा कि मैं खुद कोई हिस्सा ले सकूँ।"

शकूर ने कहा—"अव कल मुलाकात न रहे। यदि कोई खास वात होगी तो मैं खुद पहुँच जाऊँगा आपके पास किसी-न-किसी तरह, वरना परसों इसी जगह।" इनके वाद सव अपनी-अपनी तरफ़ चल दिये।

६

नसीम और तिवारी के सम्बन्ध में अभी तक किसी प्रकार का फर्क न आया था। इसलिए कि नसीम को मालूम था कि वास्तव में इस स्थान से निकलने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। कदम-कदम पर बहुत सख्त निगरानी, हर आदमी सशस्त्र और रास्ता ऐसा पेचीदा कि जब तक किसी को पूरी तरह से मालूम न हो जाए उस जगह से निकलना आसान न था। अतः नसीम ने कभी इस बात की कोशिश ही नहीं की और अपने-आपको तदबीर के बजाए तकदीर के रहम पर छोड़ रखा था। इस कष्ट के अतिरिक्त कि दुश्मन के कब्ज़े में विवशता का जीवन व्यतीत कर रहा था और किसी प्रकार का कष्ट उसे न था। तिवारी खुद अधिकांश उसके पास मौजूद रहता था। और नसीम को वह हर प्रकार से बहुत ही सुरुचिपूर्ण, सभ्य, मनोरंजक और विनोदपूर्ण व्यक्ति सिद्ध हो रहा था। प्रायः दोनों साथ ही खाना खाते थे, बल्कि कभी-कभी उसकी प्रेयसी मेरी भी उन मनोरंजनों में उनके साथ सम्मिलित होती थी—ब्रिज हो रहा है, कभी शेरो-शायरी से मनोरंजन किया जा रहा है, कभी मेरी का गाना सुना जा रहा है। सारांश यह कि इन्हीं मनोरंजनों में नसीम का समय व्यतीत हो रहा था। परन्तु जब उसको स्थिति की गम्भीर अनुभूति होती थी तो वह अपने किसी दिलचस्प मूड में न आ सकता था। और यही वह अवसर होता था जब तिवारी और मेरी दोनों मिलकर उसका दिल बहलाने की पूरी कोशिश करते थे। आज भी वह फिर झुंझलाए उसी प्रकार की [illegible] में ग्रसित था कि तिवारी ने आकर कहा—

"कहो जनाब नसीम साहब! फिर सरकार के विरुद्ध सोच..

जान यह चीज़ साबित हो चुकी है कि सोच-विचार केवल उन मौकों पर करना चाहिये जो अपने वश में हो उदाहरणार्थ मैं सोच-विचार में ग्रसित होकर शहनशाही प्राप्त नहीं कर सकता, चाहे ताज व तख़्त की चिन्ता में जीवनभर ग़ौर करता रहूँ।"

नसीम ने कहा—"मिस्टर तिवारी यह मैं जानता हूँ मगर स्वभाव नहीं बदल सकता। आपकी कृपाओं से मेरी चिन्ता मेरे लिए इस सीमा तक अनुभूति रहित बन चुकी है कि मुझे खुद अपने ऊपर ताज्जुब होता है मुझे इस बात की किंचित् चिन्ता नहीं होती कि मैं कहाँ हूँ आप यकीन जानिए जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध है मैं बेहद खुश हूँ। आपका मनोरंजक साथ इस हुकूमत को भी मेरे लिए एक गोष्ठी बनाए हुए है। परन्तु ख़याल आता है उन लोगों का, जो खुदा जाने मेरे लिए कितने अधिक चिन्तित होंगे और किन-किन सोच विचारों में ग्रस्त होंगे। यह तो खैर सबको मालूम होगा कि मेरा यह अग़वा सुलेमान कदर के संकेत पर अग़ान साहब और दुलारे मिर्ज़ा के द्वारा हुआ है। परन्तु यह किसी को मालूम न होगा कि मैं मिस्टर तिवारी जैसी सभ्यता की ...त जेलर की देख-रेख में इस कैदख़ाने में भी दौलतख़ाने का आनन्द प्राप्त कर रहा हूँ। उनके मन में तो तरह-तरह के अन्देशे होंगे कि खुदा जाने मैं बांध कर डाल दिया हूँ या मेरी खाल खींची जा रही है या मैं टिकटिकी में बँधा हन्टर खा रहा हूँगा। सारांश यह कि वे लोग तरह-तरह की शंकाओं में ग्रस्त मुझको अपनी कल्पना में लाते होंगे। जब कि कोई ताज्जुब नहीं कि वे सोचते हों कि मेरी जान के लाले पड़े हुए हों।"

तिवारी ने समर्थन करते हुए कहा—"यह तो बिलकुल ठीक है। आपकी स्थिति तो उस स्वर्गीय की भांति है जो दुनिया के प्रत्येक कष्ट से मुक्त होकर स्वर्ग में पहुँच गया हो परन्तु बाकी घर वाले रो-रो कर बुरा हाल कर रहे हों और मृत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करने में व्यस्त हों।"

नसीम ने कहा—"तिवारी जी आप ही बताइये कि मुझको केवल इस अनुभूति के और कष्ट ही क्या है?"

तिवारी ने कहा—"मैं इस वक्त इस बात पर विचार कर रहा हूँ कि क्या

मरने के बाद मृत आत्मा अपने जीवित लोगों के सम्बन्ध में इसी प्रकार की बातों पर गौर करते होंगे। रह गयी आपकी तकलीफ़। इस विषय में अर्ज यह है कि भाईजान ताली दोनों हाथों से बजती है। आप अगर मुझको मेरी कर्तव्यपूर्ति में परेशान नहीं कर रहे हैं तो ख्वामख्वाह मैं आपको क्यों परेशान करूँ जितना मुझसे हो सकता है और इस ग़ार में आपको रखकर जैसी भी मेहमानदारी मैं कर सकता हूँ उसमें कमी नहीं कर सकता। बात यह है कि आपके सम्बन्ध में मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि आप बहुत अच्छे दोस्त बन सकते हैं और एक हँसमुख इनसान आपकी सोहबत में स्वयं मनुष्य [illegible] सकता है। कल मेरी बी कह रही थी कि मिस्टर नसीम बड़े अच्छे [illegible] मालूम होते हैं अब आप ही बताइये कि जिसको मेरी जैसी [illegible] कहे उसके साथ मैं बुरा सलूक कैसे कर सकता हूँ? दूसरे [illegible] कायम हूँ और हमेशा रहूँगा, जब तक कि आपकी तरफ़ से कोई [illegible] होगी और मुझको यह अन्देशा न होगा कि आप मेरे [illegible] हो रहे हैं, उस वक्त तक मैं आपकी तकलीफ़ को [illegible] और अगर आपने मुझे बाध्य किया तो इस ग़ार में [illegible] जिसमें लिहाज और नैतिकता इत्यादि को [illegible] साक का नाम है 'ताक नसियां।"

नसीम ने कहा—"मेरी तरफ़ से तो आपको [illegible] मैं इस प्रकार की हर कोशिश को कतई बेकार [illegible] ढूँढने वाले भी खामोश न होंगे। वे ज़मीन-आसमान [illegible] यकीन है कि वे यहाँ तक पहुँच ही जाएँगे।"

तिवारी ने कहा—"इस तरफ़ से आप [illegible] जगह तक पहुँचना बच्चों का खेल नहीं है। [illegible] तो उनको चूहे की मौत बहुत आसानी से [illegible] यह बताना तो आपको भूल ही गया कि [illegible] जहानदार मिर्ज़ा साहब भी रात [illegible]"

नसीम ने कहा—"आ गये नवाब साहब? [illegible]

पहले उम्मीद थी। क्या आप मुझको न मिलायेंगे नवाव साहब से ?"

तिवारी—"उसूलन तो न मिलाना चाहिए मगर चूँकि मुझको इस विषय में आप से काम लेना है अतः मैं जरूर मिलाऊँगा……वात यह है कि वह आपसे विलकुल प्रतिकूल स्वभाव के आदमी हैं। वेहद नाराज़, अपनी जान से दुखी आत्म-हत्या पर कटिवद्ध, तेवर से वहुत उद्दंड, और इस वात पर डटे हुए कि हम सवसे जोरआज़माई करके आज़ाद हो जायेंगे। मुझे कई मर्तवा उन हज़रत पर गुस्सा आते-आते रहा। वह मेरे हरेक सदव्यवहार का निहायत भोंडे ढंग से जवाव देते हैं। वूढ़े आदमी हैं, अव मैं क्या उनसे वोलूं परन्तु उनको भी तो चाहिये कि अपने वड़प्पन का खयाल करके हमको इस वात के लिए मजवूर न करें कि हम उनकी शान में कोई गुस्ताखी कर गुजरे। मेरी राय यह है कि आप उनसे मिलकर ज़रा उनको समझाइये कि पूज्यवर अव तो यह स्थिति है कि अगर खुश होकर रहेंगे तो उनको रहना होगा और नाराज होकर रहेंगे तो मरना पड़ेगा। अतः क्यों न खुश होकर रहा जाय और क्यों वेकार में वह खुद भी तकलीफ उठाएँ और हमको भी चैन से न वैठने दें। आपको नहीं मालूम नसीम साहव मैं स्वभाव से कुछ इस तरह का आदमी सिद्ध हुआ हूँ कि अगर किसी व्यक्ति को मेरी वजह से या मेरी आज्ञाओं से किसी प्रकार का कष्ट होता है तो मुझको भी एक चुभन सी रहती है। अव जहानदार मिर्ज़ा साहव के उदाहरण को ले लीजिये कि उनकी ज़ोर-आज़माई और उद्दंडता के कारण मुझे मजवूरन अपनी मर्ज़ी के खिलाफ़ उनको एकान्त कैद में रखना पड़ा। अतः वार-वार इस वात का खयाल आता हैं कि कि वूढ़े हैं। यह ज़माना है उनके आराम करने का, ज़िन्दगी भर आराम उठाया है और इस वक्त वह यह तकलीफ़ उठा रहे हैं। फिर भी आप उनसे मिलकर उन्हें समझाइये और अगर वे समझ जाएँ तो उनके साथ भी इसी वक्त से वही सलूक़ हो सकता है जो आपके साथ हो रहा है।'

नसीम ने कहा—"यह उम्र का कसूर भी है। वूढ़ा आदमी यों ही चिड़-चिड़ा होता है। फिर भी आप मुझको उनके पास ले चलिये मुझको उम्मीद तो है कि वह मेरा कहना मान लेंगे।"

तिवारी ने उठते हुए कहा—"अरे साहब मुझको तो वह ऐसी डाँट बताते हैं जैसे मैं ही उनका वह बेटा हूँ जिसको बस पीटने ही वाले हैं। और मैं यह सोचता हुआ रह जाता हूँ कि अब इन हज़रत से क्या बोलूँ ? ये बेचारे पिटारी के अंगूर सूखा मुनक्का हो रहे हैं।"

नसीम ने हँसकर कहा—"मगर हैं बड़े दमख़म के बुजुर्ग। फिर भी आप मुझको ले चलें उम्मीद है कि मुझ से मिलने के बाद ही उनके तेवर ठीक हो जायेंगे।"

तिवारी ने आगे बढ़ते हुए कहा—"तशरीफ लाइये ! और मेरा परिचय उन हज़रत से इस तरह करा दीजिये कि कम से कम वह अपनी वक्रभृकुटी का निशाना मुझको न बनाएँ।"

आगे-आगे तिवारी और पीछे-पीछे नसीम उसी खोह के अन्दर पेच दर पेच रास्ते तय कर रहे थे। तिवारी तो खैर इस तरह जा रहा था जैसे कोई अपने घर में टहल रहा हो परन्तु नसीम हमेशा की तरह आज भी हैरान था कि जिस तरह वह हर रोज उस गार में एक नया रास्ता देखा करता है उसी प्रकार तिवारी ने एक और नया रास्ता दिखाना आरम्भ कर दिया है जो उसके लिए सर्वथा नया है। तिवारी के हाथ में टार्च था जिसकी सहायता से वाज़ अन्धेरे स्थान को पार कर जाता था। एक जगह नसीम को कुछ जल तरंग का-सा स्वर सुनाई दिया। परन्तु तिवारी ने तुरन्त बता दिया कि यह एक पहाड़ी चश्मा है जो हमारे इस खोह के वाटर वर्क्स का काम देता है। और हम लोग जो पानी पीते हैं, और जितनी पानी की ज़रूरत पड़ती है वह सब इसी चश्मे से पूरी होती है। उभरे हुए पत्थरों पर पैर रख-रख कर नसीम और तिवारी दोनों ने उस चश्मे को पार किया और आखिर एक ऐसे स्थान पर पहुँच गये जहाँ नसीम के विचार से यह गार खत्म हो गई थी और आगे कोई रास्ता न था। तिवारी ने अपना टार्च बुझाकर अन्धेरे में खुदा जाने क्या किया कि एक घड़-घड़ाहट के साथ सामने की दीवार में एक दरवाज़ा सा खुल गया। तिवारी ने अन्दर कदम रखते हुए नसीम से कहा—"वह देखिये नवाब साहब टहल रहे हैं। अब आप आगे हो जाइये मैं पीछे रहता हूँ। डर

मुझको तो कल से इस वक्त तक तकलीफ-ही-तकलीफ पहुँची है। जैसे नमाजें सब कजा हुईं, जॉ-नमाज ही नही है नमाज क्या खाक पढ़ता वजाइफ सब खत्म, तस्बीह तक तो साथ आई नहीं घड़ी के बग़ैर मेरा कोई क्षण जिन्दगी में शामिल नही होता।"

तिवारी ने अपना रिस्ट वाच खोलते हुए कहा—"घड़ी तो यह हाजिर है जॉ-नमाज और तस्बीह के लिए अभी आदमी भेजता हूँ। माफ कीजियेगा इसमे हमारा कुसूर कम है। अगर आपने अपनी ये जरूरतें बयान कर दी होतीं और फिर इन्तजाम न होता तो आपको शिकायत का मौका था।"

नसीम ने कहा—"तिवारी साहब ! आप फौरन किसी को जॉ-नमाज और तस्बीह के लिए दौड़ा दीजिये।"

तिवारी ने जाते हुए कहा—"अभी लीजिये।"

तिवारी के जाने के बाद नसीम ने जहानदार मिर्जा साहब को बहुत अच्छी तरह तिवारी के विषय में सब कुछ समझा दिया कि वह किस किस्म का आदमी है। और साथ-ही-साथ वह यह भी बताने मे भी कामयाब जरूर हो गया कि इस कैद से रिहा होने की कोशिश करके कामयाब होना तो खैर मुमकिन ही नहीं, हाँ उस बेकार कोशिश का यह नतीजा जरूर हो सकता है कि तिवारी को इस बात पर मजबूर कर दिया जाए कि वह बजाए आराम पहुँचाने के सख्तियाँ करना शुरू कर दें। कुछ बातें या तो नवाब साहब खुद समझ गये और कुछ इस विश्वास ने समझा दी। नसीम समझा रहा था। जो कुछ हो उसका नतीजा यह निकला कि अब जो तिवारी वापस आता है तो स्थिति ही बदली हुई थी। नवाब साहब ने तिवारी को देखकर फरमाया— "भई तिवारी जी ! नसीम मियाँ ने मुझको आश्चर्यचकित कर दिया। मैं तो यह कल्पना भी न कर सकता था कि इस जगह और इस वातावरण में रह कर आप ऐसे हो सकते हैं जैसा कि नसीम मियाँ ने प्रकट किया है।"

तिवारी ने कहा—"यह नसीम साहब की कृपा है वरना आपको मालूम है कि मैं एक अपराधियों के गिरोह का आदमी हूँ। प्रकट है मुझसे किसी प्रकार की भलाई की उम्मीद करना ही बेकार है। पत्थर से आज तक पसीना नहीं

मालूम होता है कि कहीं एकदम वरस न पड़ें मुझ पर ···· "

नसीम ने आगे होकर दो ही कदम बढ़ाए थे कि नवाब साहब ने ज़ख्मी शेर की तरह एक वार वफर कर उस तरफ़ का रुख किया। परन्तु अपने सामने बजाए किसी और के नसीम को देखकर उनकी दशा ही कुछ और हो गई। भावातिरेक से कांप कर कुछ हकला कर और कुछ सिटपिटा कर वोले—"ये हम···तुम···नसीम···नसीम मियां! वेटे तुम भी यहाँ हो? शुक्र है कि मैंने तुमको खैरियत से देख लिया। अव हम दोनों मिलकर इन वदमाशों का मुकावला करेंगे। ये आखिर समझे क्या हैं अपने को! इनको मालूम नहीं कि मुकावला है जहानदार मिर्ज़ा का। जिसने अपने ज़माने में ऐसे-ऐसे वहुत लफ़ंगों से पानी भरवाया है। इन वूढ़ी हड्डियों में अव भी वह कस है कि मिज़ाज दुरुस्त कर दूंगा।"

नसीम ने नवाव साहव को विठाते हुए सभ्यता के साथ कहा—"आप इस तरह गुस्सा करके वेकार हल्कान हो रहे हैं। मैं आपको तमाम स्थिति समझाये देता हूँ। पहले आपसे मिलिये, मिस्टर तिवारी······।"

नवाव साहव ने क्रुद्ध दृष्टि से तिवारी की ओर देखकर कहा—"यानी मैं मिलूं उससे। जेल के दरोग़ा से? वदमाशों के सरदार से, मैं अपना हाथ अपवित्र नहीं कर सकता। वड़ा वहादुर है तो एक तलवार खुद ले और दूसरी मुझे दे।"

नसीम ने कहा—"आप समझे नहीं, और आपको मालूम नहीं कि तिवारी जी क्या हैं? मगर आपको यह अन्दाजा तो करना चाहिये कि मैं अर्ज़ कर रहा हूँ और कुछ समझ कर ही अर्ज़ कर रहा हूँ। तिवारी जी की वदौलत मुझको इस कैद में भी इतना आराम मिला है कि सिवाय इस एक तकलीफ के कि मैं कैद में हूँ और मुझको इस प्रकार का आराम पहुँचाया जा रहा है।"

नवाव साहव ने ग़ौर से नसीम की तरफ़ देखते हुए कहा—"आराम पहुंचाया जा रहा है? यह तुम कह रहे हो? ताज्जुव है साहव! ताज्जुव है जनाव! मैं तो आराम के वारे में खयाल भी यहाँ नहीं कर सकता। और

मुझको तो कल से इस वक्त तक तकलीफ़-ही-तकलीफ पहुँची है। जैसे नमाजें सब कज़ा हुईं, जाँ-नमाज़ ही नहीं है नमाज क्या खाक पढ़ता वजाइफ सब खत्म, तस्वीह तक तो साथ आई नहीं घड़ी के बगैर मेरा कोई क्षण जिन्दगी में शामिल नहीं होता।"

तिवारी ने अपना रिस्ट वाच खोलते हुए कहा—"घड़ी तो यह हाज़िर है जाँ-नमाज़ और तस्बीह के लिए अभी आदमी भेजता हूँ। माफ़ कीजियेगा इसमें हमारा कुसूर कम है। अगर आपने अपनी ये ज़रूरतें बयान कर दी होतीं और फिर इन्तज़ाम न होता तो आपको शिकायत का मौका था।"

नसीम ने कहा—"तिवारी साहब ! आप फौरन किसी को जाँ-नमाज़ और तस्वीह के लिए दौड़ा दीजिये।"

तिवारी ने जाते हुए कहा—"अभी लीजिये।"

तिवारी के जाने के बाद नसीम ने जहानदार मिर्ज़ा साहब को बहुत अच्छी तरह तिवारी के विषय में सब कुछ समझा दिया कि वह किस किस्म का आदमी है। और साथ-ही-साथ वह यह भी बताने में भी कामयाब ज़रूर हो गया कि इस कैद से रिहा होने की कोशिश करके कामयाब होना तो खैर मुमकिन ही नहीं, हाँ उस बेकार कोशिश का यह नतीजा ज़रूर हो सकता है कि तिवारी को इस बात पर मजबूर कर दिया जाए कि वह बजाए आराम पहुँचाने के सख्तियाँ करना शुरू कर दें। कुछ बातें या तो नवाब साहब खुद समझ गये और कुछ इस विश्वास ने समझा दीं। नसीम समझा रहा था। जो कुछ हो उसका नतीजा यह निकला कि अब जो तिवारी वापस आता है तो स्थिति ही बदली हुई थी। नवाब साहब ने तिवारी को देखकर फरमाया—"भई तिवारी जी ! नसीम मियाँ ने मुझको आश्चर्यचकित कर दिया। मैं तो यह कल्पना भी न कर सकता था कि इस जगह और इस वातावरण में रह कर आप ऐसे हो सकते हैं जैसा कि नसीम मियाँ ने प्रकट किया है।"

तिवारी ने कहा—"यह नसीम साहब की कृपा है वरना आपको मालूम है कि मैं एक अपराधियों के गिरोह का आदमी हूँ। प्रकट है मुझसे किसी प्रकार की भलाई की उम्मीद करना ही बेकार है। पत्थर में आज तक पसीना नहीं

निकला। वैसे इसका तो इलाज ही नहीं फिर नसीम साहब की जादूगरी ने मुझको भी अपना बना लिया है।"

नवाब साहब ने कहा—"मियाँ जब तुम स्वभाव से इतने शरीफ़ हो तो क्यों गन्दगी में पड़े हुए हो।"

तिवारी ने कहा—"पूज्यवर ! यह बात बहुत दूर जा पहुंचेगी। इस सम्बन्ध में किसी वक्त विस्तार के साथ बातचीत हो सकेगी। अब तो सिर्फ़ यह कहना है कि यह आप ही का घर है यानी ख़ानाए बेतकल्लुफ़।"

नवाब साहब ने चौंक कर कहा—"जी बख्शिये मुझको। खुदा न करे यह जेलख़ाना मेरा घर हो। इस लतीफे पर देर तक तीनों हँसते रहे। उसी बीच में एक पहाड़ी नौकर ने उन तीनों के लिए उसी जगह सुबह का नाश्ता चुन दिया और नवाब साहब ने दूसरे फ़ाके के बाद इस वक्त यह नाश्ता किया।

७

नवाब सुलेमान कदर साहब अपनी तमाम महीन-महीन और रेशमी अदाओं के साथ अपनी कोठी के ड्राइंग-रूम में दीवान पर तशरीफ फरमा रहे थे। सटक लगी हुई थी, खमीरे की खुशबू से कमरा महका हुआ था। खैर महक तो नवाब साहब के जामदानी के अँगरखे पर लगे हुए इत्र की भी कम नहीं थी और दिलबर जो इत्रों का समूह बनी बैठी थी उनकी खुशबुओं से भी कमरा उड़ा जाता था। अग्गन साहब और दुलारे मिर्ज़ा सामने ही सोफों पर बैठे हुए शर्बत के गिलास समाप्त कर रहे थे और मियां शकूर शर्बत के फायदे पर एक लैक्चर देकर अग्गन साहब को समझा रहे थे कि यह शर्बत जो खुद आपने तैयार किया है अन्य शर्बतो के मुकाबिले में कितना ताज़गी प्रदान करने वाला है।

अग्गन साहब ने कहा—"नही भाई अब बिलकुल जी नही चाहता।"

शकूर ने कहा—"जो चोर की सज़ा वह मेरी। अगर साल भर के बाद भी इसके मज़े में कोई फर्क पैदा हो जाए।"

अग्गन साहब ने कहा—"लाहौल विला कूवत (ऊँची आवाज में कहा) अब मैं नहीं पी सकता।"

शकूर ने मुँह बनाकर कहा—"यकीन नहीं आ सकता। इसकी तो खैर दूसरी बात है मगर,जो मैं अर्ज कर रहा हूँ वह है ठीक।"

दिलबर का यह हाल कि हँसी के मारे लोटी जा रही हैं और रह-रहकर सुलेमान कदर की गोद में आ जाती है। आखिर दुलारे मिर्ज़ा ने उठकर

शकूर के कान में मुँह लगाकर कहा—"वह कह रहे हैं कि अब नहीं पी सकता।"

शकूर ने कहा—"बस तीन ही गिलासों में छक गये ? मगर आप तो नोश फ़रमाइये मिर्ज़ा साहब ?"

दुलारे मिर्ज़ा ने उसी तरह मुँह लगा कर कहा—"बहुत उम्दा शर्बत है, मगर आखिर कहाँ तक पिया जाए।"

शकूर ने हँस कर कहा—

साकी* को मेरी तशना लबी† की जो खबर हो
कोनीन को मेरे लिए पैमाना‡ बना दे।

इस पर आकाश को गुँजा देने वाला एक कहकहा पड़ा—दिलवर ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा—"माशा अल्लाह आप शायर भी हैं। कैसा मौके का शेर पढ़ा है।"

सुलेमान कदर ने कहा—"कमाल करता है यह शख्स। बातें तो ऐसी ही दिलचस्प कि दूसरों के ग़म भुला दे। काम करने में जिन्न।"

अग़ान साहब ने कहा—"सबसे बड़ी खूबी यह है कि नवाब साहब तो खैर मालिक ही हैं, हम लोगों की भी तकलीफ़ आप नहीं देख सकते।"

दुलारे मिर्ज़ा बोले—"खैरख्वाह तो ऐसा है कि मुश्किल से इस किस्म के मुलाज़िम मिलते हैं।"

दिलवर ने कहा—"आज तो असल में मुझको आप ही यहाँ लाए हैं ज़बरदस्ती।"

सुलेमान कदर ने कहा—"आपको मालूम नहीं कि इसकी वजह क्या हुई ? मैं सुबह से कुछ खामोश-खामोश-सा था तो आप दूर-ही-दूर से मेरी इस खामोशी का अन्दाजा करते रहे। आखिर धीरे-धीरे क़रीब आये। आपके पास मेरे हर मर्ज़ का इलाज आपका बनाया हुआ शर्बत है अतः जबर्दस्ती शर्बत से आवभगत की। और जब इसके बाद भी मेरी तबियत न बहली तो आप एक दम ग़ायब हो गये। देखता क्या हूँ कि थोड़ी ही देर में आप सबको लिए तश

* शराब पिलाने वाली। † प्यास। ‡ शराब पीने वाला।

रीफ ला रहे हैं।"

दिलवर ने कहा—"मगर इस बेचारे ने इसी तरह सही आपकी तबीयत तो बहला दी।"

सुलेमान कदर ने कहा—"अब आपकी मौजूदगी में भी तबीयत न बहले तो जहन्नुम में जाए ऐसी तबीयत।"

अग्गन साहब ने दुलारे मिर्जा से कहा—"लीजिये साहब यहाँ शुरू हो गयी रहस्य की बातें, अब हम लोग इजाजत तलब करें।"

सुलेमान कदर ने संभल कर बैठते हुए शकूर से कहा—"खबरदार ये कमरे के बाहर न जाने पाएँ।"

शकूर ने कहा—"अब तो पीना ही पड़ेगी एक गिलास, और हमारे सरकार का हुक्म है।"

दिलवर एक मर्तबा फिर हँसी के दौरे में पड़कर सुलेमान कदर की गोद मे आ गिरी। ऐन उसी वक्त बरामदे में किसी की आहट मालूम हुई। अग्गन साहब ने फ़ौरन कमरे से निकल कर देखा कि डी० एस० पी० दो थानेदार और काफी सिपाहियों सहित मौजूद हैं। मुनीर ने अग्गन साहब को देखते ही कहा—"कहाँ हैं नवाब साहब ?"

अग्गन साहब ने कहा—"मैं अभी इत्तला करता हूँ, आपका इस्मे-मुबारक ?"

मुनीर ने कहा—"हमारा नाम है पुलिस, जो तुमको पूछने के बगैर भी देखकर मालूम हो सकता है। और यह भी शायद तुम्हें मालूम होगा कि हम यहाँ क्यों आये हैं ? फिर भी तुम नवाब साहब को फ़ौरन इत्तला करो और साथ-ही-साथ यह भी सुन लो कि कोई शख्स कोठी से बाहर निकलने की कोशिश न करे, हम पूरा घेरा डाल चुके हैं।"

अग्गन साहब बगैर जवाब दिये फौरन कमरे मे चले गये और चन्द ही मिन्ट के हड़बोंग के बाद फिर वापस आकर मुनीर से कहा—"तशरीफ लाइये।"

मुनीर जिस वक्त कमरे में पहुँचा है वहाँ दिलवर के अतिरिक्त बाकी सब

सुलेमान कदर ने जैसे चौंक कर कहा—"जी ! यानी मुझ पर ? हज़रत यह आप क्या फरमा रहे हैं ? भला मैं यह अपराधियों वाला काम क्यों करता ?"

मुनीर ने कहा—"यह तो खैर मुझ से ज्यादा आपको मालूम होना चाहिये। परन्तु मैं आपको सज्जनता के नाते यह मशवरा दे सकता हूँ कि अगर आप इस वक्त भी उन दोनों के सम्बन्ध में मुझको सही-सही बता देंगे तो मैं वायदा करता हूँ कि आप पर किसी प्रकार की आंच न आने दूँगा। यदि आपने न बताया और फिर पुलिस ने उनकी दूसरे तरीके से खोज लगाई कि वास्तव में उनके गुम करने में आपका या आपके आदमियों का हाथ साबित हुआ, तो नवाब साहब मैं कसम खाकर कहता हूं कि फिर मुझसे जिस कदर भी सख्ती हो सकेगी उसमें कमी करना हराम समझूंगा।"

अगन साहब ने कहा—"मगर हुजूर वाला …"

मुनीर ने डांटा—"बको मत ! तुमसे कुछ नहीं पूछा जा रहा है।"

सुलेमान कदर ने कहा—"मगर मैं तो हैरान हूँ कि यह आप क्या फरमा रहे हैं ?"

मुनीर ने कहा—मालूम होता है कि अपराधवृत्ति लोगों ने आपको पुस्ता बना दिया है ? अफसोस ! इस वक्त मैं इस मकान की तलाशी लेता हूँ।"

सुलेमान कदर ने कहा—"बड़े शौक से।"

दुलारे मिर्ज़ा ने कहा—"मगर इस कमरे में जनानी सवारियाँ हैं।"

मुनीर ने कहा—"क्या मतलब ? नवाब सुलेमान कदर साहब के बारे में तो मालूम हुआ है कि वह गैर शादीशुदा हैं। कोई और रिश्तेदार औरत हो नहीं सकती। इसलिए कि रिश्तेदारी आपकी खत्म हो चुकी है सबसे, इस मुकदमे की बदौलत। दारोगाजी आप सबसे पहले इस कमरे ही की तलाशी लीजिये।"

सुलेमान कदर ने जल्दी से कहा—"हजरत माफ कीजियेगा, जरा गाना वगैरहा सुनने के लिए मैंने दिलबर जान को बुलाया था, वह हैं उस कमरे में।"

मुनीर ने कहा—"खूब ! खूब ! तो इसमें क्या मुजाइका है और

इस तरह छिपाने की जरूरत भी न थी। इन रईसी मनोरंजनों की तो हमको आप से यूँ भी उम्मीद होनी चाहिये। दरोगाजी दिलबर बाई से कहिये कि कुछ आपके दर्शनों के इच्छुक भी मौजूद हैं।"

'हजाब† हुस्न की तौहीन है, हजाब न कर।'

दुलारे मिर्जा ने स्वभाव के अनुसार कहा—"ऐ सुब्हान अल्लाह।"

मुनीर ने अकड़ कर कहा—"शटअप! क्या सुब्हान अल्लाह? क्या तुमने मुझको भी रईस समझ रखा है कि तुम्हारे इस सुब्हान अल्लाह के नारे पर मैं खुश हो जाऊँगा? क्या समझे तुम इस मिसरे को जो ख्वाहमख्वाह दाद दे दी? मुझको मालूम है कि तुम हजाब की इमला‡ तक से वाकिफ नहीं हो।"

दुलारे मिर्जा तो इस डांट से बिलकुल मौन हो गये। उधर अग्गन साहब को अपनी जान के लाले पड़े हुए थे। नवाब साहब अलग शर्म से गड़े जा रहे थे कि उसी वक्त दिलबर जान ने कमरे में आकर बड़े सलीके से मुनीर को सलाम किया।

मुनीर ने कहा—"आइए जनाब जनानी सवारी साहिबा। तो गोया आप हैं श्रीमती दिलबर? बैठ जाइये। बैठ जाइये। मगर मैं नवाब साहब के सौन्दर्य की परख की दाद देता हूँ। अच्छा दारोगाजी, आप जरा तलाशी ले लीजिये कोठी की, मैं जब तक इन साहबान और इन साहिबा के बयान ले लूँ।"

दोनों सबइन्स्पेक्टर और कुछ सिपाही तलाशी लेने में लग गये। एक हेड कान्सटेबल बयान लिखने के लिए कागज-कलम संभाल कर बैठ गया और मुनीर ने उन सब लोगों के बयान लेना शुरू कर दिये। उन बयानों में सबसे ज्यादा विस्तार के साथ अग्गन साहब और दुलारे मिर्जा का बयान लिया गया और सबसे ज्यादा मनोरंजक बयान दिलबर जान का सिद्ध हुआ। जिसको मुनीर के प्रश्नों ने मनोरंजक बना दिया था। उन सबके बयान लिए गये। यहाँ तक कि शकूर की बारी आ गई। मुनीर ने उससे पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?

शकूर ने कहा—"यहाँ से करीब ही एक मौजा है कसमंडी।"

---

†परदा। ‡शुद्ध लिखना।

मुनीर ने कहा—"मैं पूछ रहा हूँ नाम क्या ?"

शकूर ने कहा—"दो महीने से मुलाजिम हूँ।"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"हुजूर यह सख्त बहरा है। इजाजत हो तो मैं इससे पूछता जाऊँ ?"

मुनीर ने कहा—"पूछिये साहब ! यह तो अजीब चीज मालूम होता है ?"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"शकूर ने कहा—"इस खाकसार को अब्दुल शकूर कहते हैं।"

"मुनीर के पूछने के बाद दुलारे मिर्जा ने पूछा—"बाप का नाम ?"

शकूर ने कहा—"अब्दुल हमीद साहब मरहूम व मगफूर† साकिन‡ कसमंडी।"

मुनीर के सवाल पर दुलारे मिर्जा ने पूछा—"नसीम साहब को तुम जानते हो ?"

शकूर ने ग़ौर करते हुए कहा—"वह जिनकी परचून की दुकान है ?'

मुनीर के सवाल को दुलारे मिर्जा ने विस्तार से दोहराया—"नहीं, बल्कि मिस्टर नसीम एम० ए० जो हमारे नवाब साहब के चचा के यहाँ रहते हैं।'

शकूर ने कहा—"नवाब साहब के चचा ? नवाब साहब के चचा कौन ? मैंने तो आज तक नहीं देखा उनको ?"

मुनीर का सवाल दुलारे मिर्जा ने दोहराया—"तुम यहाँ कब से मुलाजिम हो ?"

शकूर ने कहा—"दो माह से मुलाजिम हूं। अर्ज तो कर चुका हूँ।

मुनीर के शब्द दुलारे मिर्जा ने पहुंचाए—"तुम्हारे सामने कोई आदमी यहाँ पकड़ कर लाया गया कभी ?'

शकूर ने कहा—"जी हाँ, हमारे नवाब साहब के दो गिरहबाज कबूतर, एक साहब ने पकड़ लिये थे। उन हजरत को मैं खुद पकड लाया था और एक बार मेरे साथियों में से एक नौकर भाग गया था उसको।"

---

†स्वर्गीय। ‡निवासी।

मुनीर ने डाँटा—"यह क्या बकवास है? खत्म कीजिए इसका बयान, जानवर कहीं का।"

इस बीच में तलाशी लेने वाले सिपाही भी वापस आ चुके थे और मुनीर को बताया जा चुका था कि कोई काबिले एतराज चीज बरामद नहीं हुई। मुनीर ने सुलेमान कदर साहब से कहा—"नवाब साहब, जहमत तो होगी मैं आपकी चैंक-बुक देखना चाहता हूँ।"

सुलेमान कदर ने चैंक-बुक निकाल कर डिप्टी साहब के हवाले कर दी। मुनीर ने उसको उलट-पुलट कर देखा, कुछ नोट किया और हँसकर कहा—"अग़ान साहब के नाम तकरीबन सब चैक काटे गये हैं। मानो आप ही हैं जो कुछ हैं। अच्छा नवाब साहब, इजाज़त दीजिये और दुआ कीजिये कि मुझको फिर नियाज़† हासिल करने की ज़रूरत न हो।"

सुलेमान कदर ने फिर कुछ तवाज़ा करनी चाही लेकिन मुनीर ने बिलकुल इनकार कर दिया और अपनी जमाअत को लेकर चला गया।

८

ग़ज़ाला की दशा उसकी तमाम सहेलियों को मालूम हो चुकी थी और नाहीद ने इसका इन्तज़ाम कर रखा था कि हर दूसरे-तीसरे उनमें से सब या जिससे भी हो सके गज़ाला के पास आती रहे, वरना एकान्त में गज़ाला खुदा जाने क्या विचित्र बात सोचा करती थी। उदाहरणार्थ—एक दिन आपने नाहीद से कहा—मैं इस बात पर गौर किया करती हूँ कि औरतों ने खुदा जाने क्या-क्या काम किये हैं। एक से एक वीरांगना स्त्री हो चुकी हैं। मेरा मतलब यह नहीं है कि प्रत्येक स्त्री झाँसी की रानी या चाँद बीबी हो जाए परन्तु स्त्री का यह अर्थ भी कदापि नहीं कि वह केवल खाना पकाने की मशीन बनकर या सीने-पिरोने की सीमाओं में रहकर अपने कर्तव्य से निवृत्त हो गई। स्त्री यदि चाहे तो उस भावना के बावजूद जो उसको कुछ न बन सकने के योग्य बनाने के सिवाय और किसी योग्य नहीं रखती बहुत कुछ कर सकती है। नसीम साहब के गुम होने के सम्बन्ध मे मेरा कर्त्तव्य मुझे पुकार-पुकार कर कह रहा है कि मैं उस व्यक्ति के काम नहीं आ रही हूँ जिसने अपनी जान पर खेल कर मेरी जान बचाई थी। अब मेरा कर्त्तव्य यह है कि मैं उनकी बचाई हुई जान की बाज़ी लगाकर उनको ढूँढने के लिए जिस तरह भी हो निकल जाऊँ। नाहीद ने समझाकर इस सम्बन्ध में उस वक्त खामोश कर दिया मगर दो-तीन दिन के बाद देखा कि आप नवाब साहब का रिवाल्वर लिये निशाना बाज़ी का अभ्यास कर रही हैं। पूछा—"यह क्या ?" जवाब मिला—"हम लोग जिन परिस्थितियों के बीच जीवन व्यतीत कर रहे हैं उनका तक़ाज़ा यही है कि हम अपनी सुरक्षा के लिए किसी तरह निहत्थे न रहें।"

यह बात भी मज़ाक में टाल दी गई। फिर मालूम हुआ कि आप रोज़ाना हवा खोरी के बहाने मोटर पर जाती हैं और तीव्र गति से मोटर चलाना सीख रही हैं। आखिर को इन तमाम बातों को एक दिन नाहीद ने सहेलियों के समूह में प्रकट कर दिया।

अख्तर ने जो स्थिति से अवगत हो जाने के बाद अब तमाम हास-परिहास की बातें छोड़ चुकी थी, ये तमाम बातें सुनकर कहा—"खैर यह तो ग़लत है कि यह बेचारी नसीम साहब को ढूँढने निकल सकती है। जिनके सुराग़ में पुलिस एड़ी-चोटी का जोर लगा रही है और खुदा जाने क्या-क्या युक्तियाँ की जा रही हैं। परन्तु अगर मोटर चलाना सीख रही हैं तो इसमें क्या नुकसान है! रिवाल्वर चलाने का अभ्यास हो जाए, बहुत ही अच्छा है।"

बानू ने कहा—"मगर तुम परदे में रह कर मोटर चलाना कैसे सीख रही हो?"

ग़ज़ाला ने कहा—बुर्के में रह कर नवाब सुलतान जहाँ बेगम भोपाल पर शासन कर गई हैं। आप मोटर को लिए फिरती हैं, बुर्के के अन्दर ही अन्दर मैंने पूरी शिक्षा ली मोटर चलाने की।"

खुशकदम ने आकर कहा—"बिटिया! मोटर पर एक गोरी-सी लड़की आई है और यह कार्ड दिया है कि ग़ज़ाला बीबी को दे दो।"

ग़ज़ाला ने कार्ड लेकर पढ़ते हुए कहा—"अरे सलमा अन्सारी? यह आज मुझ से मिलने आ गई? खुशकदम तुम उनको मोटर से अन्दर तो लाओ।"

नाहीद ने कहा—"तुम ड्योढ़ी तक चली जाओ, और देखो खुशकदम नाश्ता और चाय का इन्तज़ाम रखना।"

खुशकदम और ग़ज़ाला के चले जाने के बाद अख्तर ने कहा—"अब इन कालिज आरा बेगम के सामने नाप-तौल कर बातें करनी पड़ेंगी।"

बानू ने कहा—"नाप-तौल कर बातें करो पर जो कुछ उनको ऐतराज करना होगा तो वह फिर भी न चूकेंगी। इन कालिज की लड़कियों को बनाने और भटकाने का बहाना मिलना चाहिये।"

नाहीद ने कहा—"नहीं जी! वह मेरे विचार से खुद भी बेहद परेशान

भाई होगी बेचारी ! नसीम साहब के गुम होने ने किस के होश ठिकाने रहने दिये हैं। सुना है कि यह खबर सुनकर कश्मीर से उनके दोस्त आनन्द साहब भी आ रहे हैं। भाईजान का खयाल है कि वह मेरे ही साथ ठहरेंगे।"

गज़ाला के साथ सलमा ने आकर आशा के प्रतिकूल उन तीनों को तसलीमें की। गज़ाला ने कहा—"यह हैं मेरी सहेली नाहीद·········।"

सलमा ने कहा—"अच्छा अच्छा! आफताब साहब की बहन ? यह कहिये ना, यह तो मेरी भी इस रिश्ते से बहन हैं।"

गज़ाला ने उसी तरह अख्तर और बानू का परिचय कराया और अपने पास ही सलमा को बिठाकर कहा—"मुझको तो आज आपका कार्ड देखकर आश्चर्य हुआ कि आपके दिमाग में मेरे से मिलने का खयाल कैसे आ सका, जबकि आप इसी घर मे कई मर्तबा आकर अलग ही अलग बाहर से चली गईं।"

सलमा ने कहा—"देखिये गज़ाला बहिन ! इस विषय मे मुझसे ज्यादा कुसूर नसीम साहब का था, कि उन्होंने मुझको कभी अन्दर न भेजा। और मैं अपनी जगह पर यह समझती रही कि सम्भव है आपके यहाँ बेपर्दा लडकियों से भी पर्दा होता हो। इसीलिए इस वक्त मैं मोटर से उत्तर कर सीधा अन्दर नही आई बल्कि पहले कार्ड भेजा। और सुनिये तो आपको जब यह मालूम है कि मैं कई मर्तबा बाहर आकर चली गई तो आपने क्यों न बुलवाया मुझको कभी।"

गज़ाला ने कहा—"जिस तरह आपको यह खयाल हो सकता है कि हमारे यहाँ बेपर्दा लड़कियों से भी पर्दा होता है उसी प्रकार मेरे दिमाग में भी यह खयाल आ सकता है कि शायद कालिज की लडकियाँ हम घरेलू लडकियों को अपने बात करने के काबिल ही नही समझती हो।"

सलमा अन्सारी ने हँस कर कहा—"घरेलू लडकी भी आपने खूब कहा। मैंने आपकी बुद्धिमता के बारे मे जैसा सुना था उसकी पुष्टि इस पहले ही वाक्य घरेलू लड़की मे हो गई। अच्छा गज़ाला बहन आइये अब इस लड़ाई को खत्म करके सुलह कर लें, इसलिए मुझको मालूम है कि आप —"

परेशान हैं और कुछ मैं भी इस उलझन में वेचैन-सी हो रही हूँ। सबसे पहली बात तो यह कि मुझको चाय पिलवाइये।"

नाहीद ने कहा—"यह चाय की माँग आवश्यकतावश की है आपने, या सुलहनामा पर मोहर लगाने के लिए ?"

सलमा ने हँस कर कहा—"देख लीजिये बिलकुल वही आफ़ताब साहब की तरह शरारत है जो बहुत सादगी से फ़रमाई जाती है मगर होती है भरपूर ! लेकिन मैं इस वक्त चाय की माँग सुलहनामे पर मोहर लगाने के लिए नहीं कर रही हूँ बल्कि बेहद थक चुकी हूँ। सुबह से तीन चक्कर मुनीर साहब की कोठी के किये हैं, इतनी ही बार आफ़ताब साहब को तलाश करने निकली हूँ, मगर दोनों में से किसी का पता नहीं।"

ग़ज़ाला ने कहा—"क्यों, ख़ैरियत तो है ?"

सलमा ने कहा—"नसीम साहब के सम्बन्ध में एक खबर सुनी है उसी की इत्तला उन दोनों को करनी थी।"

ग़ज़ाला ने बेचैनी के साथ कहा—"चाय के लिए मैं पहले ही कहलवा चुकी हूँ मगर इस इन्तज़ार में आप यह बात [illegible]ची न रखिये।"

सलमा ने कहा—"मुझको आज मा[illegible] नसीम साहब को नैनीताल के रास्ते में कहीं रखा गया है।"

गिरफ़्तार कर रखा है। इस सूचना के बाद मैंने मोटर सम्भाला और अत्यन्त खामोशी के साथ नैनीताल चली गई। प्रकट है कि यह मेरी विचित्र चेष्टा थी परन्तु बहुत-सी-विचित्र चेष्टाएँ इनसान कर बैठता है। मेरे लिए आसानी यह थी कि मेरी मौसी आजकल नैनीताल से काठ गोदाम तक आना और दोपहर के करीब वापस नैनीतील जाना, तीसरे पहर को फिर यही प्रोग्राम—तीन रोज तक तो यह सड़क की पैमाइश बिलकुल बेकार साबित हुई परन्तु पाँच दिन हुए कि सहसा मुझे कामयाबी की झलक नजर पड़ी।"

ग़ज़ाला ने कहा—"कामयाबी की झलक ?"

सलमा ने कहा—"हुआ यह कि मैं काठगोदाम से नैनीताल की तरफ आ रही थी कि बहुत तेज़ बारिश शुरू हो गई और खुदा ने मुझको बाल-बाल बचाया। इसलिए कि मोटर चला रही थी कि एक बहुत बड़ा पत्थर लुढ़क कर सड़क पर इस तरह आ गिरा कि अगर मेरी कार तीन-चार गज और आगे होती तो खात्मा था। अतः मैंने उस मूसल धार बारिश में अपनी कार रोक ली। ठीक उसी वक्त काठ गोदाम से नैनीताल की तरफ जाने के लिए एक कार आकर उस पत्थर के उस तरफ रुक गई। मैंने अन्दाज़ा किया कि इस कार के लोगों को यह पत्थर देखकर ज़रूरत से ज्यादा बेचैनी पैदा हो गई है। पहले तो उनमें से दो आदमियों ने उस पत्थर को खिसकाने का असफल प्रयत्न किया, इसके बाद उनमें से एक व्यक्ति ने और भी मूर्खता का सबूत देते हुए मुझसे आकर कहा—कि हमारे साथ एक बीमार है उसको बस हमको थोड़ी ही दूर और ले जाना है आपको यहाँ ठहरना तो पड़ेगा हम लोग आपकी कार पर बीमार को पहुँचा कर अभी आते हैं। मैंने उस विचित्र माँग पर कहा कि आप बीमार को मेरी कार में ले आइये मैं खुद पहुँचा देती हूँ जहाँ आप कहें। इस पर उन लोगों में मशवरा हुआ और आखिरकार एक आदमी तो छोड़ा उन लोगों ने अपनी कार के पास और तीन आदमी, वे बड़े मियाँ को लेकर जो कुछ आधे बेहोश थे, मेरी कार पर आ गये। वह बड़े मियाँ बराबर बड़बड़ा रहे थे··· कि सुलेमान कदर खुदा तुमसे समझे।"

ग़ज़ाला ने अत्यन्त बेचैन होकर कहा—"फूफा ! वह मेरे फूफा हैं उनको

ी गायब किया गया है।"

सलमा ने कहा—"सुनिये तो सही। सुलेमान कदर का नाम सुनकर मेरी ख़ुशी की जो हालत हो सकती है वह प्रकट है कि मैंने आख़िर पता चला लिया और अब मैं उन लोगों के साथ उनकी मंज़िल तक पहुँच जाऊँगी। तथापि मैं दिखाने के लिए बिलकुल अन्यमयस्क बनी हुई कार को लेकर रवाना हुई। अफ़सोस यह है कि वह वृद्ध इतने होशियार न थे कि निरन्तर वार्तालाप कर सकते, केवल बर्रा रहे थे। सुलेमान कदर के अतिरिक्त कुछ रफ़ू या राफ़ू भी कहते थे।"

ग़ज़ाला ने जल्दी से कहा—"रफ़ू मियाँ कहते होंगे रफ़ू मियाँ। मेरे अब्बा को वह रफ़ू मियाँ ही कहते हैं। अच्छा तो फिर ?"

सलमा ने कहा—"फिर यह कि मैं मोटर चलाती रही और लगभग तीन मील ऊपर की तरफ जाकर उस स्थान के करीब जहाँ से यह सड़क दो हिस्सों में बँट जाती है यानी एक मोटर तो चली जाती है नैनीताल को, और सीधी सड़क जाती है भवाली, रानी खेत और अलमोड़ा वगैरा; उस मोड़ से लगभग ाधी फरलांग उसी तरफ उन लोगों ने कहा मोड़ रोक लीजिये। अब मैं हैरान कि न यहाँ कोई मकान नजर आता है, न कोई सड़क है न पगडंडी। मगर मुझको इससे क्या ? मैंने कार रोक ली वह तीनों उतर गये और उन वृद्ध को अपने उपर लाद कर मेरा शुक्रिया अदा किया और वे रास्ते को रास्ता बनाते हुए एक पहाड़ी पर चढ़ने लगे। जब तक मैं कार मोड़ती रही वह मेरी निगाहों के सामने थे। आखिर एक तरकीब मेरी समझ में आई कि मैंने अपना पर्स निकाल कर हाथ में लिया और थोड़ी दूर आगे जाकर कार को फिर बैंक किया। इरादा यह था कि उन लोगों का पीछा करूँगी। अगर उन लोगों ने देख लिया तो पर्स दिखाकर पूछूँगी आपका है ? कार में पड़ा हुआ मिला है। मगर मैंने कार से उतर कर उन लोगों को लाख-लाख ढूंढा, मगर उन्हें खुदा जाने जमीन खा गई या आसमान, उनका पता न चल सका। यहाँ तक कि शाम हो गई। थोड़ी देर के बाद मुझको वह व्यक्ति आता हुआ दिखाई पड़ा जिसको उन लोगों ने मोटर के पास छोड़ा था। मैं एक पत्थर की आड़ में

छिप गई कि यह व्यक्ति जिस तरफ जाएगा, मैं निहायत खामोशी के साथ उसका पिछा करूँगी। मगर अब जो मैं गर्दन उठा कर देखती हूँ तो वह व्यक्ति ग़ायब। कुछ देर इन्तजार किया आखिर इस विचार से कि मेरी कार देखकर यह व्यक्ति आया होगा और सम्भव है वे लोग इस चिन्ता में निकलें कि मेरी कार अब तक यहां क्यों खडी है। मैं वहां से चली आई।"

ग़ज़ाला—"अफ़सोस ! आप मंज़िल पर पहुच कर लौट आई।"

नाहीद ने कहा—"तो आखिर यह बेचारी और क्या कर सकती थी। मैं तो इस हद तक इनका पहुँच जाना ही गनीमत समझती हूँ।"

सलमा ने कहा—"मैं दूसरे दिन और फिर तीसरे दिन इस खोज में गई और वही पर्स वाली तरकीब मेरे दिमाग़ में थी। यदि किसी ने पूछा तो यह बहाना मौजूद ही है। मगर मुझको पता चल न सका। अब यह तो तय ही है कि वही थोड़ी-सी जगह है और उसी मे कुछ रहस्य है। मालूम यह होता है कि उन लोगों ने कोई खुफ़िया रास्ता उसी जगह बना रखा है। इसलिए कि उसी जगह वे तीनों उन वृद्ध के साथ ग़ायब हुए और उसी जगह वह चौथा आदमी भी। अब मैं इस ख़याल से लखनऊ भागी आई हूँ कि अब पुलिस को चाहिए कि उस स्थान का घेरा डाल ले और उस रास्ते को मालूम करे।"

ग़ज़ाला ने कहा—"जरूरत इसकी है कि आप वाकई किसी तरह आफ़ताब भाई या मुनीर साहब से मिल लें। मगर मेरी राय यह है कि पुलिस के लिए घेरा डालने का जो मशवरा दिया है वह मुनासिब नहीं है। अगर यह तरकीब की गई तो वे लोग खुदा जाने किस रास्ते से नसीम साहब और मेरे फूफा को वहां से गायब कर देंगे। प्रकट है कि अगर वह ऐसी जगह है तो उसका कोई एक रास्ता न होगा।"

सलमा ने कहा—"खैर यह काम तो पुलिस के सोच-विचार पर छोड़िये। लीजिये चाय आ गई पहले मैं चाय पीकर अपने होश दुरुस्त कर लूँ।"

ग़ज़ाला ने कहा—"मेरी राय यह थी कि स्नान करके कपड़े बदल लें, इसके बाद चाय पिएँ।"

सलमा ने कहा—"इन तमाम विषयों पर चाय के बाद ही गौर करने

काबिल हो सकती हूँ।"

यह कहकर उसने बड़ी बेतकल्लुफ़ी से चाय बनाकर बग़ैर किसी से पूछे-गाछे शुरू कर दी। एक-दो और इसके बाद तीन प्यालियाँ पीकर उसने एक लम्बी साँस ली और कहा—"अब आँखें खुलीं मेरी। परसों इसी वक्त चाय पी थी।"

ग़ज़ाला और नाहीद ने ज़बर्दस्ती उसको कुछ फल और बिस्कुट खिलाए। इसके बाद उसने कहा—"मुझे नहाने और कपड़े बदलने का उस वक्त तक कोई हक नहीं जब तक कि मुनीर साहब को इस जानकारी की अमानत न पहुँचा दूँ।" यह कहकर वह खड़ी हो गई।

ग़ज़ाला ने उसके साथ उठते हुए कहा—"अच्छा तो मैं खाने पर आपका इन्तज़ार करूँगी।"

सलमा ने कहा—"देखो बहन, इन बातों का यह वक्त नहीं है। यदि मैं आसानी से आ सकी तो आ जाऊँगी।" यह कह कर वह सबसे मिली और ग़ज़ाला उसको पहुँचाने के लिये आगे बढ़ गई। जब वे दोनों दूर निकल गईं तो ग़ज़ाला ने कहा—"आप किसी वक्त जल्द-से-जल्द मुझसे मिल लीजिये। मुझे एकान्त में खास बातें आपसे करनी हैं।"

सलमा फिर मिलने का वादा करके चली गई। और सच्ची बात यह है कि अपने इस काम से ग़ज़ाला को क्या सब ही को चकित कर गई।

६

आनन्द आफताब के यहाँ पहुँच चुका था और नसीम के लिए अत्यन्त चिन्तित था। उसके सम्पूर्ण हास-परिहास, तमाम बुद्धिमानी और सारी तेजियाँ जैसे लंगड़ी होकर रह गई थी। मुनीर चूंकि पुलिस का आदमी था इसलिए उसके मुख से परेशानी का प्रभाव प्रकट न होता था। अब तक तो आफताब ने भी हिम्मत का सुबूत दिया था मगर जहानदार मिर्जा साहब के अगवा* और उस अगवा के सम्बन्ध में पुलिस को उनके न मिलने के विषय मे असफलता हो चुकी थी, उसने आफताब को भी चिन्ता में डाल दिया था। इस वक्त ये तीनों आफताब के यहाँ उपस्थित थे। जहाँ ये तीनो इकट्ठे हों वहाँ सन्नाटा हो? तोबा कीजिये। एक साक्षात् हगामा तो स्वयं आनन्द साहब थे, फिर मुनीर वह बुजुर्ग जिनके ठहाके कालिज की शान्ति के लिये घातक समझे जाते थे। यहाँ तक कि परीक्षा के निकट उनकी सेवा मे मंडल भेजे जाते थे कि मालिक के लिए चन्द दिन अपने इन तूफानी ठहाको को रहने दीजिये ताकि परीक्षार्थियों को परीक्षाफल के समय रोना न पडे। और उनकी इस प्रार्थना पर आप उस वक्त ग़ौर करते थे जब आपको एक बढिया टी-पार्टी दी जाए। परन्तु इस वक्त आफताब के कमरे में कब्रिस्तान वाली खामोशी थी। तीनो सिगरेट पर सिगरेट पी रहे थे और चुप थे। आखिर आनन्द ने कहा "मुनीर भाइ आखिर प्रोग्राम क्या है अब?"

मुनीर ने कहा—"साफ और सीधा प्रोग्राम तो यह है कि मैं उन नवाब

* गायब करना।

सुलेमान कदर वहादुर को दुलारे मिर्ज़ा सहित बांध लूं और उस वक्त तक ठुकाई का सिलसिला जारी रहे जब तक कि ये लोग पता न बताएँ। मगर शकूर की सूचना और उसकी मुखबरी से फ़ायदा उठाने को जी चाहता है। इसमें शक नहीं कि वह बहुत उम्दा काम कर रहा है। और जिस रोज़ से मैंने सुलेमान कदर के यहाँ छापा मारा है मुझको उनकी क़ाबलियत का और भी यक़ीन हो गया है।"

आनन्द ने कहा—"अब आप उसकी काबलियत पर भरोसा करते रहेंगे तो कर चुके पुलिस अफ़सरी। मेरा मतलब यह है कि वह लाख समझदार, लाख होशियार और दाव-पेंच का आदमी सही मगर है आखिर अनपढ़ और सुराग़ रसानी* के तरीकों से अनभिज्ञ।"

मुनीर ने कहा—"मैं समझ गया जो तुम कह रहे हो, मगर उसका ख़याल यह बिलकुल ठीक है कि अगर सुलेमान कदर एण्ड कम्पनी को गिरफ़्तार किया गया तो नसीम का पता चलने में बजाए आसानी के अड़चनें पैदा हो जाएँ। बजाए इसके कि शकूर इस ताक में है कि ये लोग अपने रोज़ाना की बातचीत में कभी न कभी तो यह उगल ही देंगे कि नसीम जिस जगह रखे गये हैं वह नैनीताल के आसपास आखिर कौनसा स्थान है। शकूर का ख़याल यह था कि अग़न साहब की रखेल और उस गिरोह की एक सदस्य सबिहा इस रहस्य से परिचित होगी। सम्भव है कि वह कभी कुछ पता दे, इसीलिए शकूर ने अपनी पत्नी को वहाँ छोड़ दिया है। इन परिस्थितियों-वश मैं चाहता था कि कुछ दिन और इन्तज़ार कर लिया जाता।"

एक मोटर के ठहरने की आवाज़ पर तीनों का ध्यान उधर खिंच गया। उसी समय सलमा अन्सारी ने कमरे में प्रवेश करके कहा—"शुक्र है आप लोग मिले तो सही।"

मुनीर ने कहा—"अभी घर से सूचना आई थी कि आप संभवतः ग़रीब-खाने पर भी तशरीफ़ ले गई थीं।"

सलमा ने कहा—"हुज़ूर। दरे-दौलत पर चौथी मर्तबा हाज़िरी देकर आ

* खोज निकालना।

रही हूँ।"

आफ़ताब बोले—"ख़ैरियत तो है ?"

सलमा ने कहा—"एक अमानत लिये-लिये सुबह् से परेशान फिर रही हूँ। ग़ज़ाला और नाहीद से मालूम हुआ कि उनको भी आपका कोई पता नहीं।"

आफ़ताब ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा—"ग़ज़ाला और नाहीद से मालूम हुआ ? इसका मतलब यह हुआ कि आप वहाँ भी हो आईं।"

सलमा बोली—"वहाँ हो आई, सबसे मिल आई, चाय पी आई, और उन दोनों को बता आई ताकि अगर आप लोग मुझको न मिल सकें तो उनके द्वारा आपको यह सूचना मिल जाए कि मुझको आपकी सख्त तलाश है।"

मुनीर ने कहा—"बात क्या है आख़िर ?"

सलमा ने कहा—"नसीम साहब के सम्बन्ध में कुछ बातचीत करनी थी। मैं सुबह ही तो नैनीताल से आई हूँ और दिनभर आप लोगों को तलाश करने के चक्कर में रही।"

आनन्द बोला—"बग़ैर किसी प्रकार की भूमिका के यह बातचीत पहले कर लीजिये।"

तीनों दत्त-चित्त होकर सुनने लगे और सलमा ने आदि से अन्त तक सम्पूर्ण घटना वर्णन करनी शुरू कर दी। मुनीर के मुख पर प्रसन्नता की लहर दौड़ते-दौड़ते आख़िर मुसकराहट बन गई। उसने ख़ुशी के मारे एक दम खड़े होकर कहा—"बस अब फ़तह है। ख़ैर इस फतह का सेहरा सलमा साहिबा के लिए है। मैं केवल इतना ही मालूम करना चाहता था कि वह जगह नैनीताल में किस तरफ़ है। कुछ उसका पता चलता तो हाथ-पैर भी मारे जाते।"

आफ़ताब ने कहा—"तो बस इतना ही मालूम हो जाना तुम्हारे ख़याल में काफ़ी है ?"

सलमा ने कहा—"मेरे विचार में इतना मालूम हो जाने के बाद भी पुलिस के लिए बहुत बड़ा काम बाक़ी रह जाता है। वह जगह निश्चय ही आसानी से समझ में आने वाली नहीं है। मैं कह दो

एक व्यक्ति को वहाँ देखा और अभी वह शायद, मालूम नहीं कोई जादूई रास्ता बनाया है इन कमबख्तों ने, या क्या तरकीब कर रखी है ? फिर भी उस स्थान तक पहुंचने का रास्ता उसी जगह कहीं-न-कहीं है जहाँ नसीम साहब को रखा गया है।"

मुनीर ने कहा—"यह सब कुछ सही है परन्तु अब तक तो हमको यही नहीं मालूम था कि नैनीताल के आसपास आखिर वह जगह है कहाँ ? जिस प्रकार अचानक इतना मालूम हो गया है उसी तरह मालिक ने चाहा आगे भी सब कुछ मालूम हो जाएगा। परन्तु सलमा साहिबा वास्तविकता तो यह है कि आपकी शान में कसीदा[1] कहना चाहिए।"

अब आनन्द को भी अपनी भूली हुई विशेषताएं याद आईं। मैं अब तक यह समझा करता था—

'कहते हैं जिसको इश्क
खलल है दिमाग़ का।'

मगर मालूम हुआ कि अब तक योनि बदल-बदल कर कैस और पहाड़ पैदा हो रहे हैं।"

सलमा ने कहा—खयाल तो आपका सही है परन्तु वास्तविकता कुछ और है। किन्तु इन दिमाग़ी मूर्खता का मैं इलाज कर चुकी हूँ और नसीम साहब अब मेरे भाई बन चुके हैं।"

आनन्द ने कहा—"खूब, खूब। यानी इस भाईचारे की हमको खबर ही नहीं हुई ? मगर साहब यह उल्टी बात है कि इश्को-मुहब्बत की शुरुआत इसी भाईचारे से होती है और अन्त में भाई कुछ और बन जाया करते हैं। मगर मौलाना हाली[2] ने मिस्र में एक कुआं 'चाह यूसुफ़' नाम का देखा है। जिसमें से निरन्तर ये आवाजें आया करती थीं कि—

'दोस्त यहाँ थोड़े हैं मगर भाई बहुत।'

तो मानो दोस्ती की विशेषताओं को छोड़कर आपने बिरादरी की साधारणता को ग्रहण कर लिया है।"

---

[1] प्रशंसा करना। [2] उर्दू के कवि।

सलमा ने तंग आकर कहा—"आनन्द साहब ! यह जिक्र इन्शा अल्लाह उस वक्त छिड़ेगा जब आपको दाँत-तोड़ जवाब देने वाले नसीम भाई मौजूद हों, फिलहाल अपनी पूरी तवज्जुह नसीम साहब की रिहाई की तरफ रखना चाहते हैं।

आनन्द ने कहा—"यूसुफ गुम गश्ता बाज आयद लकवगाँ गममखोर।"†

आफताब ने कहा—"क्यों तुम्हारी शामत आई है। अगर हिन्दी-प्रेमियों ने सुन लिया कि तुम ईरानी ज़बान बोलते हो तो वे नाराज़ होंगे।"

आनन्द ने कहा—"तो आपके विचार से उर्दू और फारसी पाकिस्तानी भाषाएँ हैं?"

मुनीर ने कहा—"फारसी तो खैर नहीं, मगर उर्दू के बारे में कुछ लोगों का ऐसा ही ख़याल है।"

सलमा ने कहा—"होगा, यह भाषाओं का झंझट बाद में सुलझा लीजियेगा इस वक्त तो यह बताइये कि जो खोज मैंने की है उसकी रोशनी में अब आप लोगों का प्रोग्राम क्या है?"

मुनीर ने कहा—"मैं उस प्रोग्राम के सम्बन्ध में कल सुबह बता सकता हूँ। आज मुझको किसी-न-किसी तरह शकूर से मिलना है और मैं उसको भी आपकी कामयाबी की सूचना पहुँचाना चाहता हूँ। हममें से किसी को भी एक-दूसरे के कामों से बेखबर न रहना चाहिए।"

आनन्द ने कहा—"मगर क्या तुम उस जगह जिसका पता सलमा साहिबा दे रही हैं, खुल्लम-खुल्ला छापा मारोगे?"

मुनीर ने कहा—"हज़रत ये फ़ारसी के मिसरे नहीं हैं जो आसानी से आप बोल दिया करते हैं यह है खोज निकालने की कला। इसमें अगर आप अपनी टाँग न अड़ाएँ तो अच्छा है, वैसे आप बड़े हैं आपको अधिकार है।"

आनन्द ने कहा—"बड़े होंगे आप और आपके बड़े। एक अविवाहित नौजवान के सम्बन्ध में अगर आपने बुजुर्गी का प्रोपेगन्डा शुरू कर दिया तो कोई अपनी लड़की भी न देगा। मेरा मतलब यह था कि आखिर अब करना

†अगर सच्ची लगन हो तो खोया हुआ प्यार ज़रूर मिलेगा।

क्या है तुमको ?"

फ़ाक़ताव ने कहा—"बता तो चुके हैं वह, कि शकूर से बात करने के बाद कोई फ़ैसला हो सकता है।

आनन्द ने कहा—यह शकूर तुम्हारे आई० जी० तो नहीं हैं ? बड़ा विश्वास शकूर की मुख़बरी पर ?"

मुनीर ने कहा—"ख़ैर वह विश्वास के योग्य काम ही कर रहा है। मेरा मतलब यह है कि उससे बात कर लूँ तो फ़ैसला करूँ कि हमको उस जगह किस तरह पहुँचना चाहिये। मैं उस जगह खुल्लम-खुल्ला जाना उचित ही नहीं बल्कि अत्यन्त हानिप्रद समझता हूँ। वहाँ तो बहुत होशियारी के साथ अपनी तमाम पुलिसयत को छिपाकर काम करना पड़ेगा। जाने क्या-क्या भेष बदलना पड़े और किस-किस तरफ़ नज़र रखनी पड़े।"

आनन्द ने कहा—'यही मैं पूछना चाहता था इसलिए कि मुझको एक बहुत कीमती मशवरा देना था इस बारे में।"

मुनीर ने कहा—"आपका मशवरा बग़ैर सुने हुए कबूल करने से इनकार है।"

सलमा ने कहा—"सुन तो लीजिये शायद कोई फ़ायदे की बात इत्तफ़ाक से कह जाएँ।"

आनन्द ने घूरकर सलमा को देखते हुए कहा—"जी ? क्या मतलब ? यानी मैं इत्तफ़ाक से फ़ायदे की बात कह सकता हूँ। मगर ठीक है। आप हैं औरत और औरत को प्रोफेसर शहीर हमेशा अक्ल का दुश्मन कहा करते थे।"

सलमा ने कहा—"ख़ैर, यह आपने ग़दर से पहिले की बात कही है। जब औरत वास्तव में अक्ल की दुश्मन हुआ करती थी और मर्दों ने अक्ल का दुश्मन होना शुरू किया था।"

मुनीर ने ठहाका लगाकर कहा—"बस आनन्द बस, अब मान लो कि सलमा साहिबा ने ऐतिहासिक हवाले देकर खूब चिपकाई है। हाँ तो क्या मशवरा दे रहे थे तुम ?"

आनन्द ने कहा—"मशवरे का मतलब यह नहीं होता कि वह मान ही

लिया जाए।"

मुनीर ने कहा - "मैं आपका नानफ़र्ज़ो रह चुका हूँ और इतना ही मैंने भी पढ़ा है जितना आप पढ़ चुके हैं। मनवरे के मानी समझाने की कोशिश न कीजिये बल्कि जो कुछ कहना हो कहिये।"

आनन्द ने कहा—"बात यह है कि मैं उस बदमाश गिरोह के लिए बिलकुल नया आदमी हूँ। मुझको अव्वल तो कोई पहचानता नहीं, दूसरे सूरत से भी कुछ गड़रिया ही मालूम होता हूँ। अगर मुझको बकरियाँ चराने वाले के कपड़े पहनाकर, एक लाठी हाथ में देकर कुछ बकरियों के साथ उस जगह छोड़ दिया जाए तो मैं वहाँ ठहर भी सकता हूँ और किसी को मुझ पर शुबह नहीं हो सकता कि व्यक्ति यहाँ क्यों मौजूद है।"

मुनीर ने संभल कर बैठते हुए कहा—"तरकीब तो दोस्त ने बहुत कामयाब बताई है। चाहे तुमको गड़रिया बनाया जाए या किसी और को, मगर यह तय है कि गड़रिया बनाया जरूर जाएगा। यह ठीक है कि सिर्फ गड़रिया ही वहाँ इधर-उधर घूम सकता है या फिर लकड़ियाँ काटने वाला वरना उस वीरान जगह किसी को जाने की जरूरत ही क्या है।"

सलमा ने कहा—"आपने आशा के प्रतिकूल ऐसी तरकीब बताई है।"

आनन्द ने कहा—"आशा के प्रतिकूल ? हालांकि मैं प्रायः यह सोचा करता हूँ कि अगर मैं आप हजरात के साथ न रहूं तो क्या हाल हो आप लोगों का ? मैं जरा-सा कश्मीर चला गया था बस आप लोग इतनी बड़ी बात कर बैठे। और वहाँ भी इसीलिए गया था कि अलामा इकबाल का यह शेर मेरी नजर से गुजर गया था कि—

लाजिम है दिल के साथ रहे पासबान† अक्ल।
लेकिन कभी-कभी उसे तन्हा‡ भी छोड़ दे॥

मैंने कहा आओ जरा तन्हा छोड़ कर तो देखूँ क्या होता है ?"

आफताब ने कहा—"मानो आप पासबाँ-अक्ल हैं।"

मुनीर ने कहा—"शुगर हैं बेचारे। मूर्खता के आवेश में अपने को अक्ल-

† साथी ‡ अकेला।

मन्द ही समझने लगे।"

सलमा ने कहा—"मेरी आँखों के सामने आनन्द साहब की वह तसवीर घूम रही है जब ये गडरिया बन कर बकरियाँ चराया करेंगे।"

आनन्द ने कहा—"आपकी क्या मेरी निगाहों के सामने अपनी वह तस्वीर खुद मौजूद है। अगर बिलकुल गड़रिया न मालूम हूँ तो कहिये।"

आफताब ने कहा—"खैर, तुम्हारे बहरूप, पर तो मुझको पूर्ण विश्वास है। फ़ैन्सी ड्रेस बाल में 'कन मैलिए' का स्वांग ऐसा रचा था कि कोई भी इस ज़ालिम के सामने न ठहर सका।"

आनन्द ने कहा—"उसमें फिर भी कुछ कमी थी मगर गड़रिया तो मैं ऐसा बनूँगा कि बस देखियेगा।"

मुनीर ने कहा—"नक्काल तो खैर आप हैं ही अव्वल दर्जे के, मुझको उम्मीद है कि आप यह भूमिका निभा ले जाएँगे। मुझे तो साहब अब पूरा यकीन हो गया है कि इन्शा अल्लाह हम लोग बहुत ही जल्दी उन बदमाशों को मात देंगे। बात यह है कि हालात कुछ स्वयं ही हमारे सहायक बनते जा रहे हैं।"

आफताब ने कहा—"भई खुदा करे ऐसा ही हो। नवाब रफअत साहब बहादुर और उनसे भी बढ़कर ग़ज़ाला की हालत वाकई नहीं देखी जाती।"

आनन्द ने कहा—"देखी नहीं जाती, क्या मतलब ? क्या ग़ज़ाला आप से परदा नहीं करतीं ?"

आफताब ने कहा—"नहीं भाई उस ग़रीब ने पर्दा बिल्कुल उठा दिया है। बिलकुल से मतलब यह है कि मुझसे बिलकुल उठा दिया है।"

नौकर ने बीच की मेज़ पर चाए लगा दी और ये सब उस बातचीत के साथ-साथ इस तरफ भी अपने ध्यान को खींच लाए।

१०

जिस दिन से नवाब जहानदार मिर्ज़ा साहब और तिवारी के बीच नसीम ने सुलह कराई थी नवाब साहब के ताल्लुकात यूँ तो तिवारी से बहुत ही अच्छे थे मगर कभी-कभी नवाब साहब ज़िक्र ही ऐसा छेड़ देते थे कि तिवारी की स्थिति बहुत ही नाजुक हो जाती थी। उदाहरणार्थ—तिवारी से पूछना कि जब तुम स्वभाव से इतने अच्छे व्यक्ति हो तो इतने बुरे क्यों बने हुए हो? मालूम नहीं इस प्रकार के सवालों के जवाब क्या हो सकते हैं। फ़र्ज़ कर लीजिये कि तिवारी इसके जवाब में यह कहता कि जब आप में बुरे बनने के चिन्ह विद्यमान हैं तो आप व्यर्थ में अच्छे क्यों बने हुए हैं। इस जवाब से प्रकट है कि नवाब साहब मौन रह जाते और इस जवाब को बहुत ही विचित्र समझते। अनुमानतः यही हाल तिवारी का हो जाता था जब नवाब साहब उससे यह सवाल करते थे। कोई व्यक्ति अपने दृष्टिकोण का दूसरे को अनुगामी बना सके तो उसको पैगम्बर न भी समझा जाए तो भी वली अल्लाह का दर्जा तो ज़रूर दिया जाता है। मगर तिवारी न पैगम्बरी का दावा करना चाहता था न वली अल्लाह बनने में उसको अपने वर्तमान मनोरंजनों से अधिक कोई लाभ नज़र आता था। यद्यपि खुदा को ढूँढने में एक अल्लाह के प्यारे को जितनी मेहनत करनी पड़ती है उससे कहीं ज्यादा तिवारी ने शैतान की तलाश में की थी। और अब शैतान को पाकर वह जान की बाज़ी लगाकर उसका दामन थामे हुए था। प्रत्येक अल्लाह के प्यारे के सम्बन्ध में यह तो नहीं कहा जा सकता कि वह खुदा को जानता भी है। परन्तु तिवारी ने सिद्ध कर दिया था कि वह शैतान को भी प्राप्त कर चुका है। इस में [illegible]

कि वह बहुत मिलनसार, सभ्य, निहायत हँसमुख, अति तीक्ष्ण बुद्धि और दिल से दर्द वालों का हमदर्द भी था। मगर इसके साथ-साथ जुल्म उसके कर्त्तव्य में सम्मिलित था। सीना ज़ोरी के लिए यह मजबूर था। कत्ल और गिरफ्तारी उसका पेशा ही था। और कज़्ज़ाकी को वह अपनी कला समझता था। नसीम को इतने दिनों तक यहाँ रहने के बाद मालूम हो चुका था कि वास्तव में बदमाशों के उस गिरोह का सबसे बड़ा सरदार वह खुद ही था। और यह अग्गन साहब या दुलारे मिर्ज़ा वगैरा उसके एजेन्ट थे और इस प्रकार के भगवान् जाने कितने एजेन्ट उसके मातहात होने पर गौरव प्रकट करते थे। उसके इन एजेन्टों का एक जाल लगभग तमाम प्रान्त में फैला हुआ था और इस बिजनेस में उन सबका पर्याप्त भाग था। उसका शासन इतना पूर्ण और संगठित था कि वह उस खोह में बैठा हुआ हुकूमत कर रहा था। कभी-कभी इस तरह दौरे पर चला जाता जैसे कोई बहुत बड़ा अफसर अपने मातहतों के काम की जाँच के लिए चला जाए। उसने मालिक जाने कितने रईसों को अपने एक संकेत से हटाकर अपने ही आदमियों को रईस बनवा दिया था। एक कलाकार के नाते उसको इसी में आनन्द प्राप्त होता था कि हकदार को हक न मिले और अनुचित प्रकार की बेईमानी सफलता प्राप्त करके कानून की दृष्टि में आपत्ति योग्य न समझी जाए। प्रकट है कि उसको सुलेमान कदर से कोई दिलचस्पी न थी मगर नवाब फलक रफअत की दौलत अपनाने के लिए उसने अग्गन साहब और दुलारे मिर्ज़ा को मालिक जाने कब से पीछे लगा रखा था, जो धीरे-धीरे सुलेमान कदर को इस राह पर लगा रहे थे जिस पर वह आजकल चल रहे थे। आखिरकार उन दोनों की कोशिशों से सुलेमान कदर ने चचा के विरोध को अपने लिए जरूरी समझा और मुकदमे तक नौबत आ गई। परन्तु अभी तिवारी को वह सफलता प्राप्त न हुई थी जो वह चाहता था। मतलब तो यह था कि सुलेमान कदर अपने चचा की दौलत पर कब्जा करके खुद उसके कब्जे में आ जाए। कुछ दौलत तो इस मुकदमे-बाज़ी के सिल-सिले में अग्गन साहब और दुलारे मिर्ज़ा के हाथों तिवारी तक पहुँच रही थी बाकी दौलत उस महाजन के हाथों तिवारी तक पहुँचने वाली थी जो वास्तव

में तिवारी-ग्रुप का आदमी था और जिससे सुलेमान अन्दर अत्यधिक कर्ज ले रहे थे। उस महाजन पर ही क्या निर्भर है, तिवारी के तो बैंक तक चुने हुए थे जिनमें इस प्रकार का धाराप्रवाह लेन-देन होता था और इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के साधनों से रुपया खिचकर तिवारी के पास आ रहा था। जिसने इस खोह में रहने वाले लुटेरे को इतना बड़ा आदमी बना दिया था कि जब वह खोह से निकल कर किसी बड़े शहर में किसी बहुत बड़े होटल में ठहरता था तो उसकी शान देखने वाले उसको राजा समझते थे। उन बातों में से बहुत-सी बातें नसीम को मालूम हो चुकी थी और बहुत-सी अब तक रहस्य बनी हुई थी, जिनको मालूम करने की नसीम ने कभी कोशिश नहीं की। परन्तु जहानदार मिर्जा साहब को हर बात की एक खोज थी और मालूम नहीं क्यों आप खोह की नीति में बेहद दिलचस्पी लेना चाहते थे। नसीम ने अपने कमरे से निकल कर जो उसी खोह में पत्थरों को बहुत खूबसूरती के साथ काटकर बनाया गया था, देखा कि जहानदार मिर्जा साहब एक पहाड़ी को समीप बिठाए हुए अपनी जिज्ञासा की पूर्ति कर रहे हैं।

"यह तो मैं नहीं मान सकता कि कुछ तुम्हें मालूम ही नहीं है यह और बात है कि तू छिपा रहा है। आखिर यह इस खोह के अन्दर अपना पावर हाउस बनाकर बिजली का इन्तजाम करना, पत्थरों को काट-काटकर खोह के अन्दर ही अन्दर पूरी बस्ती बसा देना, एक से एक कमरा है, हर कमरे में आला दर्जे का फर्नीचर है, यह सब काम तो बिलकुल राजाई ठाठ है। आखिर इन लुटेरों ने यह इन्तजाम क्यों कर लिया ?"

नसीम ने वार्तालाप सुनते ही जल्दी-से-जल्दी समीप आकर कहा—"मुझे आप से बार-बार यह बात कहते हुए शर्म आती है कि आप इन मामलात में आखिर क्यों उलझ जाते हैं, जिन से आपको कोई दिलचस्पी न होनी चाहिये। अब यही बातें अगर तिवारी सुनेंगे तो उनको अफसोस होगा कि वह तो हम लोगों के साथ सज्जनता का व्यवहार कर रहे हैं और हम उनके वे रहस्य मालूम करने की चिन्ता में हैं जो वह हम से छिपाना चाहते हैं।"

जहानदार मिर्जा साहब ने कहा—"नहीं खैर मैं किसी का रहस्य मालू

क्यों मालूम करना परन्तु मेरी अक्ल तो वाकई काम नहीं करती कि यह कारखाना है क्या ?"

नसीम ने गम्भीरतापूर्वक एक वार फिर समझाने का प्रयत्न किया—"यहाँ हम दोनों को वेहद एहतियात की जरूरत है और एहतियात कुछ मुश्किल भी नहीं। आप ही वताइये दुनिया के किसी कैदी के साथ इस प्रकार का सलूक किया जाता है जो तिवारी हम लोगों के साथ कर रहे हैं ? जिस आदर और सम्मान के साथ वह आपके सामने आते हैं उसकी वास्तव में उनको कोई जरूरत नहीं। जिस तरह वे हमको मेहमान समझकर सत्कार में व्यस्त रहते हैं यह काम वास्तव में उनका नहीं है। हम उनके कैदी हैं और हमको उनसे हर सम्भव कष्ट की संभावना रखना चाहिये प्रतिकूल इसके कि वह आँखें विछाता है। आतिथ्य-सत्कार के कर्तव्य की पूर्ति करता है। हमारे आराम की फ़िक्र में हर वक्त रहता है। और इन तमाम कृपा के वदले में हम से केवल यह चाहता है कि हम उसके शान्तिप्रिय दोस्त वनकर रहें। एक तो मुक्त ... का व्यर्थ प्रयत्न न करें दूसरे व्यर्थ में उसके मामलात में अपने को उल- ... का प्रयत्न न करें। मैं खुद भी यहाँ की स्थिति का इतना अन्दाजा तो कर ही चुका हूँ जव तक कि मुक्त कराने का प्रयत्न करना उस वक्त तक सर्वथा वेकार है जव तक कि उससे वड़ी ताकत इन लोगों को पराजित करके इन लोगों से हक को छीन न ले। परन्तु यह वात हमारी समझ में नहीं आती अतः वही मसल मशहूर है कि—

"मौत को भी जिन्दगी कहकर गवारा कीजिये

जीवन के उस असह्य समय को जितना सुखद वनाया जा सकता है उसका इन्तजाम तो खुद तिवारी ने कर दिया है, अव उन सुखों को फिर मुसीवत वनाना या सुख ही रहने देना वास्तव में हमारे हाथ में है।"

जहानदार मिर्जा ने नसीम को समझाते हुए कहा—वेटा, तुम शायद खफ़ा हो गये ? मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे जो मैं उस पहाड़ी से ये वातें करने लगा। भविष्य में इसका भी खयाल रखूँगा।"

नसीम ने कहा—"आपका ... के लि... ...इब्रेरी मौजूद है।

आपके कमरे में उसने रेडियो लगवा दिया है। बात करने को जी चाहे, मैं हाज़िर हूँ, बल्कि खुद तिवारी मौजूद हैं। आप यही सवाल अगर तिवारी से करते तो उसमें कोई आपत्ति न थी मगर यहाँ के नौकरों से तो हरगिज़ हर किस्म की बातें न करना चाहिये।"

पहाड़ी ने एक ठहाका लगाकर कहा—"मिस्टर नसीम, तुम वास्तव में विचित्र मनुष्य हो मैंने तुम को हर इम्तिहान में कामयाब पाया। जब भी तुमको कसौटी पर कसा गया कुन्दन ही निकले।"

नसीम ने विस्मयपूर्वक पहाड़ की ओर घूर कर कहा—"कौन, तिवारी? कमाल है साहब। मेरे फ़रिश्ते भी तुम को पहचान नहीं सकते। रूप बदलने में कमाल की है तुम्हारी यह कला।"

जहांतदार मिर्ज़ा ने विस्मय की प्रतिमा बन चुकने के बाद कहा—"हैरत है साहब, ताज्जुब है साहब! मैं इतनी देर से बातें कर रहा हूँ और मुझे एक मिनट के लिए भी यह गुमान न हो सका कि यह पहाड़ी के अतिरिक्त कोई और भी हो सकते हैं।"

तिवारी ने अब बजाए फर्श पर बैठने के कुर्सी पर बैठते हुए कहा—"नसीम साहब यह वास्तविकता है कि अगर मैं भी नवाब साहब को समझाता तो शायद इतना न कह सकता जितना आपने मेरी वकालत मे कहा है। और अगर आप यकीन करें तो मुझको आज पहली बार इस बात पर शर्मिन्दगी महसूस हुई है कि आपका जैसा आदमी मेरी कैद में क्यों है मगर मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि एक शरीफ़ का वादा तो ख़ैर अटल होना ही चाहिए एक बदमाश का वादा भी सुन लीजिए कि मेरे या मेरे आदमियों के हाथों कभी तकलीफ़ न पहुँचने पाएगी। बल्कि अगर भविष्य में भी आपकी ज़िन्दगी में भगवान न करे आप पर कोई वक्त पड़ा तो आप तिवारी को अपना गुलाम पायेंगे। इस वक्त सहसा मेरा दिल चाहा कि मैं आपको हर कुर्बानी देकर मुक्त कर दूँ। परन्तु जिस सिलसिले में आप यहाँ मौजूद हैं वह मामला इस वक्त इतना पेचीदा है कि अभी कुछ दिन मैं शायद ऐसा न कर सकूँ।"

नसीम ने बात काटकर कहा—"आप भावुकता में इस वक्त इतने बह

रहे हैं कि मैं इस विषय में आपको कोई ऐसा वादा करने की इजाज़त खुद भी न दूंगा, जिससे आपको कोई नुकसान पहुँचे या किसी दिक्कत का सामना हो।"

नवाब साहब ने कहा—"बेटा मेरा अभी इस बातचीत से सिवाय इसके कोई मतलब न था कि—"

तिवारी ने हाथ जोड़कर कहा—"महामना! खुदा के वास्ते आप कोई सफ़ाई पेश न करें, मेरे लिए आप इस रिश्ते से अत्यन्त पूज्य हैं कि नसीम साहब के आप बड़े हैं। मैं जानता हूँ कि आप जो बात कह रहे हैं उसमें आपकी नीयत ठीक थी, वह वार्तालाप कितना ही ग़लत क्यों न हों। बकौल नसीम साहब के यदि यह बात-चीत आप मुझसे करते तो इसमें कोई आपत्ति ही न थी। यहाँ के नौकरों से भी बात-चीत करने में कोई नुकसान नहीं है। वे कभी आपको मेरा कोई रहस्य मरते दम तक नहीं बता सकते। हाँ, आपके लिए यह राय ज़रूर कायम कर सकते हैं कि आप आखिर ये बातें क्यों पूछ रहे हैं।

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"नहीं मियाँ, मैं अब इन्शा अल्लाह इस रे में पूरी एहतियात बरतूंगा।"

तिवारी ने कहा—"अच्छा अब मैं आपके सवालों का जवाब देना चाहता हूँ। वास्तव में मेरी जमाअत में हर किस्म के लोग हैं। हर फ़न और हर पेशे के लोगों को मैंने जमा करने की कोशिश की है। मैंने डकैती क्यों शुरू की, यह एक लम्बी दास्तान है और वह यह है कि—मेरे स्वर्गीय पिता अपने समय के बड़े नामी-ग्रामी डाकू थे। मुझको मेरे पिता ने इस बुरे काम से अलग ही रखना चाहा, और इसलिए उच्च शिक्षा दिलवाई। मेरा स्वयं भी यह इरादा न था मगर जब पिता परवान चढ़े, यानी उनको फाँसी हुई तो मेरे लिए सिवाय इसके कोई चारा न रहा कि सज्जन मनुष्यों का जीवन व्यतीत करते रहने पर भी डाकू का बेटा कहलाने की बजाय खुद ही डाकू क्यों न बन जाऊँ। मैं शिक्षित था। मैंने इस जुर्म को कला का रूप देना चाहा और शुक्र है कि मैं इस हद तक कामयाब हो गया कि अब मेरा प्रधान कार्यालय तो यह है और मेरी शाखाएँ तमाम सूबे में फैली हुई हैं। मैंने इन तमाम बटमारों, लुटेरों को,

इन तमाम बदमाशों को, इन तमाम चोरों और उचक्कों को, जो छोटे किस्म की चोरियाँ और डकैतियाँ करते फिरते थे एक कान्फ्रेन्स बुलाकर अपनी स्कीम उनके सामने रख दी। वे जानते थे कि मैं किस बाप का बेटा हूँ और मुझमें किस तक दृढ़ता है। सबने सहमत होकर मुझे अपना सरदार चुन लिया। मैंने उनको कुछ ही दिनों में अपनी स्कीम की हर बारीकी को भली-भाँति समझा दिया। कुछ दिनो तक खुद ट्रेनिंग दी और आखिरकार मेरा काम धीरे-धीरे सुव्यवस्थित होता गया और मेरी जमाअत बढती गई। मैंने अपने आदमियों की मदद से पांच साल की दिन-रात कोशिश के बाद इस स्थान के निर्माण को पूर्णता तक पहुंचाया और इसको पहाड़ के अन्दर जितना आराम-देह पूरा और साथ-ही-साथ सुरक्षित बना सकता था बनाया। अब यह जगह जमाअत में नये आने वालों के लिए ट्रेनिंग देने के काम भी आती है। हमारी बहुत-सी कलाओं का केन्द्र भी यही है। बहुत से कौशलों को इसी जगह हम चरम-सीमा को पहुंचाते हैं। यह हमारा निवास-स्थान भी है, और आप-जैसे मेहमानों का अतिथि-गृह भी तथा द्रोहियों का कैदखाना भी। हमारे पास रुपये की कोई कमी नही। हम इस जगह सुख की हरेक सामग्री जुटा सकते हैं। और पहाड़ी के आँचल मे यह छोटी-सी दुनिया बसाए हुए हैं। आप सवाल कर सकते हैं जब रुपये की कोई कमी नहीं तो फिर अपराध जारी क्यो है, तौबा करके भले मनुष्य क्यो नहीं बन जाते ? इसका जवाब यह है कि मैंने अपराधियों के सुधार उनकी उन्नति और भलाई का जो बीडा उठाया है इसके बाद मेरे लिए यह नामुमकिन है कि मैं मुह मोड़ जाऊँ। मेरे इस इस्टीट्यूशन का काम अभी पूरा नही हुआ है। जिस वक्त तक जलील किस्म की चोरियाँ और सस्ती किस्म की डकैतियाँ करने वाले चोर और डाकू मौजूद हैं जो इस स्थायी कला को तबाह कर रहे हैं उस वक्त तक इस सिलसिले को खत्म नही कर सकता। दुनिया के प्रत्येक कला-कौशल ने अँगड़ाई ली है तो चोरी और डकैती की कला को भी जागृत होना चाहिए। संक्षिप्त यह कि मैंने इस जुर्म को आर्ट का दर्जा दे रखा है और अब इसी कला की सेवा के लिए अपना जीवन विसर्जन कर दिया है।"

नसीम ने मुसकरा कर कहा—"बात चाहे कितनी ही माकूल क्यों न हो परन्तु इस अजीब बातों पर हँसी आती है कि चोरी और कलाएँ ? डकैती और आर्ट ? और इस में सबसे ज्यादा हँसी की बात यह मालूम होती है कि आप इस कला की इस तरह खिदमत कर रहे हैं जैसे वह कोई लगन है। जनाब की कोशिश में जैसे यह भी कोई बड़ा जाति का काम है।"

तिवारी ने गम्भीरता-पूर्वक कहा—"कौमी काम तो है ही। क्या आपके विचार से चोरों और डाकुओं की कौम कोई कौम ही नहीं। अच्छी बात है मैं आपको अपनी जमाअत के सालाना जलसे में सम्मिलित करूँगा। जो सौभाग्य-वश इसी हफ्ते में होने वाला है। उस वक्त आपको अन्दाज़ा होगा कि चोरी कितनी बड़ी कला है, कितना बड़ा फ़न है। और डकैती की राजनीति कितना महत्व रखती है। हमारी समस्याएँ, हमारे हालात, हमारी माँगें और हमारे तकाज़े आपकी किसी बड़ी-से-बड़ी राजनीतिक पार्टी की समस्याओं, हालात, माँगों और तकाज़ों से कम नहीं हैं।"

नसीम ने कहा—',तो तय रहा कि इस सालाना जलसे में शामिल होने की दावत आप देंगे।"

तिवारी ने उठते हुए कहा—"नवाब साहब किवला, माफ़ कीजियेगा मैं इनको ज़रा अपने दफ़्तर तक ले जा रहा हूँ, कान्फ्रेन्स का दावतनामा देने।"

नसीम तिवारी के साथ चल दिया।

११

रूमी दरवाज़े के करीब सुनसान सड़क से ज़रा दूर हटकर एक झाड़ी में मुनीर की कार खड़ी थी और उस कार से थोड़ी ही दूरी पर घास पर मुनीर आफ़ताब और शकूर बातचीत में तल्लीन थे। मुनीर और आफ़ताब तो इसलिए गये थे कि सलमा से उनको जो कुछ मालूम हुआ था उसकी सूचना शकूर को दे दें, और शकूर इसलिए आये थे कि तलाशी के बाद जो घटना सुलेमान कदर के कैम्प में घटित हुई थी उसकी सूचना इन लोगों को पहुँचाएं। बातें वास्तव में दोनों की जरूरी थीं और दोनों अपनी-अपनी जगह समझ रहे थे कि हमारी सूचना अधिक महत्व रखती है।

मुनीर ने शकूर को कुछ वर्णन करने से रोकते हुए कहा—"अजी हज़रत हम वह खबर लाए हैं कि आप दंग रह जायेंगे।"

शकूर ने कहा—"मुमकिन है मगर मेरी खबरें ऐसी हैं कि मेरा ख़याल यह है कि आपको ख़ुद दंग होना पड़ेगा।"

आफ़ताब ने शकूर से कहा—"अच्छा तो पहले तुम ही सुनाओ।"

शकूर ने कहा—"गुस्ताख़ी तो जरूर है मगर इस वक्त उम्मीद है कि आप मुझको सिगरेट पीने की इजाज़त दे देंगे, ताकि मेरा हाफ़ज़ा‡ पूरा काम करता रहे और कोई जरूरी बात बताने से रह न जाए।"

मुनीर ने अपना सिगरेट-केस निकालते हुए कहा—"भैया, पुरानी मसल मशहूर है और वह भी फ़ारसी की। कि ताज़ीम कारीगरां माफ़†? तुम शौक से

‡ स्मरण-शक्ति। † लोक-व्यवहार कारीगरों को क्षम्य हैं।

सिगरेट पीयो।"

शकूर ने अदब के साथ सलाम करके सिगरेट लेते हुए कहा—"आपने जब से छापा मारा है होश-हवाँस गुम हैं। हमारे नकली नवाब साहब के लिए बेदमुश्क का काफी मात्रा में इस्तेमाल हो रहा है। अग़न साहब और दुलारे मिर्ज़ा सख्त परेशान हैं कि ऐसे घोड़े पर क्यों दाँव लगाया था जो हिनहिनाने की बजाए सीपूँ-सीपूँ करता है। दिलवर जान अपनी पूरी कोशिश इस बात में खर्च कर रही हैं कि नवाब साहब ज़रा हौसले से काम लें। मगर वह बार-बार यही कहते हैं कि मैं इस झगड़े में नहीं पड़ता, चचा अब्बू के पास जाकर कदमों पर गिर पड़ूँगा। वह अब भी मुझको माफ कर देंगे।"

आफताब ने कहा—"अच्छा यहाँ तक नौबत पहुँच चुकी है?"

शकूर बोला—"हुजूर नौबत तो इससे आगे पहुंच जाती, मगर अग़न साहब और दुलारे मिर्ज़ा ने उनको फिर डरा दिया कि अव्वल तो नवाब साहब आपको माफ ही नहीं करेंगे, और अगर वह तैयार भी हुए तो नसीम ऐसी चाल चल जाएगा कि आप फिर दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक दिये जाएँगे। फिर सबसे बड़ी बात यह है कि इस तरह मानो तमाम जालसाज़ी अग़वा करने की वारदातें और जितने जुर्म अब तक हुए हैं वे आप खुद अपने सिर ओढ़ लेंगे। पुलिस की ज़रा-सी धमकी में आकर अगर आपने इस पहले ही कदम में कमज़ोरी दिखाई तो हम सब पर जेल का फाटक खुला ही समझिये।"

मुनीर ने कहा—"छटे हुए बदमाश हैं ये लोग। फिर सुलेमान कदर साहब ने क्या प्रोग्राम बनाया?"

शकूर ने कहा—"वे आजकल प्रोग्राम बनाने के काबिल ही नहीं हैं। उनको इस बात का यकीन हो चुका है कि आप उनको छोड़ने वाले नहीं हैं। हर वक्त उनको पुलिस के भूत दिखाई देते हैं। रातों की नींद ग़ायब हो गई है। अब तो दिलवर जान उनको मशवरे दे रही हैं कि अगर दुश्मनों की तबीयत उचाट हो गई है और सेहत ठीक नहीं है तो आब-हवा तबदील करने के लिए या तो सलून चलिए या कुछ दिन नैनीताल चलकर रह आइये।"

मुनीर ने कहा—"अच्छा जनाब अगर आपकी सूचना इस प्रकार की है तो रहने दीजिये, इनको फिर बाद में सुनाइयेगा। पहले हमसे सुन लीजिए कि हमें सुराग लगाने में पचहत्तर फीसदी कामयाबी हासिल हो चुकी है।"

शकूर ने कहा—"बाकी पच्चीस भी आपने बेकार ही छोड़े। मगर मैं आपको एक बात बताए देता हूँ कि ऐसी सफलताओं के सपने अभी बहुत से नजर आयेंगे हमको तो वास्तविकता चाहिये। मुझको उन लोगों की बात-चीत से यह मालूम हो चुका है कि खोज लगाना इतना आसान नहीं है जितना समझा जा रहा है। इसी बात-चीत के बीच अगान साहब ने यहां तक तो कह दिया कि मान लीजिये कि पुलिस नैनीताल के रास्ते में उस जगह भी पहुँच गई जहाँ नसीम साहब कैद हैं तो भी उस किले में प्रवेश करना आसान नहीं है, जो उन लोगों ने वहाँ बना रखा है। बल्कि अगान साहब तो यहाँ तक कह रहे थे कि हम बहुत आसानी के साथ पुलिस को यह बताने के लिए तैयार हैं कि हमारा किला नैनीताल के रास्ते के उस स्थान के निकट है जहाँ से सड़क दो भागों में विभक्त हो जाती है। एक चली जाती है नैनीताल को, और सीधी सड़क भुवाली, रानीखेत और अलमोड़ा को जाती है।"

आफताब ने कहा—"लीजिये जनाब मुनीर साहब! हमारे शकूर मियाँ खुद भी वहाँ तक पहुँचे हुए हैं, जहाँ पहुंचना आप बहुत बड़ा काम समझ रहे हैं बल्कि अभी शायद इनको कुछ और भी कहना है।"

शकूर ने कहा—"जी हाँ अभी तो टीप का बन्द बाकी है। नवाब साहब ने कहा कि पुलिस गड़े मुर्दे तक उखाड़ लाई है कब्र से। इस पर अगान साहब ने कहा कि नवाब साहब गड़े मुर्दे उखाड़े जा सकते हैं मगर हम जिन्दों को ढूंढना आसान नहीं है। हमारे उस जमीन-दोज किले के सात दरवाजे हैं, और इनमें का सिर्फ एक दरवाजा खास तरकीब से एक दिन खुल सकता है दूसरे दिन नहीं खुल सकता। जो दरवाजा इतवार के दिन खुलेगा वह पीर के दिन किसी तरह नहीं खुल सकता पीर के दिन खुलने वाला दरवाजा दूसरा है। मंगल के दिन एक और दरवाजा खुलता है, और इसी तरह [illegible] का एक दरवाजा है। इन दरवाजों के नाम भी दिनों के नाम पर हैं।

ीरवार दरवाजा, मंगल दरवाजा, बुधवार दरवाजा इत्यादि। इसके अतिरिक्त उन दरवाजों को खोलने के लिए न ताकत काम में आती है न कोई मशीन काम कर सकती है, बल्कि ये दरवाजे केवल वही लोग खोल सकते हैं जिनको दरवाजा खोलने की वह खास तरकीब मालूम है जिसके बग़ैर दरवाज़ा खुल ही नहीं सकता। उन सातों दरवाज़ों के अन्दर इस किस्म की हथकड़ियां लगा दी गई हैं कि कोई अगर जरा भी ग़लती करे तो तुरन्त स्वयं गिरफ़्तार हो जाता है। दरवाजे के खुलते ही खोह के सशस्त्र व्यक्ति आने वाले का स्वागत करते हैं और उनसे किसी अजनबी का बच निकलना मुमकिन ही नहीं। सारांश यह कि खोह के अन्दर पहुंचना इनसान के बस में तो है नहीं, हां अगर कोई जिन्न हो तो दूसरी बात है।"

आफताब ने कहा—"यह आपने कोई जानकारी तो प्राप्त की नहीं है बल्कि मानो एक गोरखधन्धा मालूम किया है।"

मुनीर ने कहा—"इसी तरह गोरखधन्धे की पूर्ति भी किसी-न-किसी दिन ये मालूम कर लेंगे।"

शकूर ने कहा—"किसी-न-किसी दिन नही साहब, बहुत जल्द। बस आज ही कल में। बात यह हुई कि नवाब साहब खुद उसी गुत्थी में उलझ कर रह गए हैं और अग़ान साहब के पीछे पड़ गये कि मुझको या तो उस खोह की सैर कराओ वरना मैं समझूंगा कि यह सब किस्सा-कहानी है। इस पर अग़ान साहब के मुंह से निकल गया कि मैं किसी दिन सबिहा से खोह का नक्शा ले आऊंगा। यह बहुत ही खास चीज है और एक तावीज की शक्ल में खोह के तमाम सदस्यों के पास रहता है। उसी में दरवाज़ों का प्रोग्राम भी लिखा हुआ है और हर दरवाज़ा खोलने की अलग-अलग तरकीब भी। इस पर नवाब साहब ने कहा कि वह तावीज़ तुम्हारे पास क्यों नहीं है? तो अग़ान साहब ने जवाब दिया कि मैं खोह का मेम्बर नहीं हूं सबिहा बाकायदा मेम्बर है परन्तु इस बात की खबर उसकी भानजी दिलबर तक को नहीं है। अतः यदि आपने दिलबर पर यह प्रकट कर दिया कि मैंने आपको यह बता दिया है कि सबिहा मेम्बर है तो इसका नतीजा हम सबके लिए बुरा होगा।

अगर खामोशी और सब्र से काम लेंगे तो मौका पाकर मैं वह तावीज़ उड़ा लाऊँगा।"

आफताब ने कहा—"तो क्या नवाब सुलेमान कदर को यह मालूम हो चुका है कि सबिहा वास्तव में अग्गन साहब की रखैल है ?"

शकूर ने कहा—"अजी अग्गन साहब खुद सबिहा के रखैल हैं यह क्यों होती उस चिड़ीमार की रखैल। लेकिन किस्सा यह है कि अग्गन साहब नवाब साहब से यह झूठ बोल गए हैं कि वह स्वयं मेम्बर नहीं है। केवल यह सिद्ध करने के लिए कि इनको उन अपराध-वृत्ति व्यक्तियों से क्या सम्बन्ध।"

मुनीर ने कहा—"मगर उस चुग़द ने सबिहा को डकैत बनाकर नवाब सुलेमान कदर के दिल में यह कांटा क्यों उगा दिया कि उनकी दिलबर एक डकैत की भानजी है ?"

शकूर ने कहा—"इसमें भी उसकी पालिसी है। एक तरफ तो नवाब साहब को यह बताया कि खुद दिलबर को यह मालूम नहीं कि उसकी मौसी मेम्बर है यानी दिलबर उस अपराध-वृत्ति गिरोह से कोई ताल्लुक नहीं रखती दूसरे नवाब साहब पर रौब डालने के लिए यह बताया होगा कि दिलबर की मौसी ऐसे खतरनाक गिरोह से सम्बन्ध रखती है यानी अब यदि नवाब साहब ने दिलबर के साथ कोई ज्यादती की तो मौसी समझ लेगी। मगर इस वक्त तो नवाब साहब को सबसे बड़ी फिक्र आपकी है। वह डाकूओं से इतना नहीं डरते जितना पुलिस से दम निकलता है।"

मुनीर ने कहा—"अच्छा जनाब शकूर ! अब हमारा प्रोग्राम सुन लीजिये। आपके नसीम मियाँ के एक दोस्त हैं आनन्द साहब। वह इसके लिए तैयार हो गये हैं कि उस जगह जहाँ से नैनीताल को सड़क मुड़ी है और सीधी सड़क अलमोड़े को चली गई है, कल से बकरियां चराएंगे गड़रिये के भेस में।"

शकूर बोला—"मगर इसके लिए ज़रूरी है कि उनको कम-से-कम यह मालूम हो कि उस जगह के आसपास जो दरवाजा या रास्ता होगा उस खोह का, वह किस दिन खुलता होगा।"

मुनीर ने सलमा अन्सारी का तमाम किस्सा शुरू से आखिर तक शकूर को

सुनाने के बाद कहा—"मेरा खयाल यह है कि परसों था इतवार और परसों ही सलमा अन्सारी ने यह घटना देखी।"

आफ़ताब ने कहा—"जी नहीं, परसों तो यह आखिरी मर्तबा उस जगह का राज़ मालूम करने की कोशिश में गई थीं। जिस दिन वे लोग उस जगह के एक सीमित क्षेत्र में ग़ायब हुए हैं उसको तो आज पांच-छः रोज हो चुके हैं। फिर भी दिन का सही मालूम सल्मा ही को होगा उनसे पूछ लिया जाएगा।"

शकूर ने कहा—"बस उसी दिन, उसी जगह जाना चाहिए जिस दिन की वह घटना हो। इसलिए यह तो मालूम ही हो चुका है कि दरवाज़े सात हैं और हर दरवाज़ा एक निश्चित दिन खुलता है।"

मुनीर ने कहा—"मेरी राय में आनन्द को वहां गडरिये के भेष में भेजने में कोई नुकसान नहीं। उस वक्त तक तुम उस तावीज़ या उसकी नकल को प्राप्त करने की कोशिश करो।"

शकूर ने कहा—"हुज़ूर इस सिलसिले में मेरी घरवाली असल कोशिश करेगी। रह गया मैं, तो मुझसे यह कहने की ज़रूरत ही नहीं। मौका मिला तो वन्दा चूकने वाला हरगिज़ नहीं। अव्वल तो खुदा करे कि नवाब साहब को ये लोग नैनीताल की सैर को ले जाएं ताकि मैं भी नवाब साहब की कृपा से उस खोह को देख आऊं।"

मुनीर ने कहा—"जी बजा फ़रमाते हैं। वे लोग अब इतने गधे भी नहीं कि आपको भी ले जाएंगे खोह में।"

शकूर वोला—"हुज़ूर अगर वे गधे नहीं हैं तो फिर जो गधे हैं उनके विषय में भी मुझको शुबह है कि कहीं वे भी गधे न हों। मैंने कल रात ही इस काम की रूपरेखा शुरू कर दी है। नवाब साहब के पांव दवाते हुए मैंने एकान्त में अवसर पाकर नवाब साहब से कहा कि हुज़ूर अगर बुरा न मानें तो अर्ज़ करूं कि हुज़ूर आजकल इधर-उधर अकेले न आया-जाया करें। अग़न मिर्ज़ा और दुलारे मिर्ज़ा लाख दोस्त सही, मगर यह दुनिया है और खराब ज़माना आ लगा है। मुझे उन लोगों के तेवर अच्छे मालूम नहीं होते। इसीलिए मैं ज्यादातर हुज़ूर ही के पास रहता हूं कि अगर वक्त पड़े तो पसीने पर खून बहा

सकूं ।"

मुनीर ने कहा—"यह बात तुमने अच्छी नहीं की शकूर । इतने समझदार आदमी होकर आखिर धोखा खा गये । तुमको अपना पार्ट बिलकुल बेवकूफ बहरे का पेश करना है ।"

शकूर ने कहा—"मुमकिन है मैंने गलती की हो । समझ यों ही सी है । मगर इस नासमझी का नतीजा कुछ अच्छा ही हुआ । नवाब साहब ने हँसकर कहा, बेवकूफ हो तुम ! ये लोग मेरे घनिष्ठ दोस्त हैं । उनकी तरफ से इतमीनान रखो कि ये मुझको धोखा नहीं देंगे । मैंने कहा, 'यह तो मुझको भी मालूम है मगर हुजूर खता माफ, ये लोग ऐसे भी नहीं हैं कि अगर खुदा न करे कोई वक्त पड़ जाय तो ये अपने बचाव के मुकाबिले में आपके लिए सीना अड़ा दें ।' फिर भी मैं हुजूर को किसी के साथ अकेला नहीं छोड़ना चाहता, मेरा दिल डरता है । नवाब साहब ने मेरी पीठ पर हाथ फेर कर मुझको विश्वास दिलाते हुए कहा—'कि मियाँ शकूर, मुझको तुमसे यही उम्मीद है । मगर अगन साहब या दुलारे मिर्ज़ा के बारे में इस किस्म की बात अब औरों से न कहना ।'

मुनीर और आफताब दोनों ने शकूर को देर तक समझाया कि इस प्रकार की बातें लाभदायक सिद्ध न होंगी । तुम तो बस अलग-अलग ही रहो ताकि ये सब तुमको केवल निष्ठावान बेवकूफ और आज्ञापालक अहमक ही समझते रहें । इसी में हम सब का फायदा है । मगर तुमने अक्ल का जरा भी सिक्का जमाया तो दाल गलना मुश्किल हो जाएगा । शकूर ने भविष्य में इस गलती से दूर रहने का सच्चे दिल से वायदा किया और प्रोग्राम यह निश्चित हुआ कि सल्मा अन्सारी से मालूम करने के बाद आनन्द को गड़रिये के भेष में नैनीताल के रास्ते में छोड़ दिया जाए और इधर शकूर अपनी बीवी की सहायता से वह तावीज प्राप्त करने का प्रयत्न करे । आज के तीसरे दिन फिर ये लोग मिलकर मशवरा करेंगे ।

सुनाने के बाद कहा—"मेरा खयाल यह है कि परसों था इतवार और परसों ही सलमा अन्सारी ने यह घटना देखी।"

आफ़ताब ने कहा—"जी नहीं, परसों तो यह आखिरी मर्तबा उस जगह का राज़ मालूम करने की कोशिश में गई थीं। जिस दिन वे लोग उस जगह के एक सीमित क्षेत्र में ग़ायब हुए हैं उसको तो आज पांच-छः रोज़ हो चुके हैं। फिर भी दिन का सही मालूम सल्मा ही को होगा उनसे पूछ लिया जाएगा।"

शकूर ने कहा—"बस उसी दिन, उसी जगह जाना चाहिए जिस दिन की वह घटना हो। इसलिए यह तो मालूम ही हो चुका है कि दरवाज़े सात हैं और हर दरवाज़ा एक निश्चित दिन खुलता है।"

मुनीर ने कहा—"मेरी राय में आनन्द को वहाँ गडरिये के भेष में भेजने में कोई नुकसान नहीं। उस वक्त तक तुम उस तावीज़ या उसकी नकल को प्राप्त करने की कोशिश करो।"

शकूर ने कहा—"हुज़ूर इस सिलसिले में मेरी घरवाली असल कोशिश करेगी। रह गया मैं, तो मुझसे यह कहने की ज़रूरत ही नहीं। मौका मिला तो बन्दा चूकने वाला हरगिज़ नहीं। अव्वल तो खुदा करे कि नवाब साहब को ये लोग नैनीताल की सैर को ले जाएँ ताकि मैं भी नवाब साहब की कृपा से उस खोह को देख आऊँ।"

मुनीर ने कहा—"जी बजा फ़रमाते हैं। वे लोग अब इतने गधे भी नहीं कि आपको भी ले जाएँगे खोह में।"

शकूर बोला—"हुज़ूर अगर वे गधे नहीं हैं तो फिर जो गधे हैं उनके विषय में भी मुझको शुबह है कि कहीं वे भी गधे न हों। मैंने कल रात ही इस काम की रूपरेखा शुरू कर दी है। नवाब साहब के पांव दबाते हुए मैंने एकान्त में अवसर पाकर नवाब साहब से कहा कि हुज़ूर अगर बुरा न मानें तो अर्ज़ करूँ कि हुज़ूर आजकल इधर-उधर अकेले न आया-जाया करें। अग़ान मिर्ज़ा और दुलारे मिर्ज़ा लाख दोस्त सही, मगर यह दुनिया है और खराब ज़माना आ लगा है। मुझे उन लोगों के तेवर अच्छे मालूम नहीं होते। इसीलिए मैं ज़्यादातर हुज़ूर ही के पास रहता हूँ कि अगर वक्त पड़े तो पसीने पर खून बहा

सकूं।"

मुनीर ने कहा—"यह बात तुमने अच्छी नहीं की शकूर। इतने समझदार आदमी होकर आखिर धोखा खा गये। तुमको अपना पार्ट बिलकुल बेवकूफ बहरे का पेश करना है।"

शकूर ने कहा—"मुमकिन है मैंने गलती की हो। समझ यों ही सी है। मगर इस नासमझी का नतीजा कुछ अच्छा ही हुआ। नवाब साहब ने हँसकर कहा, बेवकूफ हो तुम! ये लोग मेरे घनिष्ठ दोस्त हैं। उनकी तरफ से इत-मीनान रखो कि ये मुझको धोखा नहीं देंगे। मैंने कहा, 'यह तो मुझको भी मालूम है मगर हुजूर खता माफ़, ये लोग ऐसे भी नहीं हैं कि अगर खुदा न करे कोई वक्त पड़ जाय तो ये अपने बचाव के मुकाबिले में आपके लिए सीना अड़ा दें।' फिर भी मैं हुजूर को किसी के साथ अकेला नहीं छोड़ना चाहता, मेरा दिल डरता है। नवाब साहब ने मेरी पीठ पर हाथ फेर कर मुझको विश्वास दिलाते हुए कहा—'कि मियाँ शकूर, मुझको तुमसे यही उम्मीद है। मगर मगन साहब या दुलारे मिर्जा के बारे में इस किस्म की बात अब औरों से न कहना।'

मुनीर और आफ़ताब दोनों ने शकूर को देर तक समझाया कि इस प्रकार की बातें लाभदायक सिद्ध न होंगी। तुम तो बस अलग-अलग ही रहो ताकि ये सब तुमको केवल निष्ठावान बेवकूफ और आज्ञापालक अहमक ही समझते रहें। इसी में हम सब का फायदा है। अगर तुमने अक्ल का जरा भी सिक्का जमाया तो दाल गलना मुश्किल हो जाएगा। शकूर ने भविष्य में इस गलती से दूर रहने का सच्चे दिल से वायदा किया और प्रोग्राम यह निश्चित हुआ कि सल्मा अन्सारी से मालूम करने के बाद आनन्द को गड़रिये के भेष में नैनी-ताल के रास्ते में छोड़ दिया जाए और इधर शकूर अपनी बीवी की सहायता से वह तावीज़ प्राप्त करने का प्रयत्न करे। आज के तीसरे दिन फिर ये लाग मिलकर मशवरा करेंगे।

१२

नसीम के लिए यों तो उस खोह में हर तरह का आराम था मगर तिवारी
प्रेमिका, दिल देने वाली मेरी साहिवा ने उसके लिए यहाँ भी एक इम्ति-
प्रस्तुत कर दिया था। आप धीरे-धीरे नसीम को यह अन्दाजा करा चुकी
कि आपने सीने में भी एक दिन नीलाम के लिए मौजूद है। नसीम इस
कार के वहुत से इम्तिहान देकर ऐसी-ऐसी वहुत सी मंजिलें तै किये हुए था।
ह इन देवीजी के जाल में तो खैर क्या फँसता मगर खुदा न करे कि इस
कार के मामलात में औरत स्वयं अपनी सेवाएँ प्रदान करने के लिए तैयार
हो जाए। औरत के पास ले-देकर शर्म-व-हया ही तो है जो उसको स्त्रीत्व की
सीमाओं में रखती है। अगर यह झिझक और यह झपक ही उठ जाए तो औरत
से वढ़ कर खतरनाक जानवर भी और कोई नहीं हो सकता। मेरी के पास
सौन्दर्य था, ऐसा सौन्दर्य कि तिवारी-जैसा पारखी उसको अपना केन्द्र विन्दु
वनाए हुए था। उसके पास अदाएँ थीं, ऐसी अदाएँ... जो तिवारी जैसे
पाषाण-हृदय के सीने में भी धड़कन पैदा कर सकती थीं। उन ही अदाओं ने
मानो पत्थर में रक्त का प्रवाह उत्पन्न कर दिया था। वह शिक्षिता थी और
एक लिखी-पढ़ी औरत की भाँति प्रेम को अत्यन्त भयानक वनाकर प्रस्तुत
करना जानती थी। सारांश यह कि उन तमाम शस्त्रों से लैस थी जो एक स्त्री
एक पुरुष को जीतने के लिए काम में लाती है। उस पर ग़जव यह कि स्वयं
अपने भावों को प्रकट करना, अपने प्रेम का सन्देश देने, अपने सम्वन्ध के सिल-
सिले में वहुत स्पष्ट थी। उसने कई वार नसीम से साफ शब्दों में कह दिया
था कि मैंने आज तक दूसरों पर रहम खाया है और आज मेरी ज़िन्दगी का

यह पहला मौका है कि मैं खुद तुम्हारी तवज्जुह की इच्छुक हूँ, बल्कि नसीम की तरफ से आखिरकार साफ जवाब पाने के बाद वह यहाँ तक धमका चुकी थी कि तुम्हारी आज़ादी मेरे हाथ में है और अगर मैं तुम्हारी ओर से निराश हुई तो सम्भवतः यह खोह तुम्हारा मकबरा बन जाए। प्रकट है कि यह धमकी इतने साफ शब्दों में तो न दी गई थी मगर मतलब लगभग यही था। और इस धमकी के बाद भी जब नसीम अपनी जगह से न हट सका, तो ठुकराई स्त्री के प्रतिशोध की आखिरी मंज़िल तक पहुँचने से पहले आज अंतिम बार मेरी नसीम से निर्णयात्मक वार्तालाप करने आई हुई थी। उसने अपने पाश्चात्य सौन्दर्य को भारतीय बहू-बेटियों के वस्त्रों में पूर्ण रूप से सहन-शील बनाने की कोशिश की थी। गुलाबी रंग का खड़ा पाजामा, उस पर हल्के गुलाबी रंग की लम्बी कमीज़, जो वास्तव में कुर्ते, कमीज़ और फ्राक का मिला-जुला रूप थी, सिर पर उसी रंग का दुपट्टा, जूड़े में गुँथे हुए फूल। मानो मेरी ने मरियम बनने का प्रयत्न किया था। परन्तु जिस उद्देश्य से आप पधारी थीं वह इस नाम के प्रतिकूल था। प्रसिद्ध मरियम का सतीत्व आज इस मरियम के हाथों खतरे में था। नसीम ग़रीब उसके आने और अकेले आने से हमेशा काँप जाया करता था। यदि वह स्वतन्त्र होता तो शायद उस औरत की इस मूर्खता से आनन्द प्राप्त करता। उसे मनोविनोद की सामग्री समझ कर ज़रा मज़ाक उड़ाता, जैसे वह हमेशा प्रेम के दावेदारों का मज़ाक उड़ाया करता था। मगर इस गिरफ्तारी की स्थिति में यह प्रेम की मुसीबत मानो सोने पर सुहागे वाली कहावत थी। फिर भी उसने अत्यन्त प्रफुल्लता के साथ स्वागत करते हुए कहा—"तशरीफ लाइये! आज तो आप बजाए मिस मेरी डेविड के मानो मरियम बेगम बनी हुई हैं?"

मरियम ने अपने इत्र से वायुमण्डल को सुवासित करते हुए कहा—"नसीम, तुम बड़े चंचल हो। जितने तुम बुद्धिमान और गम्भीर, कठोर हृदय तथा निष्ठुर हो उतनी ही तुम्हारी कल्पना भी शोख और चंचल, सब को आज-माने वाली तथा होश भुला देने वाली है। मैं तय कर चुकी थी कि अब तुम्हारे पास न आऊँगी, मगर मुझको नहीं मालूम कि तुमने मुझ पर क्या जादू कर

दिया है ?"

नसीम ने कहा—"इस मौके के लिये मैं आपको एक बड़ा उम्दा शेर याद दिलाता हूँ—

'कहाँ खींचे लिये जाती है मुझको आरज़ू मेरी।
जहाँ से इक ज़माना वादल नाशाद आता है ॥'†

मेरी ने आँखें और गर्दन मटका कर कहा—"मैं उस ज़माने के सा नहीं हूँ जो नाशाद‡ वापस आ सके। मैं अपनी किसी कोशिश को असफल देखने की आदी नहीं हूँ।"

नसीम ने ज़रा चख लेते हुए कहा—"आपने तो एकदम से जंग शुरू कर दी, मैं तो समझा था कि आप मुझको समझाने की कोशिश करेंगी।"

मेरी ने तेवर वदल कर कहा—"तो आप मेरा मज़ाक उड़ाने की कसम खा चुके हैं। अच्छा यह वताओ नसीम कि तुम मुझसे इतने क्यों कतरा रहे हो ? जितनी मैं तुम्हारे समीप आ रही हूँ उतने ही तुम दूर होते जा रहे हो।"

नसीम ने फिर झूम कर कहा—"हा-हा ! फिर एक शेर याद आ गया—

'अज़ज़ो नियाज़ इधर तो, उधर का ग़ुरूरो नाज़।*
जितना था मैं करीव, वह उतना ही दूर था ॥

मेरी ने खिन्नता के ढंग से कहा—"मैं उस ग़रूर और नाज़ को वर्दाश्त करने के लिए भी तैयार हूँ लेकिन मुझको यह तो मालूम हो जाए कि दूरी कभी सिमट कर समीप वन सकेगी।

नसीम ने कहा—"और फर्ज़ कर लीजिये सामीप्य न वन सकी तो ?"

मेरी ने कहा—"तो मुझको भी आईने-वफ़ा वदलना आता है। वह क्या शेर सुनाया था उस दिन तुमने—

'दिल ऐसी चीज़ को ठुकरा दिया नखवत परस्तों ने।
वहुत मजवूर होकर हमने आईने-वफ़ा वदला ॥'

---

†मेरी उत्कंठा मुझे वहा खींच कर ले जा रही है जहाँ से सारी दुनिया निराश ही लौटती है। ‡निराशा। *इधर प्रार्थना थी उधर ग़रूर था।

नसीम ने कहा—"देखिये मामी जान !"

मेरी ने बात काट कर भर्राये हुए स्वर में कहा—"मामी जान गई जहन्नुम में, मैं तुम्हारे मुँह से अपने को मामी जान कहलवाने नहीं आई हूँ।"

नसीम ने कहा—"मैं तो आपको सिर्फ यही कह सकता हूँ। इसलिए कि तिवारी साहब ने मुझसे यही कहा था कि यह तुम्हारी मामी है।"

मेरी ने कहा—"मैं चाहती हूँ कि आप तिवारी से खुद यह कहकर मेरा परिचय कराने की स्थिति पैदा कर दें।"

नसीम ने कहा—"यानी मैं तिवारी से कहूँ कि यह तुम्हारी मामी जान है ? खूब। जवाब तो इस हाथ दे उस हाथ ले। मगर अफसोस कि ऐसा मुझ से न हो सकेगा। तिवारी सिर्फ मेरे दोस्त ही नहीं बल्कि शुभचिन्तक भी हैं।"

मेरी ने आँखें चमका कर कहा—"जी और क्या ? इतने बड़े शुभचिन्तक कि आपको इस मोह में गिरफ्तार किये हुए हैं, आपको अपना बंदी बनाये हुए हैं। गँवार को शुभचिन्तक कहते आप ही को देखा है।"

नसीम ने कहा—"इसके अलावा उनका यह एहसान मैं कभी नहीं भूल सकता कि वह मेरे साथ वह सलूक कर रहे हैं जो आज तक शायद ही किसी गँवादी† ने अपने मसीही‡ के साथ किया हो। सबसे बड़ी बात यह है कि उनको मुझ पर पूरा विश्वास है कि मैं कम-से-कम शरीफ जरूर हूँ। और मैं उनके इस विश्वास को किसी रंग में कभी कमी नहीं कर सकता।"

मेरी ने कहा—"तो आप इसके लिए तैयार हैं कि इसी तरह बेकसी और बेबसी के साथ इस फंदे में पड़े रहें। नसीम, मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अगर तुम मुझसे वचनबद्ध हो जाओ तो मैं इस दिल की कसम खाकर कहती हूँ कि एक मिनट में इस फंदे से आज़ाद करा सकती हूँ। तुमको नहीं मालूम कि मुझको तिवारी से कितनी नफ़रत है। मैं शर्म से डूब मरना चाहती हूँ जब मुझको यह खयाल आता है कि मैं एक डाकू की ब्याही हूँ, एक कज्ज़ाक* से सम्बन्धित हूँ।"

नसीम ने कहा—यहाँ पर तो सिर्फ आप अपना ——— ..."

---

†विदेशिनी। ‡ईसाई। *लुटेरा।

मेरी ने उसको रोकते हुए कहा—"मैं इस वक्त अत्यन्त गम्भीर हूँ और कसम खाकर कहती हूँ कि अगर तुम मेरे न हो सके तो मैं खुद भी मिट जाऊँगी और तुमको भी किसी और के लिए बाकि न रहने दूंगी।"

नसीम ने कहा—"आज आप अजीव शेर याद दिलाने वाली बातें कह रही हैं। फिर शेर याद आ गया—

'शोलाए आह से इक आग लगाना है मुझे।

खुद भी जलता हूँ कफ़स† को भी जलाना है मुझे॥'

मेरी ने कहा—"खुदा के वास्ते नसीम मेरा इस तरह मज़ाक मत उड़ाओ। तुमको नहीं मालूम कि मेरी स्थिति क्या है? आज मैं तुमसे आखिरी फैसला सुनने आई हूँ कि तुम मेरे हो सकते हो या नहीं?"

नसीम ने कहा—"इसका जवाव तो शायद मैं कई बार दे चुका हूँ कि मैं अगर ऐसी ही डांवाडोल किस्म का आदमी होता तो भी मैं शायद एहसान फ़रामोश यानी कृतघ्न न बन सकता। मैं आपकी इज्ज़त करता हूँ और आपके मुँह से इस किस्म की बातें सुनकर कुछ ऐसा अनुभव होता है जैसे मैं खुद ,ी नज़रों से गिरा जा रहा हूँ। बात यह है कि जिस व्यक्ति की मनुष्य ‹. करता है, उसकी ज़रा-सी वेइज्ज़ती चाहे वह अपनी वेइज्ज़ती खुद ही क्यों न कर रहा हो, बरदाश्त नहीं कर सकता। मुझको अफसोस है कि आपने खुद अपने स्थान को नहीं समझा है। आपका स्थान मेरे निकठ इस खयाल से वहुत ऊँचा होना चाहिये कि आप उस व्यक्ति द्वारा निर्वाचित है और उसका केन्द्र-विन्दु है जो डाकू और कज्ज़ाक होते हुए भी अत्यन्त सज्जन आत्मा है। उसके सीने में एक वहुत कीमती दिल है और उसी दिल में आपकी मुहव्वत है। आपने एक डाकू को मुहव्वत करना सिखाया है, आपने पत्थर को अपने जादू से मोम वनाया है। आपको तो यह चाहिये था कि आप अपनी इस फ़तह के वाद अपनी उस विजय पर जीवन-भर गौरव प्रकट करतीं।"

मेरी ने मुँह चिढ़ाने के ढंग से कहा—"मैं वड़ा फख करती हूँ इस बात पर कि मैं एक अपराधी, वटमार और वदमाशों के सरदार के फन्दे में फँसी

---

†पिंजरा।

हुई हूँ।"

नसीम ने कहा—"सैयादां† खुद सैद‡।"

फाँस कर दो-चार बुलबुल फँस गया सैयाद भी।

खैर, मुझको अपनी हार स्वीकार है लेकिन मैं शायद आपको न समझा सकूँगा इसलिए कि आप समझने के लिए तैयार ही नहीं हैं। हाँ मेरी स्थिति यह है कि मैं तिवारी का एहसानमन्द हूँ। इस एहसान का महत्व भी आपकी समझ में नहीं आ सकता। इसको केवल एक एहसान मन्द ही समझ सकता है। यह स्थिति समझी जा सकती है समझाई नहीं जा सकती। मैं कृतघ्नता करने में भी नहीं सोच सकता, जिसकी दावत आप मुझको दे रही हैं।"

मेरी ने त्योरी बदलकर कहा—"तो यह आपका कतई और आखिरी जवाब है ? इस तरह मानो आपने मेरे अपमान और अनादर का आखिरी फैसला कर लिया है और यों आप मेरी मुहब्बत को ठुकरा रहे हैं।"

नसीम ने कहा—"अगर आप मेरी शराफत के ऐसे ही खौफनाक नाम रख सकती हैं तो यही सही, किसी प्रकार भी मैं तिवारी का प्रतिद्वन्द्वी नहीं बन सकता।"

उसी वक्त दरवाजे के पर्दे से तिवारी ने निकल कर नसीम को लिपटाते हुए कहा—"नसीम ! तुम वाकई इन्सान नहीं देवता हो। मैंने तुम दोनों की पूरी वार्तालाप सुन ली है और तुम दोनों के सम्बन्ध में मुझे वह फ़ैसला करना पड़ा जो शायद मेरी जिन्दगी में भी परिवर्तन कर देगा। मेरी के विषय में कुछ कहना नहीं चाहता, सिवाय इसके कि यह मेरे दिल से तो निकल चुकी है मगर इस कोठे से उस वक्त तक नहीं निकल सकती जब तक कि इसमें रहस्य प्रकट करने की तनिक भी ताकत बाकी है।" यह कहकर तिवारी ने मेज पर रखी हुई घंटी बजाई और दो सशस्त्र पहाड़ी अदब से सामने आकर खड़े हो गये। तिवारी ने मेरी की ओर इशारा करते हुए कहा—"आपको हिफाजत के साथ ले जाओ और नम्बर १४ में ठहराओ।"

---

† अहेलिया। ‡पक्षी।

मेरी की यह दशा थी कि मानो जिस्म में तमाम खून जम चुका है। न उसमें कुछ बोलने की शक्ति थी, न सफ़ाई पेश करने का कोई बहाना उसको मिल सकता था। मेरी तो मेरी नसीम खुद हैरान था कि मेरी की अगर सिफ़ारिश करे तो क्या और किस मुँह से ? जब कि वह कम्बख्त खुद अपने को इस तरह बे-नकाब कर चुकी थी। दोनों हथियारबन्द पहाड़ी मेरी को हिरासत में लेकर कमरे में चले गये तो नसीम ने सिर्फ़ इतना पूछा—"नम्बर १४ क्या कोई बहुत ही तकलीफ़देह जगह है ?"

तिवारी ने मुसकरा कर कहा—"तकलीफ़देह बिलकुल नहीं है, इसी तरह का एक कमरा है। मैं उसको तकलीफ़ देकर क्या करूंगा नसीम मियाँ ? क्या तुम मुझको इतना गिरा हुआ समझते हो कि मैं ऐसी गिरी हुई स्त्री से बदला लूंगा। बदला हमेशा बराबर वाले से लिया जाता है। जिसको मिटा सकने की ताकत इन्सान खुद रखता है उससे बदला लेना क्या ? मैं तो उसको उसी वक्त खोह से निकाल कर आजाद कर देता मगर अपनी मूर्खतावश मैं उसको अपने बहुत-से राज बता चुका हूँ और मुझको अन्देशा है कि वह बाहर निकलकर ८९५ प्रकट करने का नीच प्रयत्न अवश्य करेगी। इसलिए कि वह वाकई नीच है। और मैं इसको अपना सौभाग्य समझता हूँ कि मुझको अपने उस आस्तीन के साँप की खबर वक्त से पहले हो गई। मगर एक चीज़ खो कर मैंने एक बहुत कीमती चीज पा ली, यानी तुम्हारी दोस्ती। और अब मैं गम्भीरतापूर्वक इस बात पर ग़ौर कर रहा हूँ कि कहीं तुम मुझको इस सद्व्यवहार से सज्जनों का जीवन बिताने पर मजबूर तो न कर दोगे ?"

नसीम ने हँसकर कहा—"ख़ैर इस विषय में तो बाद में ग़ौर करना, मगर मेरी एक सिफ़ारिश तुमको माननी पड़ेगी कि मेरी कमबख्त को किसी प्रकार की तकलीफ़ न होने पाए, वरना इसका कारण ख्वाहमख्वाह मैं अपने को समझने लगूंगा।"

तिवारी ने नसीम को इस विषय में हर तरह का विश्वास दिलाया और किसी गहरी चिन्ता में डूबा हुआ थोड़ी देर के बाद नसीम के पास से चला गया।

"१३

सलमा अन्सारी ने जो जगह बताई थी उसी के समीप आनन्द वाकई खानदानी गड़रियों के भेष में कुछ बकरियाँ लिये चराने में व्यस्त थे। दिखाने के लिए बकरियाँ चराने मे व्यस्त, परन्तु वास्तव मे इस फिक्र मे किसी तरह खोह में जाने का रास्ता मालूम हो जाता तो अच्छा था। आज उस जगह आते हुए आनन्द को दो दिन हो गये थे परन्तु अब तक सफलता की कोई सूरत नज़र न आती थी। और आज तो उसे उम्मीद भी न थी, इसलिए कि सुन चुका था कि हफ़्ते में सिर्फ एक दिन एक रास्ता खुलता है। परन्तु खुशकिस्मती से वह आज जिस पत्थर पर बैठा हुआ अपनी बकरियो की निगरानी कर रहा था उसी मे सहसा भूचाल की-सी स्थिति उत्पन्न हुई। पहले तो वह इस हलचल को वाकई भूचाल समझा, मगर थोडी ही देर में एक घडघडाहट के साथ वह पत्थर अपनी जगह से हट गया और एक बहुत शानदार आदमी फाख्तई रंग का सूट पहने एक खोह से निकलकर उसके सामने जाने के लिए बढा ही था कि उसकी नज़र इन हज़रत पर पड गई। यह अब तक मानो अपनी धुन मे बकरियों की निगरानी कर रहे थे। उस व्यक्ति ने इनके समीप आकर पहले तो इनको गौर से देखा, फिर चेहरे पर अर्थमयी मुसकराहट उत्पन्न करके कहा—"यहाँ क्या कर रहे हो बैठे हुए ?"

गड़रिये ने सँभल कर खड़े होते हुए कहा—"सरकार बकरियाँ चराता हूँ।"

उस व्यक्ति ने कहा—"बहुत अनाड़ी है जनाब। विस्तारपूर्वक वार्ता तो खैर बाद मे होगा, मगर दो-चार मोटी-मोटी बातें मुझसे इसी वक्त सु

लीजिये कि आपने सूरत बदलने में जितना कमाल दिखाया है उतना ही सीरतगिरी† में धोखा खाया है। गड़रिये तो आप बेशक मालूम होते हैं मगर सम्भवतः आप यह भूल गये कि इस पहाड़ी स्थान पर गड़रिये भी पहाड़ी ही होते हैं। जिनकी बोली तक आपने सीखने की कोशिश नहीं की। दूसरी बेवकूफ़ी जो जनाब से हुई है वह यह है कि जिस पत्थर पर आप बैठे हुए थे वह अभी हिलने लगा था। आपको स्वभावतः घबराकर उस पर से उतरना और भागना चाहिये था। आप अगर इस वक्त बजाए बकरियों की तरफ़ तवज्जह रखने के भयभीत होते, मेरी तरफ़ देखते और इस खोह की तरफ़ देखते हुए नज़र आते तो शायद मैं उपेक्षा कर देता, मगर आपकी इस ग़लत टेकनीक ने भाँडा फोड़ दिया है और अब आप मेरे कब्ज़े में हैं। तशरीफ़ लाइये मेरे साथ और अगर आपके कुछ और साथी यहाँ मौजूद हों तो उनको भी बुला लीजिये।"

आनन्द ने पहले ही कदम पर ऐसी ज़बरदस्त ठोकर का अन्दाज़ा भी न किया था। उसके होश हवास जाते रहे, फिर भी उसने गड़रिये ही के ढंग से कहा—"सरकार मैं समझा नहीं?"

उस व्यक्ति ने कहा—"आप अब इस एक्टिंग की कोशिश न कीजिये। झूठ बोलने के लिये दिल की मज़बूती अत्यन्त ज़रूरी है ताकि इनसान अपने हवास ठिकाने रख सके। आप अपनी कलई खुलने पर काँप रहे हैं, आवाज़ तक भर्रा रही है और झूठे की सच्चाई खुली जाती है परन्तु आप हैं कि एक असफल ऐक्टर की तरह अपने अभिनय का नाश मारने में लगे हुए हैं। फिर भी इससे पहले कि मैं कोई मुनासिब तरीका अख्तियार करूँ, मेरी दोस्ताना राय यही है कि आप मेरे साथ खुद ही तशरीफ़ ले आएँ। जिस खोह की आपको तलाश है उसकी सैर मैं खुद करा दूँगा।"

यह कहकर उस व्यक्ति ने एड़ी और पंजों की कुछ अजीब-सी हरकत से खुदा जाने क्या किया कि एक दम वही पत्थर फिर हटा और एक रंग का

† बोली।

दरवाजा उन दोनों के सामने मौजूद था। उस व्यक्ति ने अत्यन्त सम्मान सहित कहा—"संकोच न कीजिये तशरीफ ले आइये।"

और आनन्द के कन्धे पर हाथ रखकर आपके साथ चलने के लिए मजबूर कर दिया। उन दोनों के खोह में प्रवेश करते ही पत्थर फिर एक घड़घड़ाहट के साथ खोह के दहाने पर आ गया और खोह बिजली की रोशनी से जगमगा उठी। ऐन उसी वक्त दो-तीन सशस्त्र युवक दौड़ते हुए सामने आये और आते ही फौजी ढंग से उस व्यक्ति को सलामी दी जिसके साथ आनन्द तशरीफ ला रहे थे। उन लोगों ने सलामी देने के बाद आनन्द को अपनी देखरेख में लेने का इरादा ही किया था कि उस व्यक्ति ने हाथ के इशारे से उनको रोक कर प्रभावोत्पादक ढंग से कहा—"आप कैदी हैं या मेहमान, इसका फैसला मैंने अभी नहीं किया है। यह फैसला नसीम साहब करेंगे। हां, तुम लोग बाहर कुछ लोगों को भेजकर यह पता लगाओ कि कुछ और लोग तो खोह की खोज नहीं कर रहे हैं।"

उन लोगों ने उसी तरह फिर सलामी दी और उलटे पैरों वापस हो गये। वह व्यक्ति आनन्द को साथ लिए नसीम के कमरे की तरफ बढ़ा। नसीम उस वक्त ड्रेस गाउन पहने आज का ताजा अखबार हाथ में लिए आरामकुर्सी पर लेटा हुआ था। उस व्यक्ति ने दरवाजे पर उँगली से हल्की-सी दस्तक दी और कमरे में दाखिल हो गया। नसीम ने अखबार एक तरफ रखकर कहा—"अरे तिवारी जी! मैं तो समझता था कि आज शाम से पहले मुलाकात ही न हो सकेगी, क्या नैनीताल नहीं गये?"

तिवारी ने कहा—"जा तो रहा था मगर खोह से निकलते ही अचानक एक मेहमान का स्वागत करना पड़ा। विशेष रूप से इसलिए भी मैंने नैनीताल का इरादा मुलतवी कर दिया कि मेहमान मेरे नहीं बल्कि तुम्हारे हैं।"

नसीम ने विस्मयपूर्वक कहा—"मेरे मेहमान? मेरा मेहमान यहाँ क्योंकर आ सकता है?"

तिवारी ने हँसकर कहा—"मेहमान खुदा की रहमत‡ है औ

‡देन।

जगह प्रकट हो सकती है। अब यह आप अपने मेहमान से ही पूछ लीजियेगा कि वह क्योंकर प्रकट हुए हैं ?"

यह कहकर तिवारी ने दरवाजा खोलते हुए आनन्द से कहा—"तशरीफ ले आइये।" आनन्द को कमरे में आता हुआ देखकर नसीम ने घूर-घूर कर उसको देखना शुरू किया। मुमकिन है कि वह पहचान भी लेता मगर आनन्द ने इसका मौका ही नहीं दिया और दौड़कर नसीम से लिपटते हुए कहा—"भाई नसीम।"

कुछ तो कानों की पहचानी आवाज़ की वजह से और कुछ इस लिए भी कि आनन्द के दौड़ने की वजह से गड़रिये वाला साफा खुल कर गिर चुका था। नसीम ने उसको पहचानते हुए दबोचकर कहा—"आनन्द, मेरे आनन्द ! यहाँ तू कैसे आ टपका कमबख्त ?"

आनन्द के जवाब देने से पहले ही तिवारी ने कहा—"मैं जो खोह से निकला तो देखता हूँ कि जनाब उसी पत्थर पर बैठे हुए हैं जो खोह के दहाने से हटाया गया था। न उस पत्थर की हरकत से डरे, न खोह के प्रकट होने से परेशान हुए, न मुझको देखकर घबराए बल्कि अत्यन्त व्यस्तता के साथ अपनी बकरियों की निगरानी करते रहे।"

नसीम ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा—"बकरियों की निगरानी ? ये बकरियाँ कैसी ?"

तिवारी ने कहा—"गड़रिये के वेष में बकरियाँ तो चरा रहे थे आप, मगर उस भेष बदलने में आप खा गये सख्त धोखा। अव्वल तो आपने पहाड़ी गड़रियों का भेष नहीं बदला बल्कि पूरबी गड़रियों के भेष में यहाँ आ मौजूद हुए। दूसरी बोली भी आपने पहाड़ी गड़रियों वाली अख्तियार नहीं की बल्कि पूरबी गड़रियों वाली बोली में मुझ से बातचीत की। अतः मैं फ़ौरन समझ गया कि यह हज़रत गड़रिये वगैरह तो खैर हैं नहीं हमारे ही कोई मेहमान हैं और इन हज़रत के आपसे सम्बन्धित होने का यकीन इसलिए हो गया कि इस वक्त आप ही के ढूंढने वालों की सरगर्मियाँ ज़ोरों पर हैं। अब आपकी तारीफ तो कीजिये।"

लिए पूछा जा रहा है, बजाए चक्की पीसने या राम बाम कूटने के। मुमकिन है कि यह वास्तविकता न हो बल्कि मैं बकरियां चराते-चराते सो गया हूं और यह सिर्फ सपना हो।"

तिवारी ने कहा—"अगर आपको इस बारे में किसी शरीफ आदमी की गवाही की जरूरत है तो नसीम साहब मौजूद हैं और अगर किसी बदमाश की गवाही की जरूरत है तो मैं मौजूद हूं, यह बताने और यकीन दिलाने के लिए कि यह खोह है और आप इसमें मेहमान बनकर आ चुके हैं।"

नसीम ने कहा—"भाई तिवारी, इनके लिए यह इन्तज़ाम कर दो कि इनको मेरे कमरे के करीब कोई जगह मिल जाए। इनकी तरफ से ज़िम्मेवार मैं हूं कि खोह के नियमों का पूरी तरह से पालन करेंगे।"

तिवारी ने कहा—"हुजूरवाला, आप मालिक हैं जो हुक्म देंगे वही होगा। मेरी तरफ से चाहे आप इनको इसी कमरे कमरे में रख लीजिये वरना बराबर वाला कमरा अभी ठीक कराए देता हूं।"

नसीम ने आनन्द से कहा—"मगर उस्ताद तुम आये खूब?"

आनन्द ने कहा—"सुब्हान अल्लाह! कितनी मौके की है जनाब की यह खुशी यानी हम तो अपनी जान की बाज़ी लगाकर जनाब को ढूंढ़ने निकले कि खुदा जाने किन मुसीबतों में जनाब फँसे होंगे और क्या कयामत गुज़र रही होगी जनाब की जान पर और आप हैं कि दौलत खाना बनाए बैठे हैं। मेहमान बने हुए हैं। यह वास्तविकता क्या है?"

तिवारी ने कहा—"अच्छा तो जैसे इस वास्तविकता की आप लोगों को खबर ही नहीं है कि यह हज़रत खुद डाकुओं के गिरोह में शामिल हो चुके हैं।"

आनन्द ने कहा—"यह तो खैर मुझको इनके बारे में हमेशा से अन्देशा था कि मरेंगे फांसी की मौत और जायेंगे मुजरिमों की ज़िन्दगी, वाकई यह जादू है क्या?"

नसीम ने कहा—"इस विवरण के लिए ज़रा सब्र करो। इतमीनान से बैठो, हाथ-मुंह धोकर आदमियत में आ जाओ फिर सब तुमको मालूम हो जाएगा।"

तिवारी ने कहा—"मैं नईरिये साहब के कपड़ों का तो इन्तज़ाम करूँ।"

नसीम ने कहा—"इसका फ़िक्र न कीजिये, कातिज की ज़िन्दगी में इस हरामख़ोर ने हमेशा मेरे कपड़े पहने हैं।"

आनन्द ने कहा—"या तो कहिये कि कपड़े भाए हैं वरना हरामख़ोर की बजाए हराम पोशी‡ कहिये।"

तिवारी ने कहा—"बस साहब मालूम हो गया कि आप अपने मतलब के आदमी हैं। यहां ऐसे ही ख़ुश मज़ाक़ों के लिए तरसा करते थे। नसीम साहब की मेहरबानी से अब ज़रा यह कमी पूरी होनी शुरू हुई है। अच्छा तो नसीम साहब, आप आनन्द साहब को पहले ग़ुसलख़ाने भेजिये, ताकि आप वाक़ई अपनी असली सूरत में तो आ जाएँ।"

नसीम ने सूटकेस की तरफ़ इशारा करते हुए कहा—"वह रहा सूटकेस, कपड़े निकालो और ग़ुसलख़ाने में चले जाओ। फिर चाय उड़ेगी। तिवारीजी यह कमबख़्त सम्भव है भूखा भी होगा, इसका ख़याल रखियेगा।"

तिवारी ने उठते हुए कहा—"अभी लीजिये, निहायत ठाठदार चाय आप भी क्या याद करेंगे कि किसी रईस से वास्ता पड़ा था।"

तिवारी तो चाय के इन्तज़ाम के लिए चला गया और आनन्द ने नहाने की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

---

‡ कुपड़े का पहनने वाला।

१४

नैनीताल में सलमा अन्सारी अपनी खाला† की कोठी में अत्यन्त बेचैनी के साथ आनन्द की प्रतीक्षा कर रही थी। शाम हो रही थी और आनन्द का अब तक पता न था। हालांकि वह रोजाना इस वक्त से बहुत पहले पहुँच जाया करता था मगर उसके प्रतिकूल देर हो रही थी। कई मर्तबा सलमा ने बाहर निकल कर दूर तक लहराती सड़क पर निगाह डाली कि शायद वह आ रहा हो फिर थक कर वह अन्दर चली गई। चाय भी रखे-रखे ठंडी हो गई और वह अब इरादा कर रही थी कि दूसरी मर्तबा चाय मँगाए कि उसको बाहर कुछ आहट-सी प्रतीत हुई। उसने कमरे के अन्दर ही से कहा—"आ गये आनन्द साहब? आज तो बड़ा इन्तज़ार कराया।"

दरवाजा खोलकर ग़ज़ाला ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"आनन्द नहीं मैं हूँ।"

सलमा ने एकदम खड़े होकर कहा—"ग़ज़ाला—तुम? अरे तुम कैसे आ गईं?"

ग़ज़ाला ने बुर्का उतारते हुए कहा—"यह तो मुझको खुद भी नहीं मालूम कि मैं कैसे आ गई, मगर आ ही गई किसी-न-किसी तरह।"

सलमा ने कहा—"और साथ कौन आया है? सामान कहाँ है? कोठी का पता कैसे चला?" और एक सांस में हज़ारों सवाल कर डाले।

ग़ज़ाला ने बुर्का एक कुर्सी पर डालते हुए कहा—"मेरे साथ सिर्फ एक रिवाल्वर है, उसी को साथी समझ लो और उसी को रिवाल्वर।"

---

† मौसी।

सलमा ने कहा—"मगर तुमको नवाब साहब और तुम्हारी माँ ने इजाज़त कैसे दी, इस तरह आने की ?"

ग़ज़ाला ने कहा—"न वह इजाज़त दे सकते थे, न मैं इजाज़त माँग सकती थी। लेकिन मेरे लिए यह भी मुमकिन न था कि मैं वहाँ बैठी रहूँ। अब तुम सबसे पहला काम यह करो कि मुनीर साहब को या आफ़ताब साहब को एक तार दे दो कि मैं ख़ैरियत से यहाँ पहुँच गई हूँ। फिर मैं विस्तार से अपने इस सफ़र के हालात बताऊँगी। मैंने वाकई वह कदम उठाया है कि मुझे खुद ताज्जुब होता है।"

सलमा ने कहा—"तार तो मैं दिये देती हूँ मगर अक्लमन्द लड़की तुमने वाकई सख्त हिमाकत की है। अब इसका नतीजा यह होगा कि तार के मिलते ही पूरा काफ़िला यहाँ आ मौजूद होगा और वहाँ जो जरूरी काम वे लोग कर रहे हैं उनमें बाधा पड़ेगी।"

ग़ज़ाला ने कहा—"ये बातें बाद में करना, सबसे पहले तार दे दो फिर मुनीर साहब से ट्रंक पर बात-चीत करने का इन्तज़ाम करो, मैं उनको सब-कुछ समझा दूँगी।"

सलमा ने उसी वक्त तार के मज़मून तैयार किये। एक मुनीर के नाम और दूसरा आफ़ताब के नाम। मुलाज़िम को तारघर भेजने के बाद ट्रन्क से लाइन माँगी। जिसके लिए एक घंटा तक इन्तज़ार करना पडा। इस बीच में ग़ज़ाला स्नान वग़ैरह से फ़ारिग होकर अपने होश-हवास दुरुस्त कर चुकी थी और इस वक्त चाय की मेज पर बैठी हुई अपने सफ़र के बारे में बता रही थी।

सलमा ने कहा—"मगर कमाल किया तुमने, कि थोड़े ही दिनों के मोटर चलाने के अभ्यास के बाद यह हिम्मत भी कर गुज़री कि इतनी दूर का सफ़र मोटर पर कर लिया और पहाड़ी रास्ता भी तय कर लिया।"

ग़ज़ाला ने कहा—"मेरी राए है कि इसका सम्बन्ध—हिम्मत से नहीं बल्कि इरादे से है। बस एक धुन थी मुझको यहाँ पहुँचने की, और [illegible] में पता भी न चला कि कब यह सफ़र तय हुआ। थोड़ी बहुत

को मालूम करने में हुई वरना मैं दोपहर को यहाँ पहुँच जाती। रास्ते में बहुत से स्थानों पर भटकना पड़ा। लखनऊ से बरेली तक यही हाल रहा। बरेली से काठगोदाम तक बहुत आसानी से पहुंच गई और काठगोदाम से एक बस का पीछा मैंने कर लिया जो नैनीताल पहुँच रही थी। रास्ते में लोग ताज्जुब से देख रहे थे कि एक बुर्का वाली अकेली मोटर पर उड़ी चली जा रही है।"

उसी वक्त घंटी बजी और सलमा ने रिसीवर लेकर बात-चीत करनी शुरू कर दी। "हैलो लखनऊ ! कौन मुनीर साहब बोल रहे हैं ? आदाब अर्ज़ ! मैं सलमा हूँ।"

मुनीर ने कहा—"मैं खुद आपको इस वक्त टेलीफोन करने वाला था बल्कि इसी इरादे से कोठी आया था कि आपका फोन मिल गया। आज तो ग़ज़ब ही हो गया है, ग़ज़ाला को भी बदमाशों ने ग़ायब कर दिया है।"

सलमा ने कहा—"जी नहीं ग़ज़ाला खुद आई है और खैरियत से पहुँच गई है आप सब को तसल्ली दे दीजिये, लीजिये ग़ज़ाला से बात कर लीजिये।"

ग़ज़ाला ने रिसीवर लेकर कहा—"थोड़ा-सा वक्त है, इसको झाड़ फटकार और ताज्जुब में खत्म न कीजियेगा ? मैं यहाँ खैरियत से पहुँच गई हूँ आप वहाँ सबको तसल्ली दे दीजिये और वहाँ जो काम आप लोग कर रहे हैं उसमें लगे रहें। आज आनन्द साहब भी लापता हो गये हैं या तो बदमाशों के कब्ज़े में आ गये या मालिक जाने उन पर क्या गुज़री ? बहरहाल इस वक्त तक उनका पता नहीं, खुदा ही खैर करे।"

मुनीर ने कहा—"अगर आनन्द आ जाएँ तो एक बार फिर टेलीफोन कर दीजियेगा। चाहे मैं हूँ या न हूँ, मेरी बीवी को खबर कर दीजियेगा। और अगर टेलीफोन न आया तो मैं समझ लूँगा कि वह हज़रत अभी तक नहीं मिले। मैं इसी वक्त नवाब साहब को आपकी ओर से सन्तुष्ट कर दूँगा। उनका बुरा हाल है और हवेली में आपके लिए कोहराम मचा हुआ है। कमाल किया आपने भी ?"

ग़ज़ाला ने कहा—"मेरे खयाल में वह यह कोशिश करेंगे कि खुद भी

अम्मी जान को लेकर नैनीताल आएँ। मगर आप पूरी कोशिश कीजियेगा कि वह रवाना न हों। उनके यहाँ आने से मैं आज़ादी के साथ खोज न कर सकूँगी।"

मुनीर ने कहा—"आज़ादी के साथ खोज तो आप खुदा के वास्ते न कीजिये। अब यहाँ पहुँच गई हैं तो तसल्ली के साथ बैठी रहिये, यहाँ तलाश करने वाले हम लोग मौजूद हैं।"

वक्त खत्म हो गया और टेलीफ़ोन का सिलसिला अलग कर दिया गया तो ग़ज़ाला ने अब तसल्ली के साथ सल्मा के पास बैठकर कहा—"भई इस चाय से काम नहीं चलेगा कॉफ़ी मँगाओ ताकि दिमाग को विचार करने के काबिल बनाया जा सके।" जब तक कॉफ़ी आए ग़ज़ाला ने बेचैनी के साथ कमरे में इधर-उधर टहलना प्रारम्भ कर दिया। आखिर कॉफ़ी के लिए कहकर सल्मा ने वापस आते हुए कहा—"अब यह चहल कदमी क्यों हो रही है? मुझको मालूम है कि सरकार को यहाँ पहुँचने के बाद अब यह फ़िक्र होगी कि किसी तरह जल्दी-से-जल्दी अपनी खोज शुरू कर दें और अपने खोये हुए यूसुफ़ का पता चला लें।"

ग़ज़ाला ने कहा—"इस वक्त तो मुझको यह फ़िक्र है कि आखिर आनन्द साहब क्यों नहीं आये। मैं तो यह प्रोग्राम बनाकर चली थी कि उनही के साथ उस जगह पर बकरियाँ चराने वाले के भेष में जाया करूँगी, मगर यह भी मेरी किस्मत कि उनको भी आज ही ग़ायब होना था।"

सल्मा ने अत्यन्त सोच के साथ कहा—"वाकई आज उस ग़रीब पर भी न जाने क्या गुज़री। मेरी राय तो यह है कि कॉफ़ी वग़ैरा पी लो फिर ज़रा मोटर के अड्डे तक चलें, तुम्हारी गाड़ी भी तो किसी के सुपुर्द करनी है। वहाँ जाकर यह भी पता चल जाएगा कि जिस कार पर वह वापस आया करते हैं वह भी वापस आई है या नहीं।"

ग़ज़ाला ने पूछा—"क्या कोई प्राइवेट कार है या टैक्सी?"

सल्मा ने कहा—"एक टैक्सी तै कर रखी है वह सुबह उनको वहाँ छोड़ आता है और शाम को बकरियाँ एक स्थानीय गड़रिये के सुपुर्द करके उस

टैक्सी पर वह वापिस आ जाया करते हैं।"

ग़ज़ाला ने कहा—"बस तो काफ़ी पीकर मैं अभी चलती हूँ। कम-से-कम टैक्सी वाले से यह तो मालूम हो जाएगा कि वह नैनीताल पहुँचे भी या नहीं? यह भी मुमकिन है कि टैक्सी रास्ते में ख़राब हो, लेकिन इसका फ़ैसला तो अड्डे पर पहुँच कर हो सकता है। अगर टैक्सी ही अब तक न आई होगी तो मेरी गाड़ी मौजूद है हम दोनों चले चलेंगे।"

ये दोनों इसी प्रकार के प्रोग्राम बनाती रहीं कि इतने में काफी भी आ गई। ग़ज़ाला ने दो बिस्कुट पनीर के साथ खाकर कॉफी की दो प्यालियां पीं और फिर ये दोनों कोठी से निकल कर झील के चहुं ओर घूमती हुई मोटरों के अड्डे तक जा पहुंचीं। वहां सबसे पहले तो सलमा ने ग़ज़ाला की गाड़ी एक टैक्सी वाले के हवाले कर दी कि उसकी निगरानी करे और फिर उस टैक्सी को तलाश किया जो आनन्द के किराये पर स्थायी रूप से ले रखी थी। मगर वह भी मौजूद न थी। अतः तय यह पाया कि ये दोनों ग़ज़ाला की गाड़ी में आनन्द को ढूंढने निकलें। अभी ये दोनों इसी इरादे में चली ही थीं कि वह टैक्सी भी आ गई मगर उसमें आनन्द मौजूद न था। सलमा ने बढ़कर टैक्सी वाले से आनन्द के सम्बन्ध में मालूम किया तो उसने कहा—"कि निश्चित् जगह पर आज बाबू का बहुत इन्तज़ार किया मगर जब वह न आये तो वह उस गड़रिये के पास भी गया जिसके पास बकरियां छोड़ी जाती थीं। उससे मालूम हुआ कि वह खुद देर तक इन्तजार करने के बाद उस जगह उनको तलाश करने गया था मगर उसको सिर्फ बकरियां मिल सकीं जो इधर-उधर भटक रही थीं बाबू का उसको भी कोई पता न चला।"

सलमा ने कहा—"उस गड़रिये ने कोई काग़ज तो नहीं दिया है?"

टैक्सी वाले ने कहा—"काग़ज तो मुझको कोई नहीं दिया।"

सलमा ने कहा—"अच्छा तो तुम फ़ौरन हम दोनों को उसके पास ले चलो।"

टैक्सी वाला पैट्रोल डालने के इन्तज़ाम में व्यस्त हो गया तो ज़रा दूर हटकर ग़ज़ाला ने कहा—"काग़ज़ कैसा?"

सलमा ने कहा—"बेवकूफ है वह चरवाहा ! शायद आनन्द उससे यह कहना ही भूल गये हों। आनन्द ने यह तय किया था कि वह रोज सुबह जाकर एक बकरी के गले में एक तावीज़-सा बांध देते थे कि मुझको गिरफ़्तार कर लिया गया है और चलते वक्त उस तावीज़ को खोल लिया करते थे। उन से यह भी तय था कि अगर वह खुद भी खोह की तलाश में जायेंगे तो बकरी के गले में इस तरह का तावीज़ होगा कि मैं खोह के अन्दर जा रहा हूँ। और तय यह था कि वह चरवाहा खुद ही वह तावीज टैक्सी वाले के हवाले कर देगा।"

ग़ज़ाला ने कहा—'मगर मैं गिरफ्तार हो गया' वाला तावीज बांधने का मौका उनको क्योंकर मिल सकता है।"

सलमा ने कहा—"मैं तो कह चुकी हूँ कि यह तावीज़ तो वह हर रोज़ सुबह ही एक बकरी के गले में इसी लिए बांध दिया करते थे कि अगर अचानक गिरफ्तार कर लिये जाएं तो यह तावीज़ बंधा रह जाए और हम लोगों को पता लग सके। रह गया खुद उनका जाना, उसके लिए वह लिख-कर बांध सकते थे। अतः उस तावीज का मिलना अब बहुत जरूरी है।"

टैक्सी वाले ने हार्न बजाया और ये दोनों टैक्सी पर रवाना हो गईं। यह जगह नैनीताल से बहुत ज्यादा दूर नहीं है। आध घन्टे में टैक्सी वहां जाकर ठहर गई जहां उस गड़रिये का मकान था। सलमा और उसके साथ गज़ाला मोटर से उतर कर टैक्सी को मोड़ने के लिए कह कर गड़रिये के यहां जा पहुंची और उससे वह तावीज़ मांगा तो उसको भी जैसे एक दम याद आया और वह चौंक कर बोला—"अरे बीबी मैं यह तो भूल ही गया था। अच्छा ठहरो, मैं अभी वह तावीज ढूंढकर लाता हूँ।" मगर उन दोनों को भला कहां चैन, ये दोनों भी उनके साथ हो लीं और बकरियों के रेवड़ में जाकर आख़िर एक बकरी के गले में तावीज़ बंधा हुआ उनको मिल गया। सलमा ने अत्यधिक बेचैनी के साथ उस तावीज़ को पढ़ा—"मैं गिरफ्तार कर लिया गया।" सलमा ने ग़ज़ाला और ग़ज़ाला ने सलमा का मुंह देखा और दोनो खामोशी के साथ वहाँ से निकलने लगीं तो चरवाहे ने भी कुशलता मालूम जिसका जवाब यों ही टालने के ढंग मे देती हुई दोनो टैक्सी पर आ टैक्स

फिर नैनीताल की ओर चल दी। घर पहुँचकर दोनों ने सिर जोड़कर मशवरा किया तो निश्चय यह किया कि मुनीर साहब को इसी वक्त फिर ट्रंककॉल से सूचना दे दी जाए कि आनन्द भी गिरफ्तार कर लिये गये। अतः इस तरह यह निश्चय हुआ कि जो जगह हम लोगों ने मालूम की है वह है जरूर उस अपराधवृत्ति गिरोह का केन्द्र, और अब पुलिस को अपनी तवज्जह का केन्द्र-विन्दु इसी जगह को वनाना चाहिये।"

सलमा ने कहा—"मेरी राय तो यह है कि अब नवाब साहब बेगम साहिबा और आफ़ताब वगैरह को भी यहाँ बुला लिया जाए और मुनीर से कहा जाए कि वह अब शकूर वग़ैराह के फेर में न पड़ें वल्कि इसी जगह अपनी छानवीन वाकायदा शुरू कर दें।"

ग़जाला ने कहा—"हम लोग यह हालात उन लोगों को वता देंगे। इसके वाद वह हम से ज्यादा अपने कार्य को समझते हैं। अपनी खोज करने का नक्शा वह खुद जो उचित-समझेंगे वना लेंगे।"

इस निर्णय के वाद मुनीर के टेलीफोन का नम्वर ट्रंक से माँग लिया गया। इस वीच में ये दोनों हर प्रकार से सोच-विचार और वहस के वाद इसी नतीजे पर पहुँचीं कि यह खोज वास्तव में हम लोगों को सही मालूम नहीं है और अगर हम लोगों ने यह तलाश शुरू कर दी तो लाभ-प्रद होने की वजाए खतरनाक भी है। आशा के प्रतिकूल टेलीफोन वहुत जल्दी मिल गया और ग़जाला ने खुद मुनीर से वातचीत करके उनको तमाम स्थिति वता दी। मुनीर ने उस वक्त तक तो यह जवाव दिया कि अब इन हालात की रोशनी में हम लोग यहाँ ग़ौर क़रेंगे और जो कुछ निर्णय होगा उससे सुवह तुमको सूचित करेंगे। परन्तु यह वातचीत समाप्त करने के वाद जव ये दोनों रात का खाना खाकर अपने विस्तर पर पहुंच चुकी थीं, टेलीफोन फिर आगा। जिससे मालूम हुआ कि आफ़ताव और मुनीर दोनों इसी वक्त नैनी-ताल के लिए रवाना हो रहे हैं और सुवह होते-होते नैनीताल पहुँच जाएँगे।"

सुलेमान कदर के मुखबिरों[1] से यह बात छिपी न रह सकी कि गज़ाला सहसा गायब हो गई है। कुछ तो इस में नवाब फलक रफ़अत साहब का पागलपन और बेएहतियाती थी कि एक-एक के सामने रोते फिरते थे और कुछ यह घटना भी अपने ढंग से आश्चर्यजनक थी कि यह गजाला, जिसकी परछाईं तक किसी ने कभी न देखी थी, एकदम इस तरह ग़ायब हो जाए। इस सम्बन्ध में जितनी बातें थी सब विचित्र थी। फलक रफ़अत साहब के यहाँ तो सबका यही खयाल था कि जिन बदमाशों ने नसीम और जहानदार मिर्ज़ा साहब को गायब किया है वही आखिर गज़ाला को ले उड़े। परन्तु वहाँ की इस खतरनाक खबर के अतिरिक्त दुनिया की जबान तो कोई रोक नही सकता। जितने मुँह थे उतनी बातें। कोई कहता कि जवान-जहान लड़की को इसीलिए बिठाए रखना बुरा है। कोई बड़ी-बूढ़ी माथे पर हाथ मारकर कहती कि मंगेतर को घर से निकाल दिया और एक गैर लड़के को घर मे घुसेड़ कर रखा गया, इसका आखिर नतीजा ही क्या होता? किसी का यह खयाल था कि लड़की खुद ही हवाईदीदी थी निकल गई किसी के साथ। बहुत-से लाल-बुझक्कड़ो का खयाल था कि न नसीम गायब हुआ है न गजाला, उन दोनो में यही कौल करार हुआ होगा कि पहिले मैं जाता हूँ, फिर तुम भाग निकलना। एक आध गैर-जिम्मेदार आदमी ने तो यहाँ तक कह दिया कि मैंने खुद नसीम के साथ एक बुर्कापोश लडका को स्टेशन पर देखा था। खुदा बहाने दे इस दुनिया को, किसी की इज्जत उतारने का, फिर कब मानते हैं। खैर, ये

[1] गुप्तचर।

तो गैर थे। सुलेमान कदर साहब जो उस लड़की के चचाज़ाद भाई भी थे और जिनकी उन्नति का ज़रिया यही लड़की बन सकती थी, जिस फख के साथ ग़ज़ाला के गुम होने की दास्तान कहते या सुनते थे उसका तो कोई जवाब ही न था तथापि इस वक्त दिलबर की मौजूदगी में अपने दोनों नेकी-बदी बल्कि दोनों सिर्फ बदी के फ़रिश्तों के सामने ग़ज़ाला के गुम होने की हँसी उड़ा रहे थे—"भई दुलारे मिर्जा ! तुमको मेरी कसम, पता तो चलाते कि यह बेग़म साहिबा आखिर तशरीफ कहाँ ले गई ?"

दिलबर ने मुँह चिढ़ाते हुए मानो जलकर कहा—"हाय, हाय ! दुश्मनों का कैसा बुरा हाल है और क्यों न होता, मंगेतर जो ठहरीं। इसी जबान से लानत भी भेजते जाते हैं और फिर बेकरारी का यह हाल है। मुझको इसी, दिल में कुछ जबान पर कुछ से नफ़रत है।"

सुलेमान कदर ने अत्यन्त घृणा के साथ कहा—"अजी अस्त ग़फर अल्लाह ! मेरी बला हो बेकरार। मैं तो इसलिए पूछ रहा हूँ कि उन मोहतरिम व मुअज्जम जनाब नवाब फलक रफअत साहब बहादुर की मूँछों के ताओ की हालत का अन्दाजा करूँ।"

अग़ान साहब ने कहा—"हुजूर माफ कीजियेगा। वह आपके चचा हैं, मगर उनकी गैरत का अन्दाज़ा तो आपको उसी दिन हो जाना चाहिये था जब एक गैर-नौजवान उनकी साहबजादी को कलेजे से लगाकर आग से निकालकर ले गया और फिर उसी नौजवान को वह हवेली में उठा लाए।"

दुलारे मिर्जा ने उस ज़हर को और तेज किया—"और आपकी भी परवाह न की। यहाँ तक कि आप से भी यह असज्जनता का रवैया बरदाश्त न हुआ।"

अग़ान साहब ने कहा—"नसीम को अपने घर में लाकर रखने का मकसद यह था कि साहबजादी को इश्क के मदरसे में मुहब्बत का सबक लेने का मौका दिया जाए।"

दिलबर ने कहा—"तथापि अब वह शिक्षित होकर और उद्देश्य प्राप्त करके कालिज से निकल गईं।"

दुलारे मिर्जा ने अनुमोदन किया—"अहा हा ! क्या बात कही है दिलबर जान साहिबा ने ? सुब्हान अल्लाह ।"

सुलेमान कदर ने अत्यन्त गम्भीरता से कहा—"ताज्जुब मुझको सिर्फ यह है कि वह लड़की देखने में ऐसी मालूम न होती थी । बेहद गम्भीर और लिये-दिये रहने वाली लड़की, उससे यह उम्मीद कम-से-कम मुझको न थी ।"

दिलबर ने जलकर बल खाते हुए कहा—"साफ बात कहूँगी तो आपके माथे पर बल पड़ जायेंगे । बुराई तो हमारी जाति में है । खुदा जाने किन मजबूरियों से मजबूर अपने को नीलाम पर चढ़ाए रहते हैं । नतीजा यह कि अब न हमारा दिल मानो दिल कहे जाने का इच्छुक होता है न हमारी मुहब्बत मुहब्बत कही जा सकती है । हम पूजा-पाठ करें तो दुनिया हँसे, हम किसी को चाहें तो मक्कार कहलाएँ, हम सीधे रास्ते पर आना चाहें तो दुनिया शक करे, हम सच बोलें तो उसको झूठ से ज्यादा खतरनाक समझा जाए, हालाँकि जो हमारा तबका खुल्लम-खुल्ला कर रहा है वही बड़े-बड़े इज्जत और शराफत के दावेदार घरानों में हो रहा है मगर उस पर हजारों पर्दे डालने की कोशिश की जाती है इसलिये कि बारह हाथ जो नाक लगा रखी है ना, वह जो गिर पड़ती है ।"

अग्गन साहब ने हँसकर कहा—'शाबाश ! आज तो लेक्चर देना शुरू कर दिया । बोलो श्रीमती दिलबर बाई की जय ।"

दिलबर ने अपने जोश के प्रवाह में कहा—"मैं मजाक नहीं कर रही हूँ अग्गन साहब ! जरा समझने की कोशिश कीजिये और राम लगती कहिये कि झूठ कह रही हूं या सच । नवाब फलक फरअत साहब की लाड़ली ने जो कुछ किया है उस पर आज सबको ताज्जुब है और उसको तरह-तरह का रंग देने की कोशिश की जा रही है । इसलिये कि वह चूँकि एक शरीफ खानदान की लड़की है । जिनके सीने में न उस गोश्त और खून का दिल है जिस गोश्त और खून का दिलबर के सीने में धड़क रहा है । न उनकी आँखों में वह रोशनी जो रोशनी दिलबर को दुनिया देखने के लिये दी है । उनके हिस्से में तो है दिल, दिल की हर खूबी, जवानी, जवानी की हर उमंग,

हरेक दृश्य की जगह मानो बस शराफत दे दी गई थी कि लो बीबी इसी को ओढ़ो और इसी को बिछाओ और हमको शराफत की बजाए ये सब चीजें इसलिए मिली थीं कि हम शराफत को लूटते और लुटाते फ़िरें। अगर आज इसी तरह मैं भाग निकली होती तो किसी को ताज्जुब न होता। इसलिये कि तवायफ तो तवायफ़ है। मगर नवाब साहब की साहबजादी का ग़ायब हो जाना आश्चर्य का विषय है। खुद हमारे नवाब साहब फरमा रहे हैं कि मुझको उससे यह उम्मीद न थी। क्यों उम्मीद न थी आखिर ? क्या वह औरत नहीं है, जवान नहीं है, खूबसूरत नहीं है, फिर आखिर कौन-सा सुरखाब का पर लगा है उसमें, कि आपको उससे यह उम्मीद न थी।"

सुलेमान कदर ने कहा—"आज तो साहब आप बिलकुल कौमी लीडर बनी हुई हैं। मेरा मतलब तो सिर्फ यह था कि हमारे घराने में तो यह पहली घटना हुई है और वाकई यह नवाब साहब के लिए डूब मरने की बात है।"

दिलबर ने कहा—"फिर वही, आखिर आप यह स्वीकार क्यों नहीं करते कि यह पहली घटना है जो इस तरह खुल गई वरना ढके-छिपे खुदा जाने कितनी घटनाएं हुआ करती हैं जिनके बाद भी शराफत अपनी जगह शराफत ही रहा करती है। आप लोग आखिर साफ यह क्यों नहीं कहते कि हम चाहे कितनी ही शराफत की तरफ झुकें, कैसी ही सीधी राह, वफादारी, सच्चाई और ईमानदारी क्यों न अख्तियार करें मगर आप लोगों को हमारी इन अच्छाईयों का कभी यकीन नहीं आ सकता, और आपकी बहू-बेटियाँ चाहे कैसी ही क्यों न हों, उनके बारे में आप हमेशा झूम-झूमकर यही कहते हैं कि—

'ऐ माँओ, बहिनो, बेटियो,
दुनिया की इज्जत तुम से है।'

दुलारे मिर्जा ने ताली बजाकर कहा—"हेयर, हेयर।"

दिलबर अपनी रौ में कहती ही चली गई—"बात यह है कि शराफत का लेबल लगाकर हर नीच हरकत करते चले जाइये शराफत पर कोईआँच

नहीं आ सकती। और अगर हम मर भी जाएँगे तो कलंक का टीका हमारे माथे से कभी नहीं छूट सकता।"

सुलेमान कदर ने घबरा कर कहा—"साहब वल्लाह है, आपका तो यहाँ कोई जिक्र ही न था। आपका और उनका मुकाबला मैंने कब किया ?"

दिलबर ने बनते हुए कहा—'चे निस्बत साक, रा बा आलम पाकं' मेरा और उनका मुकाबला ही क्या। वह भागकर शरीफ-की-शरीफ हैं और मैं आपके लिये मर भी जाऊँ, गैर मर्द की परछाईं तक से परहेज करूँ, तो भी नाम है मेरा बाजारी औरत। घरेलू औरत बाजार में जाकर भी घरेलु रहती है और बाजारी औरत घर बैठकर भी बाजारी ही कहलाती है नवाब साहब।"

आगन साहब बोले—"आप तो खैर इस बात पर जली-कटी सुना रही हैं कि निकाह के मामले में हमारे नवाब साहब ने आनाकानी की थी। मगर मैं ग़जाला के इस फरार होने को एक महत्व भी दे रहा हूँ कि यह श्रीमती कहीं अपने प्रेमी की तलाश में जोगन बन कर तो नहीं निकली हैं ?"

उसी वक्त शकूर दिलबर के लिए एक किश्ती में ताजा फल लेकर आ गया और मेज पर रखकर मक्खियाँ झलने के बहाने से खड़ा हो गया। दिलबर ने उन फलों की तरफ नजर उठाकर भी न देखा यद्यपि उनका यह वक्त फल खाने के लिये बेचैन हो जाने का हुआ करता है। आखिर सुलेमान कदर ने खुद ही चन्द अंगूर लेकर दिलबर के मुँह की तरफ बढ़ाए तो दिलबर ने मुँह फेरते हुए कहा—"खुदा की कसम नवाब साहब ! मुझे तो आज इस बात का यकीन हुआ कि तुम्हारा दिल अभी तक उसी लड़की की तरफ खिंच रहा है जो खानदान-भर की नाक काटकर चलती बनी। और मुझे तो यह भी यकीन नहीं है कि वह नसीम की तलाश में निकली होगी। न जाने वह किसके साथ नौ-दो ग्यारह हो गई। अब तुम बैठे सोग मनाया करो।"

सुलेमान कदर ने कहा—"लाहौल विला कूवत। तुम्हारे सिर की कसम जिसको उस नीच का खयाल भी हो, बल्कि मैं तो मालिक का शुक्र अदा करता हूँ कि आज मैं उन बेग़ैरतों से अलहदा हूँ वरना मैं अपने चचा साहब की

---

[1]कहाँ पाँव से ठुकराई जाने वाली धूल और कहाँ संसार की पवित्रता।

सब ? छूटे गाँव से नाता क्या ? जले जा रहे हैं कि······मेरी दिल की प्यारी कैद में सही; मगर प्रतिद्वन्दी के पास पहुँच जाएगी। जी चाहता होगा कि गिरफ़्तार करके उसको आपके पास रखा जाए।"

सुलेमान कदर ने कहा—"दिलबर जान ! तुम्हारी कसम यह बात नहीं है। मैं हज़ार मर्तबा तुमको यकीन दिला चुका हूँ कि मैं अब तुम्हारा हूँ अब तुम्हारा हुआ। मेरा मतलब तो यह था कि मैं वाकई यह गवारा नहीं कर सकता कि ग़ज़ाला और नसीम को कभी भी मिलना नसीब हो।"

दिलबर ने आँखों में आँखें डालकर कहा—"क्यों, आखिर क्यों ? जलन है ना, जब तुम से कोई मतलब ही नहीं तो फिर तुम्हारी बला से।"

सुलेमान कदर ने गर्दन झुकाकर कहा—"अच्छा साहब न सही, जो तुम्हारी मर्ज़ी। वाकई जब मुझको मतलब ही नहीं तो बेकार में यह कह रहा हूँ।"

मग्गन साहब बोले—"ग़ज़ाला की और सलमा अन्सारी की गिरफ़्तारी बेहद ज़रूरी है और इस सम्बन्ध में मुझको जल्दी-से-जल्दी यह खबर तिवारी को भिजवानी है कि ये दोनों कहाँ हैं। मेरा दिल गवाही दे रहा है कि ग़ज़ाला ज़रूर सलमा अन्सारी के यहाँ पहुँच गई होगी, बल्कि जिस तरह आनन्द उस जगह तक पहुँच गया था क्या जाने कि और लोग भी वहाँ मौजूद हों।"

सुलेमान कदर ने कहा—"भई यह तो तै है कि एक न एक दिन पता तो ये लोग चला ही लेंगे।"

मग्गन साहब ने कहा—"सुब्हान अल्लाह ! क्या बच्चों का खेल है पता चलाना ? ऐसे-ऐसे बहुत-से लौंडे देखे हैं। हाँ यह ज़रूर है कि उन तलाश करने वालों को कम करने का सिलसिला बराबर जारी रहना चाहिये। इन्शा अल्लाह ! आज ही कल में ग़ज़ाला बेग़म हमारे कब्ज़े में आ जायेंगी।"

दुलारे मिर्ज़ा ने फिर सब का ध्यान फलों की किश्ती की तरफ़ आकर्षित किया और ये लोग फल खाने में व्यस्त हो गये। मग्गन साहब अलबत्ता पहले तो देर तक सोचते रहे इसके बाद नवाब सुलेमान कदर से इजाज़त लेकर चले गये। उनको अब यही फ़िक्र थी कि किसी तरह तिवारी तक यह सूचना शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जावे कि ग़ज़ाला और सलमा अन्सारी नैनीताल में मौजूद हैं।

१६

आफ़ताब और मुनीर दोनों स्टेशन के रेस्तरां में शकूर की इन्तज़ार में थे। इस वक्त इसी जगह मिलने का वादा था, वैसे यह दोनों आज ही नैनीताल के लिए जाने वाले थे और चूंकि ख़याल यह था कि सड़क पर मुमकिन है मोटरों की निगरानी की जा रही हो, अतः ये दोनों रेल से जा रहे थे। इस वक्त इन दोनों में यही बहस हो रही थी शकूर पर आख़िर कब तक भरोसा किया जाए। खैर, भरोसा तो उस पर सोहला आना था मगर सवाल यह था कि पुलिस की सीधी कार्यवाई को आखिर कब तक रोक कर इस बात का इन्तज़ार किया जाए कि वह तावीज़ ग़ायब करने में कामयाब हो जायेंगे। खास तौर से ऐसी हालत में यह इन्तज़ार बेहद तकलीफदेह था कि बदमाशों की हयफेरियां दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थीं। आनन्द की गिरफ़्तारी के मायनी यह थे कि खोज करने वाले सब ही खतरे में हैं। किन्तु यह खयाल भी ठीक था कि पुलिस की सीधी कार्यवाही का नतीजा क्या हो सकता था ? यह निश्चित था कि बदमाशों का प्रधान कार्यालय तो नैनीताल के रास्ते में है, परन्तु उस तक पहुंचना बच्चों का खेल न था। रह गई यह तरकीब कि अग़ान साहब, दुलारे मिर्ज़ा और सुलेमान कदर वगैरह को पकड़ लेने के सिवाय इसके कुछ हासिल नहीं हो सकता कि उधर नसीम, जहानदार मिर्जा और आनन्द पर ज्यादा सख्ती शुरू हो जाएगी। यदि नैनीताल के रास्ते वाले बदमाशों की खोह को घेर भी लिया जाए तो उसके अन्दर पहुंचने की क्या तरकीब हो ? पुलिस हो या फौज यों तो खोह को उधेड़ कर रख दिया जाए, मगर सन्देशा यही था कि इस तरह नसीम को कोई नुकसान न पहुंच

जाए। ये लोग इसी सोच-विचार में तल्लीन थे कि शकूर ने वायदे के मुताबिक पहुंच कर सलाम करते हुए कहा—मुबारक हो हुज़ूर ! खुदावन्द करीम ने मुझको आखिर वचन निभाने का मौका दिया।"

मुनीर ने बेचैनी के साथ कहा—"तावीज मिल गया ?"

शकूर ने होठों पर उंगली रख कर कहा—"दीवार के भी कान होते हैं अब यहाँ से तशरीफ ले चलिये। प्लेटफार्म नम्बर पाँच पर बिल्कुल सन्नाटा है इस वक्त।"

ये दोनों शकूर के साथ हो लिये। प्लेटफार्म नम्बर पाँच पर पहुँच कर शकूर ने बताया कि उसकी बीवी को किस प्रकार इस तावीज के प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई। मालूम हुआ कि यह तावीज़ सबिहा ने एक सोने के लॉकेट में पहन रखा था। इत्तफाक से आनन्द की गिरफ्तारी के विषय में बातें हो रही थीं कि सबिहा के मुँह से निकल गया कि एक नहीं हजार जासूस सिर मारें, जब तक यह कुञ्जी मेरे पास है उस वक्त तक कोई वहाँ पहुंच नहीं सकता। शकूर ने कहा—"मेरी बीवी ने कुञ्जी का इशारा लॉकिट की तरफ देख लिया और खुश किस्मती से आज ही जब कि सबिहा नहाने गई थी उसने लॉकेट से यह तावीज़ निकाल कर बहुत एहतियात के साथ उसकी नकल कर ली, ताकि सबिहा तक को शक न हो और वह अपना तावीज अपनी जगह पाकर सन्तुष्ट रहे। मुनीर ने शकूर के हाथ से तावीज की नकल लेकर देखना शुरू की। आफ़ताब भी उसके कंधे पर झुके हुए थे। कागज खोलकर देखा गया तो वह कुछ विचित्र प्रकार की संख्या, पद और रेखाओं का गोरख-धन्धा था।

इतवार—आहिस्ता बर्ग गुल बाफशां बर मज़ारमा*।' (साँप की तसवीर) उंगली का इशारा ऊपर की तरफ-तीस कदम उत्तर।

सोमवार—जल-तरंग—आपके पाँव के नीचे दिल है (साँप की तसवीर) उंगली का इशारा नीचे की तरफ ४० कदम दक्षिण।

मंगल—उग रहा है दरोदीवार पर सब्जा‡ गालिब। (साँप का चित्र)

*उस मज़ार पर फूल-पत्ते खिले हुए हैं। ‡चारों तरफ़ हरियाली है।

१६

आफ़ताब और मुनीर दोनों स्टेशन के रेस्तराँ में शकूर की इन्तज़ार में थे। इस वक्त इसी जगह मिलने का वादा था, वैसे यह दोनों आज ही नैनीताल के लिए जाने वाले थे और चूँकि ख़याल यह था कि सड़क पर मुमकिन है मोटरों की निगरानी की जा रही हो, अतः ये दोनों रेल से जा रहे थे। इस वक्त इन दोनों में यही बहस हो रही थी शकूर पर आख़िर कब तक भरोसा किया जाए। खैर, भरोसा तो उस पर सोहला आना था मगर सवाल यह था कि पुलिस की सीधी कार्यवाई को आखिर कब तक रोक कर इस बात का इन्तज़ार किया जाए कि वह तावीज़ ग़ायब करने में कामयाब हो जायेंगे। खास तौर से ऐसी हालत में यह इन्तज़ार बेहद तकलीफदेह था कि बदमाशों की हथफेरियाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थीं। आनन्द की गिरफ़्तारी के मायनी यह थे कि खोज करने वाले सब ही खतरे में हैं। किन्तु यह खयाल भी ठीक था कि पुलिस की सीधी कार्यवाही का नतीजा क्या हो सकता था ? यह निश्चित था कि बदमाशों का प्रधान कार्यालय तो नैनीताल के रास्ते में है, परन्तु उस तक पहुँचना बच्चों का खेल न था। रह गई यह तरकीब कि अग़ान साहब, दुलारे मिर्ज़ा और सुलेमान कदर वगैरह को पकड़ लेने के सिवाय इसके कुछ हासिल नहीं हो सकता कि उधर नसीम, जहानदार मिर्ज़ा और आनन्द पर ज्यादा सख्ती शुरू हो जाएगी। यदि नैनीताल के रास्ते वाले बदमाशों की खोह को घेर भी लिया जाए तो उसके अन्दर पहुँचने की क्या तरकीब हो ? पुलिस हो या फौज यों तो खोह को उधेड़ कर रख दिया जाए, मगर सन्देशा यही था कि इस तरह नसीम को कोई नुकसान न पहुँच

जाए। ये लोग इसी सोच-विचार में तल्लीन थे कि शकूर ने वायदे के मुताबिक पहुंच कर सलाम करते हुए कहा—मुबारक हो हुजूर ! खुदावन्द करीम ने मुझको आखिर वचन निभाने का मौका दिया।"

मुनीर ने बेचैनी के साथ कहा—"तावीज़ मिल गया ?"

शकूर ने होंठों पर उंगली रख कर कहा—"दीवार के भी कान होते हैं अब यहाँ से तशरीफ ले चलिये। प्लेटफार्म नम्बर पाँच पर बिल्कुल सन्नाटा है इस वक्त।"

ये दोनों शकूर के साथ हो लिये। प्लेटफार्म नम्बर पांच पर पहुँच कर शकूर ने बताया कि उसकी बीवी को किस प्रकार इस तावीज़ के प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई। मालूम हुआ कि यह तावीज़ साबिहा ने एक सोने के लॉकट में पहन रखा था। इत्तफाक से आनन्द की गिरफ़्तारी के विषय में बातें हो रही थी कि सबिहा के मुँह से निकल गया कि एक नहीं हज़ार जासूस सिर मारें, जब तक यह कुन्जी मेरे पास है उस वक्त तक कोई वहाँ पहुंच नहीं सकता। शकूर ने कहा—"मेरी बीवी ने कुन्जी का इशारा लॉकिट की तरफ देख लिया और खुश किस्मती से आज ही जब कि सबिहा नहाने गई थी उसने लॉकट से वह तावीज़ निकाल कर बहुत एहतियात के साथ उसकी नकल कर ली, ताकि सबिहा तक को शक न हो और वह अपना तावीज़ अपनी जगह पाकर सन्तुष्ट रहे। मुनीर ने शकूर के हाथ से तावीज़ की नकल लेकर देखना शुरू की। आफ़ताब भी उसके कंधे पर झुके हुए थे। कागज़ खोलकर देखा गया तो वह कुछ विचित्र प्रकार की संख्या, पद और रेखाओं का गोरख-धन्धा था।

इतवार—आहिस्ता बर्ग गुल बाफशाँ बर मज़ारमा*।' (साँप की तसवीर) उंगली का इशारा ऊपर की तरफ़-तीस कदम उत्तर।

सोमवार—जल-तरंग—आपके पाँव के नीचे दिल है (साँप की तसवीर) उंगली का इशारा नीचे की तरफ ४० कदम दक्षिण।

मंगल—उग रहा है दरोदीवार पर सब्ज़ा‡ ग़ालिब। (साँप का चित्र)

*उस मज़ार पर फूल-पत्ते खिले हुए हैं। ‡चारों तरफ़ हरियाली है।

उंगली का इशारा नीचे की तरफ़ा बीस कदम उत्तर-पूरब।

बुध—बिच्छू की तसवीर— अख्तरे-वक्त सहर महर दर मयखाना* है।' तीर का निशान—उत्तर दक्षिण की तरफ़ ऊपर ८ फुट। सांप की तसवीर।

वृहस्पतिवार—'वह मेरी तरफ बढ़ा दे गुलचीं**

जिन फूलों में रंग है न बू है।'

सांप की तसवीर, तीर का आधा निशान। दक्षिण चार गज़।

शुक्र—एक सौ अस्सी जबां दहन*** में है बेताब गुफ़्तगू के लिए—१४ × ७० दक्षिण-पूरब।

सप्ताह—जलवाए हुस्न चिराग़ दामां निकला****। तीन तरफ सांप की तसवीर, उंगली का निशान, ऊपर की तरफ चार गज़ पश्चिम।

इतवार—सांप की तसवीर, तीर का रुख पश्चिम की ओर, कुछ दक्षिण की ओर झुका हुआ। दस कदम उतार पांच कदम चढ़ाव—

एक मयकदा है चश्म फ़सूंगर लिये हुए।"†

मुनीर और आफ़ताब दोनों के साथ शकूर ने देर तक उस गोरखधन्धा को देखा और कुछ न समझने पर आखिर मुनीर से हंसकर कहा—"यह तो अजीब मुसीबत है आसानी से समझने की चीज़ नहीं है।"

आफ़ताब ने कहा—"और न यहां बैठकर समझी जा सकती है। इसके ९ जरूरत इस बात की है कि हम लोग मौके पर हों और हमारे पास यह पहली हो।"

शकूर ने कहा—"बात यह है हजूर कि अब मेरा काम तो खत्म हो गया, इससे ज्यादा न मुझको उनके यहां से कुछ मिल सकता है और न इससे ज्यादा काम की कोई चीज उनके पास होगी, अतः अब अगर इजाजत दें तो मैं उनके यहां से ग़ायब हो जाऊं?"

मुनीर ने कहा—"आखिर क्यों ग़ायब हो जाओ? तुम्हारे ऊपर न कोई

---

*सुबह का सूरज और चांद-सितारों के पीछे मधुशाला है। **माली। ***मुंह। ****सौन्दर्य का प्रकाश फैलाने वाला दीपक पांव के नीचे ही निकला। †आंखों को जादू में डालने वाली मधुशाला।

शक है न तुम्हारी बीवी पर कोई शुबहा, बस तुम बेफिक्री के साथ पड़े रहो उनके यहाँ, शायद कोई काम की बात मालूम हो जाए।"

ठाकुर न कहा—"जैसा आप हुक्म दें। शक तो खैर मुझ पर या मेरी बीवी पर उनको आखिर दम तक नहीं हो सकता। नवाब साहब बेचारे के पास तो खैर अक्ल है ही नहीं किन्तु उनके दोनों गुरगों के पास भी जो अक्ल है उसको चुराने के लिए आपका यह गुलाम काफ़ी है। हाँ, अगर आप मेरी राय मानें तो अपना ध्यान नैनीताल की तरफ करें। आज ही कल में ग़ज़ाला बीबी और कोई हैं सलीम या सलमा, उनको भी गिरफ़्तार कर लिया जाएगा।"

मुनीर और आफताब दोनों ने चौंक कर कहा—"अच्छा ?"

ठाकुर ने शुरू से आखिर तक सब बातें सुना दीं जो सुलेमान कदर दिलबर, मम्मन साहब और दुलारे मिर्ज़ा के बीच हुई थीं और यह भी बता दिया कि उस समूह में जो बातें ग़ज़ाला बीबी के सम्बन्ध में उन नीचों ने की हैं उस वक्त मुझको कैसे-कैसे खून के घूँट पीकर सहन करना पड़ा है। इस लिए मैं चाहता हूँ कि मुझको जल्दी-से-जल्दी वहाँ से हट जाना चाहिए, खुदा जाने मैं कल सहन न कर सकूँ। ये सब बातें सुनने के बाद मुनीर ने कहा—"मौलाना आफताब इसका मतलब यह हुआ कि इस वक्त चलने का प्रोग्राम मुलतवी कर दें।"

आफ़ताब ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा—"वे खुश, यानी वहाँ गज़ाला और सल्मा की गिरफ्तारी के मनसूबे हो रहे हैं और आप इस वक्त चलने का प्रोग्राम कैंसिल कर रहे हैं।"

मुनीर ने कहा—"फिर वही बेवकूफी की बात। आपने कुछ दिनों से अपने को अक्लमन्द समझना इस तेजी के साथ शुरू कर दिया है कि बहुत तेज़ी के साथ बेवकूफ बनते चले जा रहे हैं। भाई साहब अब ज़रूरत इस बात की है कि हम अब इस तरीके पर चलें—हमारे साथ ऐसा सामान होना चाहिए कि हम वहाँ पहुँच कर नैनीताल-पुलिस की पूरी मदद लेकर उस खोह को घेर सकें। अब सीधी कार्यवाही का वक्त आ गया है। जासूसी की मंजिल

गुज़र गई और अब हमको ऐलानिया मुकाबले पर आ जाना है ।"

आफ़ताब ने कहा—"बेवकूफ़ों को अक्लमन्द ही बेवकूफी से छुटकारा दिला सकते हैं अतः कम-से-कम मुझे यह तो बता दीजिए कि क्या सीधे कार्यवाही करने से अब नसीम के लिए कोई खतरा न होगा ?"

मुनीर ने कहा—"मेरे ख्याल में तो न होना चाहिए, वजह यह है कि उस खोह के लोगों को यह विश्वास रहेगा कि हम चाहे कैसा ही बाहरी कोशिश क्यों न करें बकील अग़ान साहब के सिर फोड़ डालें तो भी खोह के अन्दर नहीं पहुँच सकते । यह शुबहा उस सूरत में हो सकता है कि मैं अग़ान साहब, दुलारे मिर्ज़ा, सबिहा, दिलबर और सुलेमान कदर को यहां गिरफ़्तार कर लेता । परन्तु मैं इन लोगों को बिलकुल छूना नहीं चाहता । इसीलिए शकूर को मजबूर कर रहा हूँ कि वह बराबर सुलेमान कदर के यहाँ और उसकी बीबी दिलबर के यहाँ काम करती रहे ताकि उन लोगों को किसी किस्म का शुबहा न हो सके और हम लोग अपनी चढ़ाई बाकायदा शुरू कर दें । इस सम्बन्ध में मुझको हुक्कार-आला से मशवरा भी करना होगा ताकि मैं उस चढ़ाई पर नियमपूर्वक रवाना हो सकूं ।"

आफ़ताब ने कहा—"और अगर इस बीच में ग़ज़ाला और सलमा गिरफ़्तार कर ली गई तो ?"

मुनीर ने कहा—"तो भी कोई हर्ज नहीं है। आखिर ले कहा जायेंगे, उसी खोह में जिसकी कुँजी अब हमारे पास है ।"

आफ़ताब ने कहा—"वह कुंजी जिसके सिर-पैर की भी हम को खबर नहीं है ।"

मुनीर ने कहा—"भाई मेरे ! खबर तो गौर करने के बाद होगी । पहली ही नजर में आप मामूली बच्चों की पहेली तक तो समझ नहीं सकते फिर यह तो बदमाशों की तमाम चालाकियों की चित्रावली है । ज़रा तसल्ली से सिर जोड़कर बैठेंगे तो खुद अक्ल के दरवाजे खुलना शुरू हो जाएँगे, आप ज़रा दम तो लीज़िए ।"

यह कह कर मुनीर ने शकूर को फ़ौरन चलता कर दिया कि तुम जाकर

पहले ही की भाँति सुलेमान कदर के यहाँ रहो और अगर कोई खास बात मालूम हो, जिसको तुम हम लोगों तक पहुँचाना चाहते तो मेरे बंगले पर जाकर मेरी बीवी से कह दिया करना मैं उन से रोज़ाना टेलीफोन पर बात किया करूँगा। हम दोनो आज ही रात तक नैनीताल के लिए चल देंगे या ज्यादा से ज्यादा कल सुबह तक। अब किला जीतने के बाद ही मुलाकात होगी। शकूर को विदा करके ये दोनो स्टेशन के बाहर आए और टैक्सी पर सीधे कोतवाली गये। मुनीर ने आफ़ताब को अपने कमरे मे बिठा कर खुद अपने अफ़सर आला की तरफ चल दिया। इस बीच में आफ़ताब ताज़ा अखबार की खबरों को, एडीटोरियल को, हद यह है कि इश्तिहारों तक को पढ गए परन्तु मुनीर वापस न आया। हां, थोड़ी देर के बाद उनके अरदली ने लैमन स्क्वैश लाकर पेश कर दिया कि साहब ने भेजा है। वह एस० पी० साहब के कमरे में बैठे हुए काम कर रहे हैं। आफ़ताब ने लैमन स्क्वैश के बाद कमरे में पहले तो यों ही टहलना शुरू कर दिया, फिर फर्श के चौकों को कदमों से गिना, फिर शतरंज के घोडे की चाल उन चौकों पर चलने का अभ्यास किया। कुछ डाक्टर इकबाल के अशआर गुनगुनाए, जिगर की गज़ल सीटी पर गाकर खत्म कर दी और इनसान तथा भगवान् के मामले पर देर तक गौर करते रहे। मुनीर का पेपरवेट नचाते रहे और आखिर एक अँगड़ाई लेकर एक आराम कुर्सी पर ऊँघने की कोशिश मे सफल होने ही वाले थे कि मुनीर ने कमरे में आकर कहा—"माफ करना, बड़ी देर कर दी मैंने, मगर काम ही ऐसा था। एस० पी० साहब को तमाम हालात से जानकारी कराना, फिर उनकी सलाह लेना, जाने का इन्तज़ाम करना, संक्षिप्त यह कि मैं अब बिलकुल तैयार हूँ चलने के लिए। मेरी राय यह है कि जनाब को तो मैं छोड़ दूँ दौलतखाने पर और खुद ग़रीबखाने पर जाकर ज़रा सामान ठीक कर लूँ। निश्चय यह हुआ है कि हम लोग ट्रेन से नहीं बल्कि पुलिस की कार मे जाएँगे। हमारे साथ ट्रक पर एक पूरा दस्ता होगा पुलिस का।"

आफ़ताब ने कहा—"और चलेंगे किस वक्त ?"

मुनीर ने कहा—"बस कोई दो घण्टे बाद।"

मुनीर ने अपनी कार पर आफ़ताब को उनके घर छोड़ा और अपने घर की तरफ हो लिये। दो घण्टे के बाद ये दोनों एक कार में और पीछे-पीछे पुलिस-ट्रक नैनीताल की तरफ चल दिये। इस वक्त उन दोनों के बीच न तो उस चढ़ाई की कोई चर्चा थी न कोई गम्भीर वार्तालाप, बल्कि बहुत आराम से टेक लगाये हुए अपने खयाल में अख्तरी बाई फैज़ाबादी बने हुए—"अब कि सौतन घर न जा' गा रहे थे और मुनीर दाद देते जाते थे।

मुनीर ने एक बार दाद देते हुए कहा—"आपके इस संगीत से कम-से-कम यह राज़ तो खुल गया कि गाना क्यों हराम किया गया है?"

आफ़ताब ने हँसकर कहा—"मेरी खुरदरी आवाज़ पर ग़ौर न कीजिये बल्कि कला की हैसियत से देखिये।"

मुनीर ने कहा—"चुग़द हैं आप। हमारी जमाअत में वेसुरे तो सिद्ध हुए हैं रिज़वी, मगर आज मालूम हुआ कि आपका दम भी ग़नीमत है।"

कार फर्राटे भर रही थी और अब आफ़ताब की बजाए डी० एस० पी० साहब संगीत का चालान कर रहे थे।

१७

खोह की बस्ती के नसीम वाले कमरे में इस वक्त आनन्द बैठे हुए चहक रहे थे। इस बीच में नसीम ने आनन्द और तिवारी के सम्बन्ध इस हद तक स्थापित करा दिये थे कि आनन्द ने अपना भावी प्रोग्राम ही यह बना लिया था कि नसीम अगर आज़ाद भी हो गये तो भी मैं इसी खोह में रहूँगा। जहाँ दुनिया का कोई ग़म इनसान के पास नहीं आ सकता और तमाम सुख जिनके लिए इनसान को खुदा जाने क्या-क्या परिश्रम करना पड़ता है स्वयं ही इस तरह प्राप्त हो जाते हैं मानो इस खोह की जनता हमारे बाप दादा की कर्ज़दार भी है और अत्यन्त सज्जनता के साथ एहसानमन्द भी। हद यह है कि आपके जीवन की आवश्यकताओं में सबसे मुख्य आवश्यकता यानी ब्रिज खेलना आपको यहाँ बहुत आसानी से प्राप्त हो गया। खुद तिवारी को ब्रिज का बड़ा शौक है। नसीम खेल तो लेता है लेकिन ऐसा दीवाना भी न था ब्रिज का कि आनन्द की तरह अगर ब्रिज न खेला जाए तो जिन्दगी में एक कमी सी महसूस होने लगे। ब्रिज के अतिरिक्त आपको एक दूसरा दुख यह हो सकता था कि आमों की फसल में क्यों गिरफ़्तार हुए। इन हज़रत की यही दो कमज़ोरियाँ थीं। आपको दूर से ताश की गड्डी और आम दिखाकर स्वर्ग से नरक में बुलाया जा सकता था। ब्रिज का शौक तो खुद तिवारी को भी, जैसा कि वर्णन किया है बेहद था मगर आम के सम्बन्ध में शौक का सवाल ही नहीं यह तो शराफ़त, इनसानियत बल्कि सज्जन मनुष्यों का भी कथन है कि मनुष्य आम पसन्द करता हो। इस पसन्द के सम्बन्ध में दीवाना तक हो तो कोई आश्चर्य नहीं। वैसे यहाँ बढ़िया-से-बढ़िया आम भी हर संख्या में हर

मौजूद होते है अतः आनन्द के लिए वाकई अब प्रश्न यह था कि खोह से बाहर जाने की कोशिश ही आखिर क्यों की जाए। इस वक्त इसी कैदी और रिहाई पर आनन्द साहब शेरोशायरी फरमा रहे थे। कहने लगे—"क्या शेर कहा है ज़ालिम ने—

'तूने अपना बना के छोड़ दिया।
क्या असीरी* है ' क्या रिहाई है॥'

नसीम ने शेर का आनन्द लेते हुए कहा—"जिगर हैं ना ? क्या कहना है उसका, मगर जनाब को इस वक्त यह शेर क्यों याद आया ?"

आनन्द ने सिगरेट का कश लेते हुए कहा—"मानो आपके निकट एक अच्छे शेर के लिए भी इस बात की आवश्यकता है कि वह मौके महल का पाबन्द हो या आपके खयाल में यह सेवक इतना अहमक साबित हुआ है कि मालूम करने जैसी चीज़ से कोई ताल्लुक ही नहीं रखना सिर्फ़ घटनाओं का इनसान है। भाईजान एक अच्छा शेर हर वक्त याद आ सकता है और उसके याद आने की वजह पूछना निहायत इखलासोज़† और अदब-पास‡ हरकत है।"

नसीम ने हँस कर कहा—"यह अदब-पास बरवज़न नमकपास है या अदब शिकन माइनी में इस्तेमाल किया जाता है ?"

आनन्द से खिन्नतापूर्वक कहा—"लीजिये अब वहां ग्रामर शुरू हो गई !" आपको मालूम है कि शायर के जज़बे की यह तौहीन है कि यह अपनी गुफ़्तगू को आदाबे-गुफ़्तगू का पाबन्द बनाए। लफ्ज़ों की जंजीरें जकड़े। वह तो मोती बखेरता है और उन मोतियों को··· "

नसीम ने वाक्य पूरा किया—"शाह दान्द या बदांन्द जौहरी।"

आनन्द ने जल्दी से कहा—"बिलकुल। दिन-भर में इसी तरह कम-से-कम एक अक्लमन्दी की बात ज़रूर कर लिया करो अच्छी चीज़ होती है अक्ल-मन्दी।"

---

*कैदी। †चरित्र से गिरी हुई। ‡असभ्य।

दरवाजा खुला और तिवारी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"आदाब बजा लाता हूँ।"

आनन्द ने कहा—"वालेकुम आदाब बजा लाता हूँ। मगर यह जनाब गायब कहाँ थे ? ताश के बावन पत्ते अलग-अलग आपकी याद में बेकरार हो चुके हैं।"

तिवारी ने कहा—"आपको शायद मालूम नहीं यह सेवक रात से गायब है। थोड़ी-सी मिठाई के लालच में जिन्दगी तक खतरे में डाल दी, रात की नींद हराम की, ब्रिज कुर्बानी दी, मनोरंजक सोहबत को छोड़ा।"

नसीम ने विस्मयपूर्वक कहा—"मिठाई के लालच में ?"

तिवारी ने कहा—"हाँ साहब ! ज्यादा-से-ज्यादा यही ना कि आप पेट-भर मिठाई खिला देंगे और उसके लिए यह कड़ी मेहनत देखिये।"

नसीम ने आश्चर्यचकित होकर कहा—"मैं मिठाई खिला दूँगा, मुझसे क्या मतलब ?"

तिवारी ने कहा—"और नहीं तो क्या मुझसे मतलब है ? आपके दिल की मुरादें ढूँढने मैं निकलूँ, ढूँढकर लाऊँ और आप जरा सी मिठाई के लिए भी आनाकानी करें।"

आनन्द ने कहा—"इनकी तरफ से बगैर शर्त की मिठाई का मैं वादा करता हूँ।"

तिवारी ने गर्दन हिलाकर कहा—"जी नहीं, यह मुबारकबाद जमानत के काबिल नहीं है। मिठाई का सीधा वादा होना चाहिए किसी वकील की मार्फ़त नहीं। और यह बगैर शर्त की मिठाई कैसी ? यानी चाहे गुड़ की हो या शक्कर की, मिठाई का बगैर शर्त का वादा तो दूसरी चीज है मगर शर्त की मिठाई का वादा दूसरी चीज है।"

आनन्द ने कहा—"साहब यह तो बड़ी मुसीबत है कि आप हजरात मुझ महेरबां* को गूंगा कर देने पर तुले हुए हैं। फिर भी कुछ बताइये तो मनी

*भावी-भावी।

मौजूद होते है अतः आनन्द के लिए वाकई अव प्रश्न यह था कि खोह से बाहर जाने की कोशिश ही आखिर क्यों की जाए। इस वक्त इसी कैदी और रिहाई पर आनन्द साहब शेरोशायरी फरमा रहे थे। कहने लगे—"क्या शेर कहा है ज़ालिम ने—

'तूने अपना वना के छोड़ दिया।
क्या असीरी* है ' क्या रिहाई है॥'

नसीम ने शेर का आनन्द लेते हुए कहा—"जिगर हैं ना ? क्या कहना है उसका, मगर जनाव को इस वक्त यह शेर क्यों याद आया ?"

आनन्द ने सिगरेट का कश लेते हुए कहा—"मानो आपके निकट एक अच्छे शेर के लिए भी इस वात की आवश्यकता है कि वह मौके महल का पावन्द हो या आपके खयाल में यह सेवक इतना अहमक सावित हुआ है कि मालूम करने जैसी चीज़ से कोई ताल्लुक ही नहीं रखना सिर्फ़ घटनाओं का इनसान हैं। भाईजान एक अच्छा शेर हर वक्त याद आ सकता है और उसके याद आने की वजह पूछना निहायत इखलासोज † और अदब-पास ‡ हरकत है।"

नसीम ने हँस कर कहा—"यह अदव-पास वरवज़न नमकपास है या अदव शिकन माइनी में इस्तेमाल किया जाता है ?"

आनन्द से खिन्नतापूर्वक कहा—"लीजिये अव वहां ग्रामर शुरू हो गई !" आपको मालूम है कि शायर के जज़्वे की यह तौहीन है कि यह अपनी गुफ़्तगू को आदावे-गुफ़्तगू का पावन्द बनाए। लफ्ज़ों की जंजीरें जकड़े। वह तो मोती बखेरता है और उन मोतियों को··· "

नसीम ने वाक्य पूरा किया—"शाह दान्द या वदान्द जोहरी।"

आनन्द ने जल्दी से कहा—"विलकुल। दिन-भर में इसी तरह कम-से-कम एक अक्लमन्दी की वात ज़रूर कर लिया करो अच्छी चीज़ होती है अक्ल-मन्दी।"

---

*कैदी। †चरित्र से गिरी हुई। ‡असभ्य।

दरवाजा खुला और तिवारी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"आदाब बजा लाता हूँ।"

आनन्द ने कहा—"वालेकुम आदाब बजा लाता हूँ। मगर यह जनाब गायब कहाँ थे ? ताश के बावन पत्ते अलग-अलग आपको याद मे बेकरार हो चुके हैं।"

तिवारी ने कहा—"आपको शायद मालूम नहीं यह सेवक रात मे गायब है। थोड़ी-सी मिठाई के लालच मे जिन्दगी तक खतरे में डाल दी, रात की नींद हराम की, ब्रिज कुर्बानी दी, मनोरंजक सोहबत को छोडा।"

नसीम ने विस्मयपूर्वक कहा—"मिठाई के लालच में ?"

तिवारी ने कहा—"हाँ साहब ! ज्यादा-से-ज्यादा यही ना कि आप पेट-भर मिठाई खिला देंगे और उसके लिए यह कड़ी मेहनत देखिये।"

नसीम ने आश्चर्यचकित होकर कहा—"मैं मिठाई खिला दूँगा, मुझसे क्या मतलब ?"

तिवारी ने कहा—"और नही तो क्या मुझसे मतलब है ? आपके दिल की मुरादें ढूँढने मैं निकलूँ, ढूँढकर लाऊँ और आप जरा सी मिठाई के लिए भी आनाकानी करें।"

आनन्द ने कहा—"इनकी तरफ से बगैर शर्त की मिठाई का मैं वादा करता हूँ।"

तिवारी ने गर्दन हिलाकर कहा—"जी नही, यह मुबारकबात जमानत के काबिल नहीं है। मिठाई का सीधा वादा होना चाहिए किसी वकील की माफ़ंत नही। और यह बगैर शर्त की मिठाई कैसी ? यानी चाहे गुड की हो या शक्कर की, मिठाई का बगैर शर्त का वादा तो दूसरी चीज है मगर शर्त की मिठाई का वादा दूसरी चीज है।"

आनन्द ने कहा—"साहब यह तो बडी मुसीबत है कि आप हजरात मुझ अहलेजबाँ* को गूगा कर देने पर तुले हुए हैं। फिर भी कुछ बताइये तो सही,

* भाषी-भाषी।

कि वाक़िया* क्या है, कौन-सी लड़ाई जीती है ? रिहाई का फ़ैसला कर लिया है क्या ?"

तिवारी ने कहा—"रिहाई के फ़ैसले पर तो मैं मिठाई जब चाहता अगर यह खुद अपने को कैदी समझ रहे होते। मैं इनकी उन जैयदां† साहब को बड़ी मुश्किल से लेकर आया हूँ जिनके ये असल में कैदी हैं।"

नसीम ने और भी विस्मय प्रकट करते हुए कहा—"क्या मतलब ?"

तिवारी ने कहा—"अब भी मतलब की जरूरत है ? आप आखिर किसके कैदी हैं ?"

आनन्द ने कहा—"देखने में तो यह सिर्फ़ कैदी जवानी के हैं मगर इन पहेलियों की क्या जरूरत है ?"

तिवारी ने उठते हुए कहा—"मुझको बराबर यह फ़िक्र लगी रहती थी कि नसीम साहब की खिदमत में कौनसा ऐसा तोहफ़ा पेश करूँ कि यह सच्चे दिल से मेरी दोस्ती के कायल हो जाएँ। खुदा का शुक्र है कि आज वह तोहफ़ा मिल गया है जो मैं अभी पेश करता हूँ। आनन्द साहब आप मेरे साथ तशरीफ़ लाइये। यह तोहफ़ा आप नहीं देख सकते, आइये ना मेरे साथ, और नसीम साहब आप ज़रा देखने की शक्ति इकट्ठी कीजिये। दोनों हाथों से कलेजा थाम लिये, स्वागत के लिए खड़े हो जाइये, आँखें और दिल बिछा दीजिये।"

नसीम विस्मय से तिवारी को देख रहा था कि उसका दिमाग़ तो नहीं खराब हो गया है या शराब ज्यादा तो नहीं पी ली है। वह आनन्द को साथ लिये कमरे से बाहर चला गया और थोड़ी देर में दरवाज़ा जो खुला तो नसीम वाकई यह देखकर चौंक पड़ा कि उसके सामने ग़ज़ाला खड़ी शरमा रही है। उसने विचित्र दशा में कहा—"ग़—ज़ा—ला—तुम ?"

ग़ज़ाला फिर भी खामोश खड़ी रही। नसीम ने उसके करीब जाकर अब ज़रा होश-हवाश दुरुस्त करके कहा—"खुदा के वास्ते बताओ तो सही तुम क्यों कर गिरफ़्तार हो गईं ?"

ग़ज़ाला ने कहा—"आप तो मर्द होते हुए गिरफ्तार हो गये मैं तो फिर

*वास्तविकता। †जीवन-साथी।

भी औरत हूँ।"

नसीम ने ग़ज़ाला का बुर्का एक तरफ़ रखकर उसको सोफ़े पर बिठाया और उसको एकटक हैरत से देखते हुए कहा—"अब तक दिल को यकीन नहीं आ रहा है कि इस खोह में तुम मेरे पास पहुँच गई हो? सब संकोच छोड़कर मुझको पूरी तरह अपनी गिरफ्तारी की घटना बताओ।"

ग़ज़ाला ने अपने लखनऊ से चलने से लेकर आज अपनी गिरफ्तारी की सम्पूर्ण घटना शुरू से आखिर तक सुना दी, कि वह कल किस तरह शाम को सैर करती हुई नैनीताल से निकल कर एक सुनसान पगडंडी पर अपनी धुन में जा रही थी कि दो-तीन आदमियों ने उसे घेर कर बेहोश कर दिया और फिर जो सुबह आँख खुली और होश आया तो उसने अपने को एक मुलायम बिस्तरे पर पाया। साथ-ही-साथ उसने यह भी बताया कि यहाँ मेरे साथ निहायत वा इज़्ज़त और शरीफ़ों-जैसा सुलूक किया गया है। यहाँ तक कि मेरी कतई बेपर्दगी नहीं हुई। अव्वल तो मेरे कमरे में औरतें ही आती रहीं विभिन्न कामों के लिए, दूसरे इन साहब ने जो अभी आपके कमरे से निकल कर गये हैं अत्यन्त सख़्ती से एक-एक से कह रखा है और बराबर कह रहे हैं कि इन पर्दा-वाली स्त्री को अगर ज़रा-भी तकलीफ़ हुई या बेपर्दगी की शिकायत हुई तो ज़मीन-आसमान एक कर दूँगा।"

यह सम्पूर्ण विवरण सुनने के बाद नसीम ने कहा—"इस बेपर्दगी की आपके सैयाद* ने इजाज़त दे दी है जो इस वक्त हो रही है।"

ग़ज़ाला ने अब ज़रा निसंकोच भाव से कहा—"मुझे क्या मालूम था कि यहाँ इस तरह पलंग बिछे होंगे, सोफ़े सजे होंगे, आप ड्रेस गाउन पहने आराम कुर्सी पर अख़बार पढ़ते होंगे, वरना मैं क्यों निकलती आपकी ख़ैर मनाती हुई। ज़रा उठ कर मालूम तो कीजिये कि सलमा बेचारी का क्या हुआ?"

नसीम ने विस्मय से उठते हुए कहा—"क्या मतलब? सलमा कौन? सलमा अन्सारी?"

---

*बहेलिया।

ग़ज़ाला ने कहा—"जी हाँ ! वह भी तो मेरे साथ थीं । मुझे कुछ पता नहीं उनका क्या हुआ ?"

नसीम ने ग़ज़ाला से बग़ैर कुछ पूछे कमरे से बाहर तेज़ी से निकलकर देखा कि तिवारी और आनन्द हँस-हँस कर बातें कर रहे हैं। तिवारी ने नसीम को देखते ही कहा—"ख़ैरियत तो है ? क्या निकाल दिये गये कमरे से ?"

नसीम ने कहा—"अजीब कमबख़्त हैं आप, यानी औरतों को गिरफ्तार करने की क्या ज़रूरत थी और सलमा अन्सारी कहाँ हैं ?"

तिवारी ने हँसकर कहा—"बन्दानवाज़ इन गिरफ़्तारियों की ज़रूरत को तो यह सेवक ही समझ सकता है। रह गई वह दूसरी स्त्री, वह भी कुछ मिनट बाद इसी कमरे में आ जाएँगी। क्या ज़माना आ लगा है बजाए इसके कि जनाब शुक्रगुज़ार होते कि मैं आपके वास्ते इस खोह में जो आप चाहते थे ले आया, हुज़ूर आँखें दिखा रहे हैं और जवाब माँग रहे हैं।"

नसीम ने कहा—"भाईजान, जोश में एक ग़लत बात मेरी ज़बान से निकल गई। आज तक मैंने आपके काम के सम्बन्ध में कोई बात नहीं कही थी आज न जाने क्यों दखल दे बैठा, कि औरतों को क्यों गिरफ्तार किया ? वास्तव में अपनी ज़रूरत को आप ही समझ सकते हैं।"

तिवारी ने कहा—"ख़ैर, यह तो हमारा और आपका करार भी है मगर आपके यहाँ की औरतें अन्य औरतों से भिन्न हैं। हर औरत इस मर्दाना हिम्मत से काम भी नहीं कर सकती। मेरे साथी ऐसे ही होशियार थे कि बच गये वरना दो-तीन तो ग़ज़ाला बेग़म ने ठंडे कर दिये होते। अब आप मेहरबानी करके उनसे रिवाल्वर लाकर मुझको दे दीजिये मैं उनसे सीधे माँगना मुनासिब नहीं समझता।"

नसीम को हैरत-पर-हैरत हो रही थी। उसने अन्दर जाते हुए कहा—"अच्छा रिवाल्वर।" और ग़ज़ाला के पास पहुंचकर कहा—"यह जनाब ने रिवाल्वरबाज़ी भी शुरू कर दी है। कहाँ है वह रिवाल्वर ?"

ग़ज़ाला ने रिवाल्वर नसीम को देते हुए कहा—"वक्त इनसान को सब-

कुछ गिना देता है। कुछ पता चला सलमा का ?"

नसीम ने कहा—"हाँ ! वह अभी थोड़ी देर में आ जाएगी जब तक तुम तैयार हो। बड़े नवाब साहब को बुलाता हूँ तुमसे मिलने के लिए।"

ग़ज़ाला ने कहा—"मुझको अब न उनकी फ़िक्र है न आपकी। आप लोग कैद में थोड़ी हैं, मालूम होता है कि होटल में ठहरे हुए हैं और यहाँ इस मकान ही में दम निकला जाता था कि खुदा जाने किस हाल में होंगे।"

नसीम ने हँसकर कहा—

"हर मुल्क मिल्क मास्त कि मुल्क खुदाए मास्त—"

खुशकिस्मत अपनी खुशकिस्मती छोड़कर थोड़ी जाता है, साथ लाता है और अपने मुकद्दर की हर चमक को चाहे कहीं हो अपने पास खींच लेता है।"

उसी वक्त सलमा अन्सारी की आवाज़ आई—"मैं हाज़र हो सकती हूँ ?"

कमरे में आकर उसके मुँह से खुशी की एक चीख निकल गई—"नसीम भाई ! और लगी रोने।"

नसीम ने सलमा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"बेवकूफ लड़की ! यह कौन-सा मौका है रोने का ?"

ग़ज़ाला ने कहा—"न बहाओ आँसू सलमा बहन ! तुम जिनके लिए आँसू बहा रही हो उनको यह भी नहीं मालूम कि खुशी के भी आँसू हो सकते हैं।"

नसीम ने थोड़ी देर तक ग़ज़ाला और सलमा से बातचीत की। इसके बाद वह जहानदार मिर्ज़ा को लेने चला गया। निश्चय यह किया कि इस वक्त जहानदार मिर्ज़ा साहब से साफ़-साफ़ कह दिया जाएगा कि ग़ज़ाला और नसीम के बीच से पर्दा उठ चुका है वरना यह पर्दे की मुसीबत तो और भी मार डालेगी। यह दृश्य देखते ही बनता था जब बड़े मिर्ज़ा अपनी लड़की को गले से लगाये हुए वही आँसू बहा रहे थे जो ग़म और खुशी की चरम सीमा को समान बना देते हैं। नसीम भी कमरे में था, परन्तु प्रफुल्ल और सन्तुष्ट।

१८

मुनीर और आफ़ताव जिस वक्त सलमा अन्सारी की खाला के पास पहुँचे हैं वहाँ एक कोहराम मचा हुआ था। खाला को यह तो मालूम ही था कि सलमा और ग़ज़ाला नसीम की खोज में पागल हो रही हैं। उनको यह भी मालूम था कि आनन्द उसी खोज का शिकार हो चुका है और अव कल शाम से ये दोनों लड़कियाँ ग़ायव थीं। इन वेचारी की समझ में बिलकुल न आता था कि कहाँ उन दोनों को ढूँढ़ा जाए और किस से कहा जाए। जवान-जहान लड़की के बारे में खुल्लम-खुल्ला यह भी तो कहते न वनता था कि वह रात से ग़ायव है। अव हर सोच-विचार करके वह यह निश्चय कर रही थीं कि मजवूरन पुलिस को सूचना देनी चाहिये, कि कुआँ खुद प्यासे के पास पहुँच गया। जव बड़ी वी को मालूम हुआ कि मुनीर और आफ़ताव दरअसल सलमा के कालिज के साथियों में से हैं और इस खोज में भी शामिल हैं, तो उनको जैसे दो आँखें मिल गईं। रो-रोकर गुम होने का तमाम हाल सुनाया कि किस वक्त लड़कियाँ घर से निकलीं, उनको किस तरफ़ जाते हुए देखा गया और फिर उनका पता न चल सका। बड़ी वी का बुरा हाल था। मालूम होता था कि तमाम रात जागी हैं और रोई हैं। आँखें सुर्ख अंगारा हो रही थीं और सुर्ख सफ़ेद रंग और भी उन्नावी हो गया था। मुनीर ने उनको हर प्रकार से विश्वास दिलाया कि वे गिरफ्तार तो ज़रूर होंगी, कि यह खवर उनको पहले ही पहुँच चुकी थी। मगर अव चूँकि पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ वदमाशों की गिरफ्तारी का इन्तज़ाम कर चुकी है और इसी काम के लिए लोग आए हुए हैं अतः

उम्मीद है कि दो एक दिन में सब-के-सब आजाद हो जाएँगे। सलमा की खाला को अब सन्तोष था कि उनकी समझ में कोई तरकीब ही नहीं आ रही थी, खुदा ने खुद-बखुद इन्तज़ाम कर दिया। अतः अब वह ज़रा आदमी बनकर उनके सत्कार के लिए जुट गईं। यदि खुद सलमा मौजूद होती तो भी शायद यह आवभगत न होती जो यह बड़ी बी कर रही थी। इन लोगों को किसी तरह होटल में न ठहरने दिया। उसी कोठी में एक कमरा ठीक कर दिया।

चाय और नाश्ते से निवृत्त होकर मुनीर और आफ़ताब दोनों निकले। प्रोग्राम यह था कि स्थानीय पुलिस के दफ्तर पहुँचकर मुनीर अपना आना लिखवाए और स्थानीय पुलिस का सहयोग प्राप्त करके अपनी चढ़ाई करने का नक्शा बनाए। उनके साथ आये हुए सिपाही पहले ही पुलिस के दफ्तर की ओर रवाना हो चुके थे और थानेदार को वह पहले ही इस पूछताछ के लिए भेज चुका था कि टेलीफोन की किताब में मिस्टर त्रिपाठी, डी०वाई०एस०पी० का नाम अभी तक है, मालूम करो कि वह अब तक मौजूद हैं या नहीं? यद्यपि उनका सम्भवतः तबादला हो चुका है और अगर वह नहीं हैं तो उनके स्थान पर अब कौन आया है? ये दोनों कोठी से निकले ही थे कि थानेदार ने आकर सेल्यूट किया और बताया कि मिस्टर त्रिपाठी तो बदल कर जा चुके, आजकल एम० ए० विलियम, डी० वाई० एस० पी० हैं।

मुनीर ने कहा—"अच्छा यह बदमाश यहाँ आ गया? बस तो फिर क्या है अपना ही बरखुरदार† है।"

आफ़ताब ने कहा—"क्या मतलब?"

मुनीर ने कहा—"ट्रेनिंग में साथ रहा, फिर कानपुर में साथ-साथ पोस्टिंग हुई। बड़ा अच्छा और दिलचस्प आदमी है। मगर अब मुसीबत यह आएगी कि सलमा की खाला के यहाँ ठहरने नहीं देगा, सख्त जंग होगी इस बात पर।"

ये दोनों बातें करते हुए विलियम की कोठी तक जा पहुंचे। विलियम साहब इस वक्त बाहर ही बैठे हुए थे। मुनीर को देखकर पहले तो उनको

† बच्चा।

१८

मुनीर और आफ़ताब जिस वक्त सलमा अन्सारी की खाला के पास पहुँचे हैं वहाँ एक कोहराम मचा हुआ था। खाला को यह तो मालूम ही था कि सलमा और ग़ज़ाला नसीम की खोज में पागल हो रही हैं। उनको यह भी मालूम था कि आनन्द उसी खोज का शिकार हो चुका है और अब कल शाम से ये दोनों लड़कियाँ ग़ायब थीं। इन बेचारी की समझ में बिलकुल न आता था कि कहाँ उन दोनों को ढूँढा जाए और किस से कहा जाए। जवान-जहान लड़की के बारे में खुल्लम-खुल्ला यह भी तो कहते न बनता था कि वह रात से ग़ायब है। अब हर सोच-विचार करके वह यह निश्चय कर रही थीं कि मजबूरन पुलिस को सूचना देनी चाहिये, कि कुआँ खुद प्यासे के पास पहुँच गया। जब बड़ी बी को मालूम हुआ कि मुनीर और आफ़ताब दरअसल सलमा के कालिज के साथियों में से हैं और इस खोज में भी शामिल हैं, तो उनको जैसे दो आँखें मिल गईं। रो-रोकर गुम होने का तमाम हाल सुनाया कि किस वक्त लड़कियाँ घर से निकलीं, उनको किस तरफ़ जाते हुए देखा गया और फिर उनका पता न चल सका। बड़ी बी का बुरा हाल था। मालूम होता था कि तमाम रात जागी हैं और रोई हैं। आँखें सुर्ख अंगारा हो रही थीं और सुर्ख सफ़ेद रंग और भी उन्नाबी हो गया था। मुनीर ने उनको हर प्रकार से विश्वास दिलाया कि वे गिरफ्तार तो जरूर होंगी, कि यह खबर उनको पहले ही पहुँच चुकी थी। मगर अब चूँकि पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ बदमाशों की गिरफ्तारी का इन्तजाम कर चुकी है और इसी काम के लिए लोग आए हुए हैं अतः

उम्मीद है कि दो एक दिन में सब-के-सब आज़ाद हो जाएँगे। सलमा की खाला को अब सन्तोष था कि उनकी समझ में कोई तरकीब ही नहीं आ रही थी, खुदा ने खुद-बखुद इन्तज़ाम कर दिया। अतः अब वह ज़रा आदमी बनकर उनके सत्कार के लिए जुट गईं। यदि खुद सलमा मौजूद होती तो भी शायद यह आवभगत न होती जो यह बड़ी बी कर रही थीं। इन लोगों को किसी तरह होटल में न ठहरने दिया। उसी कोठी में एक कमरा ठीक कर दिया।

चाय और नाश्ते से निवृत्त होकर मुनीर और आफ़ताब दोनों निकले। प्रोग्राम यह था कि *स्थानीय पुलिस के* दफ्तर पहुँचकर मुनीर अपना आना लिखवाए और स्थानीय पुलिस का सहयोग प्राप्त करके अपनी चढ़ाई करने का नक्शा बनाए। उनके साथ आये हुए सिपाही पहले ही पुलिस के दफ्तर की ओर रवाना हो चुके थे और थानेदार को वह पहले ही इस पूछताछ के लिए भेज चुका था कि टेलीफोन की किताब में मिस्टर त्रिपाठी, डी०वाई०एस०पी० का नाम अभी तक है, मालूम करो कि वह अब तक मौजूद हैं या नहीं? यद्यपि उनका सम्भवतः तबादला हो चुका है और अगर वह नहीं हैं तो उनके स्थान पर अब कौन आया है? ये दोनों कोठी से निकले ही थे कि थानेदार ने आकर सेल्यूट किया और बताया कि मिस्टर त्रिपाठी तो बदल कर जा चुके, आजकल एम० ए० विलियम, डी० वाई० एस० पी० हैं।

मुनीर ने कहा—"अच्छा यह बदमाश यहाँ आ गया? बस तो फिर क्या है अपना ही बरखुरदार† है।"

आफ़ताब ने कहा—"क्या मतलब?"

मुनीर ने कहा—"ट्रेनिंग में साथ रहा, फिर कानपुर मे साथ-साथ पोस्टिंग हुई। बड़ा अच्छा और दिलचस्प आदमी है। मगर अब मुसीबत यह आएगी कि सलमा की खाला के यहाँ ठहरने नहीं देगा, सख्त जंग होगी इस बात पर।"

ये दोनों बातें करते हुए विलियम की कोठी तक जा पहुँचे। विलि साहब इस वक्त बाहर ही बैठे हुए थे। मुनीर को देखकर पहले

† बच्चा।

अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। इसके बाद ऊँचे स्वर में कहा—"अरे, मुनीर तुम ? हैलो-हैलो।"

मुनीर और वह गुथ गये। खुदा जाने मिलन था यायुद्ध ? बड़ी मुश्किल से कुश्ती बराबर छूटी तो विलियम ने फिर कहा—"बदमाश आदमी, यह तुम बग़ैर इत्तला कैसे आये और समान कहाँ है ?"

मुनीर ने कहा—"भाई सुनो ! मुझको यह बिलकुल खबर न थी कि तुम यहाँ मौजूद होगे। मैं एक सरकारी काम से आया और अपनी एक रिश्तेदार के यहाँ ठहर गया हूँ। तुम जानते हो। मिसेज़ जावेद को ?"

विलियम ने कहा—"हाँ-हाँ ! अच्छा तो मेरा आदमी जाकर अभी सामान लाता है, इसलिए कि अब तुम को मालूम हो चुका है कि मैं यहाँ हूँ।"

मुनीर ने आफ़ताब का परिचय कराने के बाद कहा—"देखो विलियम, सामान वहीं रहने दो। यों तो हम तुम्हारे ही मेहमान रहेंगे अगर सामान वहाँ से मँगाया गया तो उनको बेहद नागवार मालूम होगा।"

विलियम ने कहा—"जी यह ग़लत है। तुम बड़े होशियार हो, दोनों को खुश रखना चाहते हो और खास तौर से मुझे चरका दे रहे हो।"

मुनीर ने कहा—"चरका नहीं बल्कि यह सच्चाई है कि मैंज़्यादा-से-ज़्यादा तुम्हारे पास रहा करूँगा, इसलिए कि काम ऐसा ही है। फिर बेकार में उन बड़ी बी के दिल को क्यों दुख पहुंचाया जाए।"

विलियम ने उन दोनों को उठाकर अन्दर ड्राइंग-रूम में बिठाया। खान-सामा से चाय लाने के लिये कहकर फिर मुनीर से दास्तान सुनी। इस किस्से में पूरी दिलचस्पी लेने के बाद कहा—"वह नकशा या तावीज़ है तुम्हारे पास ?"

मुनीर ने अपने पर्स से यह काग़ज़ निकाल कर मेज़ पर फैला दिया और विलियम उसको ग़ौर से देखता रहा। मुनीर ने कहा—"इस पहेली को मैंने अभी बिल्कुल नहीं हल किया, तुम्हारी समझ में कुछ आता है ?"

अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। इसके वाद ऊँचे स्वर में कहा—"अरे, मुनीर तुम ? हैलो-हैलो।"

मुनीर और वह गुथ गये। खुदा जाने मिलन था यायुद्ध ? वड़ी मुश्किल से कुश्ती वरावर छूटी तो विलियम ने फिर कहा—"वदमाश आदमी, यह तुम वग़ैर इत्तला कैसे आये और समान कहाँ है ?"

मुनीर ने कहा—"भाई सुनो ! मुझको यह विलकुल खवर न थी कि तुम यहाँ मौजूद होगे। मैं एक सरकारी काम से आया और अपनी एक रिश्तेदार के यहाँ ठहर गया हूँ। तुम जानते हो। मिसेज़ जावेद को ?"

विलियम ने कहा—"हाँ-हाँ ! अच्छा तो मेरा आदमी जाकर अभी सामान लाता है, इसलिए कि अव तुम को मालूम हो चुका है कि मैं यहाँ हूँ।"

मुनीर ने आफ़ताव का परिचय कराने के वाद कहा—"देखो विलियम, सामान वहीं रहने दो। यों तो हम तुम्हारे ही मेहमान रहेंगे अगर सामान वहाँ से मँगाया गया तो उनको वेहद नागवार मालूम होगा।"

विलियम ने कहा—"जी यह ग़लत है। तुम वड़े होशियार हो, दोनों को खुश रखना चाहते हो और खास तौर से मुझे चरका दे रहे हो।"

मुनीर ने कहा—"चरका नहीं वलिक यह सच्चाई है कि मैं ज्यादा-से-ज्यादा तुम्हारे पास रहा करूँगा, इसलिए कि काम ऐसा ही है। फिर वेकार में उन वड़ी वी के दिल को क्यों दुख पहुंचाया जाए।"

विलियम ने उन दोनों को उठाकर अन्दर ड्राइंग-रूम में विठाया। खान-सामा से चाय लाने के लिये कहकर फिर मुनीर से दास्तान सुनी। इस किस्से में पूरी दिलचस्पी लेने के वाद कहा—"वह नकशा या तावीज़ है तुम्हारे पास ?"

मुनीर ने अपने पर्स से यह काग़ज़ निकाल कर मेज़ पर फैला दिया और विलियम उसको ग़ौर से देखता रहा। मुनीर ने कहा—"इस पहेली को मैंने अभी विल्कुल नहीं हल किया, तुम्हारी समझ में कुछ आता है ?"

विलियम ने कहा—"भाई समझ में तो खाक भी नहीं आ रहा है सिवाय इसके कि तुम पहले ही कह चुके हो कि उस खोह में जाने के सात रास्ते है

और हर रास्ता हफ्ते में एक दिन खुल सकता है। उसके खोलने की तरकीब जो इस नुस्खे में लिखी है, उसके लिए पहले तो आदमी को होना चाहिये शायर, इसके बाद होना चाहिये इन्जीनियर और हिसाब तथा ज्योतिष का माहिर।"

आफ़ताब ने कहा—"मेरे खयाल में न शायर होने की जरूरत है और न किसी बात की, सिर्फ़ ग़ौर करने की जरूरत है। पूरे नक्शे पर एक साथ ग़ौर न कीजिये बल्कि एक-एक दिन को लेकर दिमाग़ लगाइये।"

विलियम ने कहा—"बेहतर है। मसलन इतवार—प्रकट है कि इतवार के दिन जो दरवाज़ा खुलता है उसकी तरकीब है यह, और यह लिखा है मिसरा। मुसीबत यह है कि मैं फारसी भी नहीं जानता।"

मुनीर ने कहा—"मिसरे से पहले इस चीज़ पर ग़ौर करो कि यह सांप की तसवीर क्या बला है?"

आफ़ताब ने कहा—"सवाल यह है कि यह सांप की तसवीर भी है या नहीं? इसलिए कि सांप का न तो फ़न है न दुम। मेरा खयाल तो यह है कि इस बल खाती हुई लकीर का, जिस को हम सांप समझ रहे हैं मतलब है सड़क से।"

मुनीर और विलियम ने तकरीबन एक आवाज़ होकर कहा—"बेशक, बेशक।"

विलियम ने कहा—"यकीनन यह सड़क है।"

मुनीर ने कहा—"आफ़ताब तू तो यार पक्का लाल बुझक्कड़ निकला। अच्छा तो अब इसका मतलब हुआ कि सड़क से ऊपर की तरफ़ उत्तर दिशा तीस कदम चलना चाहिये।"

आफ़ताब ने बात काटकर कहा—"वहाँ पहुंचने के बाद इस मिसरे का मतलब मालूम किया जाएगा।"

विलियम ने कहा—"ठहरो, ठहरो! इस नक्शे में इतवार दो जगह हैं और दो विभिन्न इशारे हैं।"

मुनीर ने भी ग़ौर से देखा तो वाकई इतवार से शुरू करके इतवार ही पर

खत्म किया गया है। इस गुत्थी को ये तीनों देर तक सुलझाते रहे कि आखिर इतवार के दो भिन्न इशारे क्यों हैं ? मुनीर ने कहा—"शायद इतवार को दो दरवाज़े खुलते हों ? विलियम ने कहा—"कि सम्भव है कि एक इतवार को यह और दूसरे इतवार को वह दरवाज़ा खुलता हो।" इसी बीच में चाय आ गई और विलियम ने मिसेज़ जावेद से टेलीफ़ोन पर कह दिया कि मुनीर और आफ़ताब साहब अपने काम में व्यस्त हैं उनके खाने का इन्तज़ार न कीजियेगा और अगर कोई खास बात मालूम हो तो इस नम्बर पर फ़ोन कर दीजियेगा इसके बाद ये तीनों चाय पीने में लग गये।

आफ़ताब ने कहा—"आज है सोमवार, अगर हम आज ही से अपना कार्य शुरू करने वाले हों तो हमको इतवार पर ग़ौर ही न करना चाहिये। इतवार तो अब एक हफ्ते के बाद आएगा, सोमवार और मंगल वगैरह, पर ग़ौर करें।"

विलियम ने कहा—"यह काम मेरे खयाल में आज तो शुरू होना मुश्किल है इसलिए कि इस वक्त दस बजने वाले हैं। जरूरत है कि आप थोड़ा बहुत आराम भी कर लें। बात यह है कि खाना-दाना खाते एक बज जाएगा और बजे के बाद वहाँ चलें भी तो कब उस पहेली की पूर्ति करेंगे, कब सही नतीजे पर पहुँचेंगे और किस वक्त हमला बोला जाएगा। मेरी राय तो यह है कि कल सुबह चला जाए।"

मुनीर ने कहा—"मैं चाहता यह था कि यह नकशा कुछ-कुछ तो हमारी समझ में आने लगे। आज दिन में और रात के वक्त तसल्ली से इस पर ग़ौर करलेंगे फिर सुबह चलेंगे।"

आफ़ताब ने कहा—यह तय है कि नकशा तो मौके पर पहुंचकर ही हल हो सकेगा, जब कि समझने की कोशिश को हम जरूर जारी रखें।"

मुनीर ने कहा—"विलियम, मेरी राय यह है कि हमारे जवान उस जगह का घेरा तो पूरी तरह से कर ही लें कल सुबह।"

विलियम ने चाय का घूट लेते हुए कहा—"यह तो खैर हो ही जाएगा। सशस्त्र पुलिस उस तमाम इलाके को अंधेरे मुंह ही घेरेगी। मगर एक बात

समझ में नही आती कि हमको बदमाशों की ताक़त का अन्दाजा तो है ही नहीं।"

मुनीर ने कहा—"उस खोह में ऐसे कितने आदमी हो सकते हैं?"

आफ़ताब ने कहा—"ख़ैर तो दुश्मन को कमज़ोर भी न समझना चाहिये। हमको चाहिये कि ज्यादा से-ज्यादा इन्तज़ाम रखें।"

विलियम ने आफ़ताब को जरा मेहमानों के ढंग में संकोच बरतते देखकर कहा—"देखिये जनाब आफ़ताब साहब यह ग़लत है। हर तरह से मेरी और आपकी पहली मुलाकात है मगर ज्यादा बेतकल्लुफ़ी के लिए सिर्फ़ इतना काफ़ी है कि आप मुनीर के हमजमाअ़त हैं अतः अब यह घर आपका हो गया यानी जरा ध्यान तो दीजिये कि मैंने दोस्तों ही के लिए अपनी वासना को कुचला है। शादी तक नहीं की, कि बीबी और दोस्त दोनों को खुश रखने की तरकीब आज तक वैज्ञानिकों ने भी मालूम नहीं की है। दोस्तों के सत्कार करने वाले पति के लिए पत्नी घर को जहन्नुम बना देती है। पत्नी प्रिय दोस्त के लिए सोसाइटी नर्क बन जाती है। मैंने जब इस नुक्ते को पा लिया तो तय किया कि दोस्त तो ख़ैर छूट नहीं सकते फिर बीबी का तोता बेकार में टांए-टांए करने को क्यों पाला जाए। पत्नी की सौत सिर्फ़ वह औरत ही नहीं होती जिससे उसका पति शादी कर ले, बल्कि, वह मर्द भी होता है जिससे उसका पति दोस्ती करे और दोस्ती निबाहे।"

मुनीर ने कहा—"मैं पूछ सकता हूँ कि जनाब ने शादी के बग़ैर यह जानकारी कहां और किस तरह प्राप्त की?"

विलियम ने कहा—"ज़हर खाने के बाद मरने का तजरबा अगर हुआ भी तो क्या। प्यारे दोस्त यह तजरबा दुनिया को देखने से हासिल होते हैं। हमने शादी नहीं की तो क्या हुआ, हमारे दोस्तों ने तो शादियाँ की हैं और वे एक-एक करके दाग़ें जुदाई देते जाते हैं।"

मुनीर ने कहा—"तो मानो अब शादी का इरादा ही नहीं है।" नसल को बढ़ाने के लिए क्या इन्तज़ाम किया है?

विलियम ने कहा—"देखिये जनाब! एक ही बात हो सकती है औलाद

पैदा कीजिये या दोस्त पैदा कीजिए। मैंने दूसरा फर्ज अपने जिम्मे ले रखा है। मगर यह बात तुम्हारी समझ में इसलिए नहीं आएगी कि तुम शादी कर चुके हो।"

मुनीर ने कहा—"यार मेरी बीवी तो बहुत फर्स्ट क्लास है इन मामलों में।"

विलियम ने कहा—"खैर इस बात का तो आप मुझको यकीन दिलाइये नहीं। हर पत्नी फर्स्ट क्लास होती है और हरेक पत्नी में थर्ड क्लास बनने की विशेषता भी होती है। क्यों आफताब साहब ?"

आफताब ने कहा—"मैं क्या कहूं, न बीवी का तजरबा है न तजरबे ही इतने हासिल किये।"

विलियम ने कहा—"ये बहु-बेटियां यह क्या जानें, जनाब भी तो खैर से कुंवारे हैं।

और घड़ी देखकर कहा—"अच्छा हजरत चलकर जरा अपनी आमद तो दर्ज करा दीजिये और मैं अपनी रसीद लिख दूं फिर आपके सिपाहियों का [illegible]न्तजाम कर दूं। आज दोपहर का खाना हम लोग [illegible]कदेव में खायेगे। कहो [illegible]ी में लंच उड़े ?"

[illegible] ने क[illegible] [illegible] झगड़े अब छोड़ों, इस काम में कामयाब हो जाने [illegible] अपने काम में लग जाने की फौरन जरूरत [illegible] हो ज[illegible]।"

आनन्द तो यों भी इस कैद पर अपनी हर आज़ादी क़ुर्बानी करने के लिए तैयार था, मगर अब तो नसीम के लिए भी उस खोह में किसी चीज़ की कमी न थी। आराम तो ख़ैर तिवारी ने हमेशा उनको पहुँचाया ही मगर ग़ज़ाला के लिये जो एक कमी-सी वह अनुभव किया करता था और जिसकी पूर्ति करना तिवारी के बस की बात वह न समझता था, उसको भी तिवारी ने सम्भव कर दिखाया। यदि नसीम और ग़ज़ाला दोनों उस खोह में न होते बल्कि हवेली में होते तो भी यह आज़ादी सम्भव न थी जो यहाँ प्राप्त होगई। वहाँ फिर भी पर्दे की बन्दिश थी यों चोरी छिपे सामना हो जाना दूसरी बात है मगर बुज़ुर्गों की नज़र में तो पर्दा क़ायम था। मगर यहाँ स्वयं जहानदार मिर्ज़ा साहब ने उस पर्दे को न केवल अनावश्यक ही बताया बल्कि बेपर्दगी की ज़रूरत पर घड़ी देखकर पूरे बीस मिनट तक व्याख्यान दिया और यह साबित कर दिया कि जब इन दोनों को एक-दूसरे का होना है तो इस मुसीबत में, चाहे कैसी ही अच्छी क्यों न हो, फिर कैद है। पर्दा सिवाय चोंचले के और कुछ नहीं है। इसके अतिरिक्त बड़े मियां ने नसीम को बुलाकर विशेष रूप से कह दिया कि मियाँ ज़माना अब हमारा नहीं है बल्कि तुम लोगों का है। और चूँकि शीघ्र ही तुम मेरी बच्ची के पति परमेश्वर बनने वाले हो अतः तुमको अख़्तियार है कि अगर तुम उचित समझो तो पर्दा क़ायम रखो और अगर जी न चाहे तो बुर्के को एक सिरे से तिलांजलि दे दो। हाँ केवल मेरी वजह से कोई अनावश्यक और रस्मी प्रतिबन्ध अपने या ग़ज़ाला के ऊपर न थोपो इस आज्ञा से फ़ायदा उठाकर नसीम ने वाकई ग़ज़ाला को मशवरा दिया कि बुर्का रखो ताक

पर और तिवारी तथा आनन्द के सामने आना शुरू कर दो। ग़जाला को भला नसीम की किसी बात से क्या इन्कार हो सकता था। वह तिवारी और आनन्द के साथ बेनकाब बैठकर चाय में सम्मिलित हुई यद्यपि स्थिति अब यह हो गई कि बेचारे जहानदार मिर्ज़ा साहब मानो पर्दानशीन होकर रह गये ताकि उन लोगों की आज़ादी में बाधक सिद्ध न हों।

तिवारी ने नसीम और आनन्द या जहानदार मिर्ज़ा साहब के आतिथ्य-सत्कार इत्यादि में कभी लापरवाही नहीं की थी, किन्तु अब तो यह मालूम होता था कि जैसे वह बिछे जा रहे हैं। सुबह और तीसरे पहर की चाय के लिये नैनीताल से ताज़ा केक, पेस्टरियाँ और पेटीज वगैरह आती थीं। दोपहर के खाने के साथ बहुत उम्दा फल खास तौर से ढूँढ-ढूँढकर मंगाये जाते थे। फिर खाने के संकोच ऐसे जैसे आप संकोच की साक्षात् प्रतिमा बने हुये हों और फिर साथ ही साथ यह भी विवशता प्रकट करते जाना कि मैं इस जगह आपको वह आराम तनिक भी नहीं पहुँचा सकता जो मैं चाहता हूँ। आखिर ग़जाला ने तीसरे पहर की चाय पर इस किस्म के पश्चाताप के उत्तर में कहा—

आप एक काम कीजियेगा तिवारी साहब! कि मेरी अम्मी और अब्बा को और गिरफ्तार करके यहाँ बुला लीजिये। इसके बाद अगर हम में कोई आप से रिहाई के बारे में कहे तो जो चोर की सजा वह हमारी।"

नसीम ने कहा—"देखो भई तिवारी! मैंने तुम से कभी कोई बात नहीं कहीं, न अपने लिये कोई सिफारिश की, न किसी और के लिए, मगर आज मैं एक बात कहना चाहता हूँ।"

तिवारी ने कहा—"मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मुझको तुम्हारी हर बात मंजूर है, चाहे वह तुम्हारी रिहाई के सम्बन्ध में ही क्यों न हो।"

ग़जाला ने कहा—"खैर, ऐसी कमज़ोर बात की तो इन से उम्मीद भी न कीजिये।"

नसीम ने कहा—"मुझे तो खुद ताज्जुब है कि तिवारी ने मेरे मुताल्लिक ऐसी बात का खयाल ही क्योंकर किया।"

तिवारी ने तुरन्त अपनी स्थिति स्पष्ट की—"सम्भवतः जनाब को मुहावरे सहित उर्दू के समझने में दिक्कत होती है ? मैंने मिसाल के तौर पर यह कहा था मानो मेरे लिए सब से मुश्किल काम यह है कि तुम को रिहा कर दूं। मगर मैं इसके लिए भी तैयार हूं, शर्त यह है कि तुम खुद कह दो चूंकि मैं जानता हूं कि तुम ऐसी बात कह ही नहीं सकते इसलिये मेरे कहने में भी कोई अड़चन न थी। हां, तो खैर, तुम बात कहो, मैं वायदा कर चुका हूं कि पूरा करूंगा।"

नसीम ने कहा—"अब मेरी को माफ कर दो।"

तिवारी ने पशोपेश में पड़ते हुए कहा—"तो जैसे तुम्हारे खयाल में माफी की गुंजाइश बाकी है ? और फर्ज करलो मैंने माफ कर दिया, फिर ? यह तो मुझ से होने से रहा कि मैं उस पर वह भरोसा करूं जो अब तक मुझ को था और कहीं तक यह भरोसा मुझ को उस पर होना भी नहीं चाहिये।"

नसीम ने कहा—"मेरे खयाल में उसको एक मौका इस बात का और दो कि वह सच्चाई के साथ विश्वास प्राप्त करने का प्रयत्न करे।"

तिवारी ने कहा—"नहीं भाई ! तुमको नहीं मालूम कि मैं कैसे खतरों से खेलता रहता हूं और तुमको शायद यह भी अनदाजा होगा कि मेरी गर्दन में हर वक्त फांसी का फन्दा पड़ा हुआ है। मैं कानून का द्रोही हूं, चोर, डाकू हूं। मेरे विरुद्ध न जानें कितने अपराध सिद्ध हो चुके हैं। बस, जरा सा परदा है कि मुझ तक हुकूमत की ताक्त पहुंच नहीं रही है। जिस दिन हुकूमत के हाथ आ गया, चूहे की मौत मारा जा सकता हूं। मेरे इस सारे खेल का आधार केवल साथियों के भरोसे पर है और अगर उन में से एक भी राजा पोरस का हाथी सिद्ध हो तो इससे पूर्व कि वह सारी फौज को कुचले हमको चाहिये कि अपने को बचाने के लिए ऐसे द्रोही का खात्मा कर दिया जाए। तुमको नहीं मालूम कि अगर मेरी की जगह कोई मर्द होता तो मैं उसके साथ क्या सुलूक करता ? यह औरत थी इसलिए बच गई। मेरी मुहब्बत को ठुकराना तो खैर दूसरी बात है। मुहब्बत-जबरदस्ती का सौदा तो है ही नहीं, परन्तु इसके साथ उसके दिल की खोट भी तो प्रकट हो गई

बताओ कि मैं उसपर कभी भी विश्वास कर सकता हूँ ?

आनन्द ने कहा—"आखिर किस्सा क्या है ? ताज्जुब है कि आप लोग दोनों उस गुत्थी को सुलझा रहे हैं और जो व्यक्ति सही अर्थों में इस प्रकार की उलझनों को सुलझाता है उससे सलाह भी नहीं लेते ?"

नसीम ने कहा—"ओह माफ़ कीजियेगा, वाकई आप का तो खयाल ही नहीं रहा था।" यह कह कर नसीम ने ग़ज़ाला, सलमा और आनन्द को मेरी का सारा किस्सा सुना दिया। जब नसीम यह किस्सा सुना चुका तो तिवारी ने कहा—

"इसमें शक नहीं कि मेरी का चुनाव बिलकुल सही था। यदि मैं खुद औरत होता तो उस जवान की मुहब्बत में पागल हो जाता। मैं कहता हूँ कि इस बात की तो शिकायत ही नहीं है मगर उस कमबख्त ने तो अपनी मुहब्बत पर मेरे रहस्य को भी कुर्बान कर देना चाहा। वह अपराध जिसकी वास्तव में वह अपराधी है।"

ग़ज़ाला ने कहा—"ऐसी सूरत में वाकई तिवारी साहब से यह प्रार्थना है कि वह मेरी को माफ कर दें, न सिर्फ़ ग़लत है बलिक बेहद खतरनाक भी है। पर इनको कयामत तक भरोसा न होना चाहिये।"

आनन्द ने हँसकर कहा—"माफ कीजियेगा बहिन ! आपके इस फैसले में उस जलन की गन्ध तेज़ी से आ रही है जो आपको यह सुनने के बाद पैदा हुई है कि मेरी आपकी चीज पर डाका डालना चाहती थी।"

सलमा ने कहा—"फर्ज कर लीजिये कि ग़ज़ाला ने इसीलिए यह बात कही हो, मगर मेरी भी राए यह है कि उस औरत पर भरोसा तो न होना चाहिए।"

नसीम ने कहा—"भरोसे के लिए नहीं कहता, मगर यह ज़रूर चाहता हूँ कि मेरी को इसका मौक़ा ज़रूर दिया जाए कि वह विश्वास प्राप्त करने का प्रयत्न करे।"

आनन्द ने कहा—"अच्छा साहब ! [illegible] मुझ[illegible] फैसला सुनाना ही पड़ा। नसीम साहब की तजवीज स[illegible] [illegible]नका मत—

तब यह है कि मेरी को चाहे निगरानी कितनी ही की जाए मगर उसको बिलकुल कैदी की तरह न रखा जाए। तिवारी साहब चाहे उससे मुहब्बत करें या नफ़रत, मगर उसको इसका मौका ज़रूर दिया जाए कि वह पश्चात्ताप प्रकट कर सके।"

तिवारी ने कहा—"हुजूर जज साहब, माफ़ कीजियेगा, आप लोग इसलिए यह बातें कर रहे हैं कि आपको यह नहीं मालूम कि मेरी को इस खोह के तमाम राज मालूम हैं। वह यदि आज़ाद कर दी गई तो इस खोह से उसका निकल जाना बहुत आसान है। उसकी कोई निगरानी हो ही नहीं सकती और यदि वह निकल गई तो हमारे लिये यह जगह बिलकुल सुरक्षित नहीं रह सकती। उसकी नीयत खराब हो चुकी है और मैं तो इसको खुशकिस्मती समझता हूँ कि मुझको ठीक वक्त पर इसकी सूचना मिल गई वरना नसीम की जगह कोई और होता तो मुझको च्यूँटी की तरह मसल कर रख देता, मगर इस उच्च चरित्र मनुष्य ने मुझे हमेशा के लिये खरीद लिया और मेरी की उस भेंट को घृणापूर्वक ठुकरा दिया। मालूम नहीं यह इन हज़रत की महानता थी या मूर्खता।"

नसीम ने कहा—"आपने ठीक फ़रमाया। शराफ़त और हिमाकत में वाक़ई बहुत थोड़ा-सा फ़र्क है। मगर हिमाकत और नीचता में शायद इतना फ़र्क भी नहीं।"

आनन्द ने शीघ्रता से कहा—जितना नसीम साहब और तिवारी साहब की कुर्सियों के बीच में है।"

तिवारी ने कहा—"यह तो खैर मैं भी चाहता था कि मेरी से मैं ग़ज़ाला बहन को मिला दूँ, ताकि कम-से-कम उसको यह तो मालूम हो जाए कि नसीम ने उसकी मुहब्बत को क्यों ठुकराया है।"

आनन्द ने कहा—"जी हाँ, इसके मुताल्लिक किसी शायर ने कहा है, मालूम नहीं ग़ालिब ने कहा है या मीरतक़ी मीर ने। फिर भी खूब है कि—

जाके द्वारे गंगा बहत, वह क्यों गढ़ी नहाये।"

और दूसरा मिसरा ज़रा वक्त से पहले है, इसलिए कि अभी ७.

हुई है।"

नसीम ने हँसकर कहा—"सुन लिया आपने ग़ालिब या मीर का मिसरा? फिर भी मेरी को बुलवाइये तो सही, अगर मुनासिब हो।"

तिवारी ने उस कमरे से जाकर मेरी का कमरा खुलवाया और दस मिनट के अन्दर मेरी को तैयार करके अपने साथ ही नसीम के कमरे में ले आये और सब से मेरी का परिचय करा दिया। सब से पहले आनन्द ने कहा—"बड़ी खुशी हुई आप से मिलकर और बड़ा दुःख हुआ आपके हालात सुन कर।"

मेरी ने कहा—"आप से ज्यादा दुःख खुद मुझको है कि मैंने खुदा जाने किस पागलपनवश वह हरकत की थी।"

तिवारी ने कहा—"देखो मेरी! तुम में यह विशेषता हमेशा से थी कि तुम झूठ नहीं बोलती थीं। क्या वाकई तुम अपनी इस चेष्टा को पागलपन कहने की हद तक होशियार हो चुकी हो?"

मेरी ने कहा—"मेरे लिये मुसीबत तो यह है कि अगर मैं सच भी बोलना चाहूँगी तो अब मेरी बात का यकीन नहीं आ सकता।"

तिवारी ने कहा—"नहीं मुझको यकीन आ जायगा। यह दूसरी बात है कि उस यकीन के बाद भी मैं सावधानी बरतूँ।"

मेरी ने कहा—"मुझको उस सावधानी की शिकायत न होगी बल्कि मेरे लिए सिर्फ इतना ही काफ़ी होगा कि मेरी बात का यकीन कर लिया जाए।"

आनन्द ने कहा—"बड़ी सूक्ष्म बात कही है आपने, ये लोग शायद न समझे हों मगर मैं थोड़ा-सा शायर भी हूँ।"

नसीम ने कहा—"आप तो खैर सब कुछ हैं आप खामोश रहिए इन दोनों को बात कर लेने दीजिये।"

तिवारी ने कहा—"हां, तो क्या अब नसीम साहब की तरफ़ तवज्जुह नहीं रही?"

मेरी ने कहा—"[illegible] न हो, मगर अपूर्व वस्तु को प्राप्त करने

प्रयत्न ही व्यर्थ था। इसका ज्ञान जरूर हो गया है और यह असलियत है मगर उस वक्त नसीम साहब मजबूती से काम न लिया होता तो शायद भावों के प्रवाह में वह ऐहसान फ़रामोशी कर बैठती जो दुनिया का सब से बड़ा गुनाह है। मुझको नसीम साहब में जो आकर्षण पहले अनुभव हुआ था वही इनमें अब भी है। मगर अब मुझको अपनी हैसियत, अपने स्थान, और अपनी स्थिति का अन्दाजा हो चुका है कि मैं जब एक महब्बत को ठुकराने पर तैयार हो गई तो कुदरत की तरफ़ से मुझको वही जवाब मिलना चाहिये था जो नसीम साहब ने दिया।"

तिवारी ने कहा—"शाबाश ! मालूम होता है कि तुमने अपनी उस विशेषता को भुलाया नहीं है। परन्तु तुम खुद समझ सकती हो कि मेरे लिए अब यह बेहद जरूरी है कि मैं तुमको अपने लिए खतरनाक समझूँ।"

मेरी ने कहा—"खतरनाक, तो खैर आप भी मुझको न समझते होंगे, मगर सावधानी वाकई रखनी चाहिये और इस सम्बन्ध में आप सही हैं। फिर भी मैं शर्मिन्दा जरूर हूँ।"

तिवारी ने कहा—"मुझको इस शर्मिन्दगी का विश्वास है, फिर भी यह बात-चीत खत्म करो। आज से यह तय रहा कि अब तुम हम सब के साथ रह करोगी, मगर कमरा तुम्हारा वही रहेगा जो अब है। अच्छा अब इन स्त्रिय का सत्कार तुम भी करो। इस वक्त ज़फ़र की यह ग़ज़ल हो जाए—"न कि की आँख का नूर हूँ।"

मेरी ने वास्तव में अपनी मधुर आवाज में ज़फ़र की यह ग़ज़ल सुना सबको देर तक भावनाओं में खो-सा दिया और देर तक यह काव्य तथा स सरिता प्रवाहित होती रही।

२०

-◈◈◈

नवाब सुलेमान कदर साहब के यहाँ वही दिन ईद और रात शब रात—कर्ज देने वालों को खुदा सलामत रखे और बाँस पर चढ़ाने वाले गिरहकट दोस्तों को बरकरार। उनकी नवाबी में कोई फ़र्क न था और न यह ख़याल कि कर्ज का भार कितना हो गया है। उनको अब तो दिन-रात यही सपने दिखाए जाते थे कि बस अब इलाका आया, और बने आप नवाब। दिलबर जान की मुहब्बत तूफ़ान की तरह नवाब साहब को बहाए लिये जाती थी। अब तो दिलबर स्थायी रूप से उसी कोठी में रहने लगी थी। कभी-कभी अपने घर भी हो आती थीं। अग्गन साहब और दुलारे मिर्ज़ा बराबर नवाब साहब की शान में कसीदे† पढ़ा करते थे। जब कभी मौका मिल जाता दिलबर, अग्गन साहब और दुलारे मिर्जा की कान्फ्रेंस भी हो जाती थी। मियाँ शकूर की तरफ से अभी तक किसी को शुबहा न था वह उसी तरह बहरे बने हुए लगभग सब ही की आज्ञा पालन में व्यस्त रहते थे। नवाब साहब उसको अपना नमक हलाल नौकर समझते थे और ये तीनों भी शकूर को इसी दृष्टि से देखते थे। शकूर की बीबी दिलबर के यहाँ सबका दिल हाथ में लिए हुए थी।

आज भी सुलेमान कदर तो रात भर चौसर खेलने के बाद आराम कर रहे थे किन्तु दिलबर, अग्गन साहब और दुलारे मिर्ज़ा चाय की मेज़ पर एकत्रित थे और अपनी ढकी-छुपी बातें करने में तल्लीन थे। शकूर उनकी बातचीत से अन्यमनस्क बना हुआ मेज पर हाज़िर था और अपनी धुन में जैसे कभी नाश्ते की कोई चीज उठाकर किसी को दे दी, कभी अपने विशेष ढंग के साथ किसी

†प्रशंसा।

से किसी चीज के खाने के लिए अनुरोध आरम्भ कर दिया, मगर ये तीनों मानो बहुत महत्वपूर्ण बातचीत में तल्लीन थे और शकूर की इन बातों की तरफ ध्यान न देते थे।

दिलबर ने कहा—"मैं तो यह देख रही हूँ कि इस पकड़-धकड़ मे असली चीज को सब जैसे भूल ही गये हैं। मुकदमे की तरफ किसी की तवज्जुह ही नहीं है।"

अग़ान साहब ने कहा—"बेवकूफ हो तुम तो, मुकदमे की पेशियाँ तो हमारे वकील ने जान-बूझकर बढवाई हैं। अब तक खुदा जाने इस बारे में कितना तो रुपया खर्च करना पड़ा। अगर मुकदमा नसीम और जहानदार मिर्जा की उपस्थिति में शुरू हो जाता तो हमारे लिए बेहद खतरा था। तुमको मैं बता चुका हूँ कि खोह की आज्ञाएँ मेरे लिए यही थीं कि जब तक नसीम और जहानदार मिर्जा गिरफ्तार न कर लिये जाएँ और पूरी तरह हमारे कब्जे में न आ जाएँ उस वक्त तक मुकदमा शुरू ही न होने दिया जाए।"

दिलबर ने कहा—"उन दोनो को गिरफ्तार हुए भी बहुत दिन हो चुके हैं।"

अग़ान साहब ने कहा—"ठीक है मगर यह भी हमारी बदकिस्मती कि इस वक्त उस कमबख्त नसीम का एक दोस्त डिप्टी सुपरिटन्डेन्ट होकर यहाँ आ गया और पुलिस ने पूरी ताकत से छानबीन शुरू कर दी।"

दिलबर ने कहा—"उँह! पुलिस निगोड मारी क्या कर लेगी। हमारे गिरोह का पता चलाना कोई बच्चों का खेल है? खोह तक पहुँचना आसान बात नही है।"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"मैं इस किस्म की बातों को हमेशा खतरनाक समझता हूँ। दुनिया में कोई बात मुश्किल नही। अगर हम छिप सकते हैं तो हमको ढूँढ़ा भी जा सकता है। हम लोगों ने यह समझ रखा है कि अक्ल बस हमारे ही पास है। इसके प्रतिकूल हमारे सरदार तिवारी जी का कौल यह है कि इस मजबूती के होते हुए भी हमेशा यह समझो कि तुम्हारा किला रेत पर बना हुआ है और दुश्मन चाहे वह कितना ही कमजोर क्यो न हो, कभी

२०

-◆◆◆

नवाब सुलेमान कदर साहब के यहाँ वही दिन ईद और रात शब रात—कर्ज देने वालों को खुदा सलामत रखे और बांस पर चढ़ाने वाले गिरहकट दोस्तों को बरकरार। उनकी नवाबी में कोई फ़र्क़ न था और न यह ख़याल कि कर्ज का भार कितना हो गया है। उनको अब तो दिन-रात यही सपने दिखाए जाते थे कि बस अब इलाका आया, और बने आप नवाब। दिलवर जान की मुहब्बत तूफ़ान की तरह नवाब साहब को बहाए लिये जाती थी। अब तो दिलवर स्थायी रूप से उसी कोठी में रहने लगी थी। कभी-कभी अपने घर भी हो आती थी। अग़ान साहब और दुलारे मिर्ज़ा बराबर नवाब साहब की शान में कसीदें† पढ़ा करते थे। जब कभी मौका मिल जाता दिलवर, अग़ान साहब दुलारे मिर्ज़ा की कान्फ्रेंस भी हो जाती थी। मियाँ शकूर की तरफ से अभी तक किसी को शुबहा न था वह उसी तरह बहरे बने हुए लगभग सब ही की आज्ञा पालन में व्यस्त रहते थे। नवाब साहब उसको अपना नमक हलाल नौकर समझते थे और ये तीनों भी शकूर को इसी दृष्टि से देखते थे। शकूर की बीवी दिलवर के यहाँ सबका दिल हाथ में लिए हुए थी।

आज भी सुलेमान कदर तो रात भर चौसर खेलने के बाद आराम कर रहे थे किन्तु दिलवर, अग़ान साहब और दुलारे मिर्ज़ा चाय की मेज पर एकत्रित थे और अपनी ढकी-छुपी बातें करने में तल्लीन थे। शकूर उनकी बातचीत से अन्यमनस्क बना हुआ मेज पर हाजिर था और अपनी धुन में जैसे कभी नाश्ते की कोई चीज उठाकर किसी को दे दी, कभी अपने विशेष ढंग के साथ किसी

†प्रशंसा।

न० ९

से किसी चीज के खाने के लिए अनुरोध आरम्भ कर दिया, मगर ये तीनों मानो बहुत महत्वपूर्ण बातचीत में तल्लीन थे और शकूर की इन बातों की तरफ ध्यान न देते थे।

दिलबर ने कहा—"मैं तो यह देख रही हूँ कि इस पकड़-धकड़ में असली चीज को सब जैसे भूल ही गये हैं। मुकदमे की तरफ किसी की तवज्जुह ही नही है।"

अग्गन साहब ने कहा—"बेवकूफ हो तुम तो, मुकदमे की पेशियां तो हमारे वकील ने जान-बूझकर बढ़वाई हैं। अब तक खुदा जाने इस बारे मे कितना तो रुपया खर्च करना पडा। अगर मुकदमा नसीम और जहानदार मिर्जा की उपस्थिति में शुरू हो जाता तो हमारे लिए बेहद खतरा था। तुमको मैं बता चुका हूँ कि खोह की आज्ञाएँ मेरे लिए यही थी कि जब तक नसीम और जहानदार मिर्जा गिरफ्तार न कर लिये जाएँ और पूरी तरह हमारे कब्जे में न आ जाएँ उस वक्त तक मुकदमा शुरू ही न होने दिया जाए।"

दिलबर ने कहा—"उन दोनों को गिरफ्तार हुए भी बहुत दिन हो चुके हैं।"

अग्गन साहब ने कहा—"ठीक है मगर यह भी हमारी बदकिस्मती कि इस वक्त उस कमबख्त नसीम का एक दोस्त डिप्टी सुपरिटन्डेन्ट होकर यहाँ आ गया और पुलिस ने पूरी ताकत से छानबीन शुरू कर दी।"

दिलबर ने कहा—"उँह ! पुलिस निगोड मारी क्या कर लेगी। हमारे गिरोह का पता चलाना कोई बच्चो का खेल है ? खोह तक पहुँचना आसान बात नहीं है।"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"मैं इस किस्म की बातों को हमेशा खतरनाक समझता हूं। दुनिया मे कोई बात मुश्किल नही। अगर हम छिप सकते हैं तो हमको ढूंढ़ा भी जा सकता है। हम लोगों ने यह समझ रखा है कि अक्ल बस हमारे ही पास है। इसके प्रतिकूल हमारे सरदार तिवारी जी का कौल यह है कि इस मजबूती के होते हुए भी हमेशा यह समझो कि तुम्हारा किला रेत पर बना हुआ है और दुश्मन चाहे वह कितना ही कमजोर क्यों न हो, कभी

कमज़ोर न समझो ।"

अग़ान साहब ने कहा—"आपको मालूम है बी साहिबा ! कि नसीम की तरफ से कोशिश करने वाले कैसे-कैसे अक्ल के पुतले हैं ? मेरे तो यह सुनकर ही होश उड़ गये कि फ़लक रफ़अत की लौंडिया ग़ज़ाला, जिसने वाकई कभी घर से बाहर कदम भी न निकाला था, अकेली यहाँ से नैनीताल तक खुद मोटर ड्राइव करती हुई गई है और वहाँ उसने हमारी जमाअत का मुकाबला पिस्तौल से किया है।"

दिलवर ने कहा—"भई कुछ भी कहो, मुझको तो इस खबर पर यकीन आता ही नहीं।"

दुलारे मिर्ज़ा ने आँखें निकाल कर कहा—"कमाल करती हो तुम, खुद तिवारी जी उस मौके पर मौजूद थे किसी और का कथन नहीं खुद उनका कथन है।"

दिलवर ने कहा—"अगर वाकई तिवारीजी का यह कहना है तो इसमें शक की कोई गुंजायश ही नहीं।"

अग़ान साहब बोले—"खुद ही उनका दस्तखत किया हुआ खत है जिसकी यह खबर है। ग़ज़ाला के सम्बन्ध में मुझे खुद यकीन न होता अगर तिवारीजी पत्र में स्पष्ट न लिखते। अब भी मैं हैरान हूँ कि ग़ज़ाला ने कब मोटर चलाना सीखा और कब रिवाल्वर दाग़ना सीखा। ग़ज़ाला के, अलावा एक और लड़की है सलमा अन्सारी। आफत की बनी हुई है। उसी ने उस जगह का पता चलाया है और अब मालूम हुआ है कि उस दिन पता चलाया है जब जहानदार मिर्ज़ा को वेहोश करके खोह की तरफ हमारे आदमी ले जा रहे थे। आनन्द को देखिये कि वह किस तरह गड़रिये के भेष में ऐन उसी दरवाज़े के पास पहुंच गया जो उस रोज खुलने वाला था। वह तो कहिये, कि हमारी खुश किस्मती थी कि उस दिन और उस वक्त खुद तिवारीज़ी खोह से निकल रहे थे जो वह पकड़ा भी गया, कोई और होता तो शायद आनन्द की तरफ़ ध्यान भी न देता।"

दुलारे मिर्ज़ा ने कहा—"खैर इसमें तो कोई हर्ज भी न था। ज्यादा से ज्यादा आनन्द को यह मालूम हो सकता था कि यह है खोह का दरवाज़ा।

मगर उस दरवाज़े को खोलना तो उसके लिए सम्भव न था।"

अग्रान साहब ने कहा—"भाई मेरे! दुश्मन को इतना भी न मालूम होना चाहिये। फर्ज़ कीजिये कि उस वक्त आनन्द के साथ पुलिस की पूरी ताकत होती और खोह का दरवाज़ा फिर बन्द होने से पहले ये लोग घुस जाते खोह मे तो ?"

दिलवर ने कहा—"तो क्या खोह के अन्दर पुलिस का मुकाबला करने वाले नहीं हैं ?"

अग्रान साहब ने कहा—"यों तो खैर हमारे पास सौ के करीब हथियार-बन्द जवान हैं। हथियार भी हैं। मशीनगन तक हैं मगर फिर भी हुकुमत की ताकत से तो मुकाबला नहीं हो सकता। उधर से सौ के बजाए हज़ार जवान भेजे जा सकते हैं, एक के बजाए पचासों मशीनगनें आ सकती हैं। फिर यह तुमको मालूम है कि नैनीताल में कच्चा पहाड़ी सिलसिला है तमाम। एक धमाके में रूई की तरह उड़ सकता है तमाम जादू।"

दुलारे मिर्ज़ा ने कहा—"खैर, इस तरह से तो इतमीनान है कि खोह को ढूंढा जा रहा है वे भी तो उसी खोह मे हैं। उड़ाने वाले यह तो नही कर सकते कि खोह में उनको भी उड़ा दें।"

दिलवर ने कहा—"तोबा है भाई! खुदा बुरे वक्त से बचाए। तो क्या आजकल पुलिस वाले खोह मे पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं ?"

अग्रान साहब ने कहा—"कोशिश न करेंगे, उनको जगह मालूम हो चुकी है। उनके आदमी हमारे कब्जे मे हैं फिर आखिर कोशिश कैसे न करेंगे। अब तो यहाँ की पुलिस और नैनीताल की पुलिस मिल कर खोह के चारो तरफ मँडरा रही है।"

दिलवर ने कहा—"इसका मतलब यह कि खोह से आने-जाने का सिलसिला ही मानो बन्द हो गया।"

अग्रान साहब ने कहा—"सिलसिला तो खैर न बन्द हुआ है न हो सकता है, इसलिए कि उस खोह के दरअसल दस दरवाज़े हैं। जिनमें से सात की मालूम तो उन सबको है जिनके पास तावीज़ हैं और तीन का ज्ञान सिवाय

तिवारीजी के और किसी को नहीं है। सुना है कि वे दरवाज़े ऐसे हैं कि जिनसे आने-जाने का सिलसिला कायम रह सकता है, मगर सिर्फ़ जान-निसार् आ-जा सकते हैं।"

दिलवर ने कहा—"जान निसार ? यह जान निसार कौन ?"

अग़ान साहव ने कहा—"वे पाँच रहस्य। अज्ञात अङ्ग रक्षक, जो तिवारी साहब के लिए नियत हैं। तिवारी साहब के बाद उन्हीं पाँचों का प्रमुख स्थान है। वास्तव में ये पाँचों मानो वजीर हैं तिवारीजी के। उनमें से एक को आज हिरासत में लेकर उस पद से हटा दिया गया है यानी मिस मेरी को। सुना है उस कमवख्त ने नसीम से इश्क वघारना शुरू कर दिया था मगर खुद नसीम ने उसकी दाल न गलने दी।"

दिलवर ने कहा—"हाय कमवख्त ! मगर यह उस पर क्या खुदा की मार थी कि नसीम से इश्क वघारने लगी। उसके वारे में तो सुना है कि खुद तिवारीजी .... ।"

दुलारे मिर्ज़ा ने वात काट कर कहा—"हाँ हाँ ठीक सुना है। मगर तिवारी जी को शायद तुम नहीं जानती, ऐसे-ऐसे खुदा जाने कितने दिल सीने से काल कर फेंक सकते हैं मगर खोह के ग़द्दार को चाहे वह कोई भी हो, कभी वख्श सकते।"

दिलवर ने कहा—"मगर नसीम ने क्यों नहीं फ़ायदा उठाया ? स्पष्ट है कि अगर वह मेरी की वात मान लेते तो शायद खोह से छुटकारा भी मिल जाता ?"

अग़ान साहव ने कहा—"यही तो मिस मेरी ने उनसे कहा था मगर उस शख्स ने वाकई कमाल कर दिया, कि इस तरह खोह से निकलने से साफ़ इंकार कर दिया। और यह भी उसकी किस्मत कि तिवारी साहव ये सब वातें सुन रहे थे। स्पष्ट है कि नसीम के वारे में उनकी राय कितनी अच्छी हो गई होगी।"

दिलवर ने कहा—"तो क्या नसीम वहुत खूवसूरत आदमी है ?"

दुलारे मिर्ज़ा ने हँसकर कहा—"लीजिये अव इनको भी यह खोज शुरू

हुई। वह खूबसूरत हों या न हों आप तो अपनी इसी छुई-मुई से दिल लगाए रखिये। आपका जानवर क्या बुरा है? महीन, महीन रेशमी, बल्कि रेशा खत्मी।"‡

दिलवर ने खिन्नतापूर्ण परन्तु आहिस्ता से कहा—"आग लगे मूए की सूरत को, हज़ार औरतों की एक औरत। वाकई अगर इस कमबख्त की शादी उस रिवाल्वर चलाने वाली लड़की से हो जाती तो क्या होता?"

मग्गन साहब ने कहा—"होता कुछ भी नहीं। इसी तरह खुदा जाने कितनी लड़कियों की शादियां इसी किस्म के उर्द और नोश करने वाले मर्दों के साथ हो जाया करती हैं।"

दुलारे मिर्ज़ा ने कहा—"खैर यह बातें तो छोड़ो। कुछ पता नहीं चला कि जाफ़र नैनीताल पहुंच गया या नहीं?"

दिलवर ने कहा—"कौन जाफ़र?"

मग्गन साहब ने कहा—"बात यह है कि अब नसीम के सब दोस्त, ग़ज़ाला और सलमा अन्सारी वगैरह नैनीताल पहुंचकर सलमा अन्सारी की खाला हैं एक मिसेज़ जावेद, उनके यहाँ ठहरे हैं और वहाँ बनाया है अपना अड्डा। अतः हमने अपना एक जाफ़र नैनीताल भेज दिया है ताकि वह मिसेज़ जावेद के यहाँ किसी-न-किसी तरह नौकरी करके जासूसी करता रहे और उन लोगों की प्रगति की खबर हम लोगो को होती रहे। मेरा तो खयाल है कि वह न सिर्फ पहुंच गया होगा, बल्कि काम भी कर रहा होगा। अब तक कोई खबर नहीं आई उसकी?"

दुलारे मिर्ज़ा ने कहा—"आदमी है निहायत होशियार। अगर पहुँच गया है तो हर तरह से फ़ायदेमन्द साबित होगा।"

उसी वक्त सुलेमान कदर ने आवाज़ दी—"अरे कोई है?"

और ये तीनों गड़बड़ा कर उठे। शकूर को इशारा किया कि जाओ नवाब साहब उठ बैठे हैं और फिर एक-एक करके तीनों नवाब साहब के कमरे में जा पहुंचे। दिलवर ने जाते ही कहा—"रात की हार का इतना बुरा असर पड़ा

‡जल्दी ही पिघल जाने वाली चीज़।

तिवारीजी के और किसी को नहीं है। सुना है कि वे दरवाज़े ऐसे है कि जिनसे आने-जाने का सिलसिला कायम रह सकता है, मगर सिर्फ़ जान-निसार् आ-जा सकते हैं।"

दिलवर ने कहा—"जान निसार ? यह जान निसार कौन ?"

अग़न साहव ने कहा—"वे पांच रहस्य। अज्ञात अङ्ग रक्षक, जो तिवारी साहव के लिए नियत हैं। तिवारी साहव के वाद उन्हीं पांचों का प्रमुख स्थान है। वास्तव में ये पाँचों मानो वज़ीर हैं तिवारीजी के। उनमें से एक को आज हिरासत में लेकर उस पद से हटा दिया गया है यानी मिस मेरी को। सुना है उस कमवख्त ने नसीम से इश्क वघारना शुरू कर दिया था मगर खुद नसीम ने उसकी दाल न गलने दी।"

दिलवर ने कहा—"हाय कमवख्त ! मगर यह उस पर क्या खुदा की मार थी कि नसीम से इश्क वघारने लगी। उसके वारे में तो सुना है कि खुद तिवारीजी ....।"

दुलारे मिर्ज़ा ने वात काट कर कहा—"हाँ हाँ. ठीक सुना है। मगर तिवारी जी को शायद तुम नहीं जानती, ऐसे-ऐसे खुदा जाने कितने दिल सीने से निकाल कर फेंक सकते हैं मगर खोह के ग़द्दार को चाहे वह कोई भी हो, कभी नहीं वख्श सकते।"

दिलवर ने कहा—"मगर नसीम ने क्यों नहीं फ़ायदा उठाया ? स्पष्ट है कि अगर वह मेरी की वात मान लेते तो शायद खोह से छुटकारा भी मिल जाता ?"

अग़न साहव ने कहा—"यही तो मिस मेरी ने उनसे कहा था मगर उस शख्स ने वाकई कमाल कर दिया, कि इस तरह खोह से निकलने से साफ़ इंकार कर दिया। और यह भी उसकी किस्मत कि तिवारी साहव ये सब वातें सुन रहे थे। स्पष्ट है कि नसीम के वारे में उनकी राय कितनी अच्छी हो गई होगी।"

दिलवर ने कहा—"तो क्या नसीम वहुत खूवसूरत आदमी है ?"

दुलारे मिर्ज़ा ने हँसकर कहा—"लीजिये अव इनको भी यह खोज शुरू

हुई। वह खूबसूरत हों या न हो ग्राप तो अपनी इसी छुई-मुई से दिल लगाए रखिये। ग्रापका जानवर क्या बुरा है? महीन, महीन रेशमी, बल्कि रेशा रतमी।"‡

दिलबर ने खिन्नतापूर्ण परन्तु ग्राहिस्ता से कहा—"ग्राग लगे मूए की सूरत को, हज़ार ग्रौरतों की एक ग्रौरत। वाकई ग्रगर इस कमबख्त की शादी उस रिवाल्वर चलाने वाली लड़की से हो जाती तो क्या होता?"

मगन साहब ने कहा—"होता कुछ भी नहीं। इसी तरह खुदा जाने कितनी लड़कियों की शादियां इसी किस्म के उई ग्रौर नोज़ करने वाले मर्दों के साथ हो जाया करती हैं।"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"खैर यह बातें तो छोड़ो। कुछ पता नही चला कि जाफ़र नैनीताल पहुच गया या नही?"

दिलबर ने कहा—"कौन जाफ़र?"

मगन साहब ने कहा—"बात यह है कि ग्रब नसीम के सब दोस्त, ग़ज़ाला ग्रौर सलमा ग्रन्सारी वग़ैरह नैनीताल पहुंचकर सलमा ग्रन्सारी की खाला हैं एक मिसेज जावेद, उनके यहां ठहरे हैं ग्रौर वहां बनाया है ग्रपना ग्रड्डा। ग्रतः हमने ग्रपना एक जाफ़र नैनीताल भेज दिया है ताकि वह मिसेज जावेद के यहां किसी न-किसी तरह नौकरी करके जासूसी करता रहे ग्रौर उन लोगों की प्रगति की खबर हम लोगों को होती रहे। मेरा तो खयाल है कि वह न सिर्फ़ पहुच गया होगा, बल्कि काम भी कर रहा होगा। ग्रब तक कोई खबर नही ग्राई उसकी?"

दुलारे मिर्जा ने कहा—"ग्रादमी है निहायत होशियार। ग्रगर पहुंच गया है तो हर तरह से फ़ायदेमन्द साबित होगा।"

उसी वक्त सुलेमान कदर ने ग्रावाज दी—"ग्ररे कोई है?"

ग्रौर ये तीनों गड़बड़ा कर उठे। ग़फ़ूर को इशारा किया कि जाग्रो नवाब साहब उठ बैठे हैं ग्रौर फिर एक-एक करके तीनों नवाब साहब के कमरे में जा पहुंचे। दिलबर ने जाते ही कहा—"रात की हार का इतना बुरा ग्रसर पड़ा

‡जल्दी ही पिघल जाने वाली चीज।

कि किसी तरह नींद पूरी ही नहीं होती।"

सुलेमान कदर ने दिलवर का हाथ थाम कर अंगड़ाई लेते हुए कहा—"तुमने उठा क्यों न दिया ? क्या बजा होगा ?"

अग़ान साहब ने कहा—"अभी क्या बजा है क़िबला ! यही कोई ग्यारह का अमल होगा। रईस आदमी इतने तड़के नहीं उठा करते।"

सुलेमान कदर ने उठते हुए कहा—"तुम्हारी कसम रात को तीन मेरे सामने बजे थे। क्यों बेगम कुछ नाश्ता वग़ैरह मिलेगा या नहीं ?"

दिलवर ने कहा—"देखिये नवाब साहब ! मैं हज़ार मर्तबा कह चुकी हूँ कि मुझको यह बनावटी बातें बहुत बुरी लगती हैं। बेग़म आपकी न जाने कौन खुशकिस्मत होगी, मेरी हैसियत तो जो है वह मुझ पर खूब रोशन है।"

सुलेमान कदर ने घबरा कर कहा—"अरे अरे ! खुदा के वास्ते सुबह-सुबह लड़ने की कोशिश न करो।"

अग़ान साहब ने शकूर को चाय लाने का इशारा करते हुए सुलेमान कदर से कहा—'माफ कीजियेगा नवाब साहब ! इस सिलसिले में दिलवर बाई का शिकवा तो आपको सुनना ही पड़ेगा। तमाम शहर में शोर है कि दिलवर बाई घर बैठ की है आपके—हर एक यह जानता है कि आपने निकाह कर लिया है इनसे। लेकिन आप ही जानते होंगे कि आपने इस किस्से को आखिर क्यों टाल रखा है ?"

सुलेमान कदर ने कहा—"हराम है मुझ पर, वग़ैर निकाह किये हुए इलाके पर कब्ज़ा करना। लेकिन जरा यह झगड़ा खत्म हो ले।"

दुलारे मिर्ज़ा ने नवाब साहब का अनुमोदन करके दिलवर और सुलेमान कदर के बीच सुलह करा दी। इस किस्म की लड़ाइयाँ, इस किस्म की सुलह दिन में पचासों बार हुआ करती थी। नाश्ते से निवृत होकर ये सब झूले के जल्से में जाने की तैयारियाँ करने लगे। आज दिलवर ने सावन के सिलसिले में एक बाग़ में झूले का जलसा किया था। जिसमें शहर-भर की तवायफें आने वाली थीं। इन लोगों के जाने के बाद शकूर ने मुनीर के बंगले पर जाकर उनकी बीवी को नोट लिखवाए कि खोह में इतने आदमी और इतने शस्त्रास्त्र हैं और जाफ़र नामी जासूस आप लोगों पर तैनात हुआ है।

साहब ने कमरे में प्रवेश करके कहा—"अस-सलाम वालेकुम हज़रात ।"

मुनीर ने खड़े होकर गर्दन झुकाते हुए कहा—"आखिर आप न माने, मैंने तो अर्ज़ कर दिया था कि कोई परेशानी की बात नहीं है। अपनी बीबी से भी कह दिया था वह आपको खुद जाकर विश्वास दिला दे, मगर आप आ ही गये।"

नवाब साहब ने बैठते हुए कहा—"वह बेचारी कई मर्तबा आई मगर बुरखुरदार* ये मौके समझने और समझाने से भिन्न होते हैं। मेरी ग़ज़ाला कैद में बन्द हो और मैं आराम से बैठ सकूँ ? मुझसे यह मुमकिन न हुआ। पहले तो मुझको यह बताओ कि कुछ पता चला ?"

आफ़ताब ने कहा—"पता चल रहा है धीरे-धीरे, और इन्शा अल्लाह† आज ही कल में पता चल जाएगा। आप अपने दिल में विश्वास रखिये।"

नवाब साहब ने कहा—"अच्छा उनको उतरवाकर अन्दर पहुँचा दो, सलमा की खाला के पास। मुझसे ज़्यादा तो वह बेकरार हैं। और हाँ नाहीद भी तो आई है। लाख-लाख रोका मगर एक न मानी।"

आफ़ताब ने उठते हुए कहा—"कमाल किया आप लोगों ने।"

आफ़ताब ने मिसेज़ जावेद के सुपुर्द उन सब को किया। आख़िर उन सब छुट्टी पाकर और सबको अच्छी तरह समझा-बुझाकर ये लोग गुफा की तरफ़ चल दिये, जहाँ पुलिस घेरा डाले मौजूद थी और टेलीफ़ोन की सूचना के मुताबिक मुनीर और विलियम ने बहुत ज़बरदस्त इन्तज़ाम कर दिया था। उन लोगों के कैम्प के सामने पुलिस का ज़बर्दस्त पहरा था। कैम्प में दाखिल होकर ये तीनों नकशा लेकर बैठ गये और देर तक ग़ौर करते रहे।

विलियम ने कहा—"साँप की-सी जो लकीरें हैं उनके विषय में तो यह निश्चित है कि वे सड़क के निशान ज़रूर हैं मगर बिच्छू से क्या मतलब है ?"

आफ़ताब ने कहा—'मेरे खयाल में हम लोग क्रम का खयाल नहीं करते और इसी में धोखा खा रहे हैं।"

मुनीर ने कहा—"धोखा कहाँ खा जाते हैं, सोम के दिन आख़िर पहुँच

*बेटे। †भगवान् ने चाहा।

हो गये थे। तुमने बिलकुल सही कहा था कि उन शब्दों से मतलब झरना है। सड़क से चालीस कदम दक्षिण की तरफ़ नीचे उतर कर वाकई झरना मिला और करीब ही कहीं दिल की तसवीर भी होगी, जिसको शाम को जाने की वजह से हम तलाश नहीं कर सके।"

आफ़ताब ने कहा—"अरे हाँ। रात मैंने उस पर गौर किया कि यह दर-असल दिल नहीं है बल्कि नक्शे में गौर से देखिये तमाम दिल पर दो की संख्या भी बनी हुई है।"

मुनीर ने गौर से देखते हुए कहा—"है तो सही, मगर इसमें क्या मत-लब है?"

आफ़ताब ने कहा—"दुहरावाला यह है दिलन्दिल यानी दलदल।"

विलियम ने एक दम खड़े होकर कहा—"जेंटलमैन! बिलकुल ठीक। अरे यार तुम तो खतरनाक किस्म के सालसुम्फकर हो।"

मुनीर ने दोनों से पेंसिल दबा कर कहा—"ठीक है। हमने सख्त धोखा खाया कि उस दो की संख्या को न देखा और यदि देख भी लेता तो मुझको मालूम है कि मैं यह समझ ही न सकता कि दो दिल मिलकर दलदल बन जाते हैं।"

आफ़ताब ने कहा—"तुम को याद होगा कि जब हम लोग झरने के पास पहुँचे हैं तो वहाँ दलदल-सी थी एक जगह।"

विलियम ने कहा—"छि छि छि! जगह पर पहुँचकर लौट आये। इसको कहते हैं किस्मत, मगर कमाल किया आफ़ताब तुमने। वाकई यह दल-दल खूब खूब समझे, खूब पहुँचा तुम्हारा दिमाग।"

मुनीर ने कहा—"फिर भी इसी से सिद्ध है कि अब इत्यादि कुछ नहीं है।"

आफ़ताब ने कहा—"जी नहीं, मेरा ख्याल यह है कि आज की कोशिश दोनों सूरतों से करके देखी जाए। आज का मामला जरा टेढ़ा नजर आ रहा है। यह तीर की तसवीर बनाई गई है आखिर में इसका मतलब मेरे ख्याल में यह हुआ कि हम सड़क की तरफ़ से उलटे चलें, इसलिए कि

उलटा है ।"

मुनीर ने कहा—"क्या किया जाय ? मैं समझा नहीं । जैसे सड़क से ऊपर की तरफ़ जाने के बजाए आठ फुट नीचे उतरें ।"

आफ़ताब ने कहा—"मगर ध्यान रहे अब दिशाएँ भी बदल जायेंगी ।"

मुनीर ने कहा—"ठीक है, ठीक है । यह मैं समझ गया । तुम्हारा मतलब यह है कि इस नकशे में इशारा किया गया है जैसे दरवाज़े से सड़क की तरफ़ और हम को जाना है सड़क से दरवाजे की तरफ़ । बिलकुल ठीक, समझ में आने वाली बात । अच्छा तो फिर चलो ।"

ये तीनों कैम्प से निकलकर उस जगह पहुंच गए जहाँ से सड़क दो भागों में बँट जाती है । इसलिए कि यह निश्चित है कि यह नक़शा इसी स्थान को मुख्य मानकर बनाया गया है । मुमकिन है कि यही मुख्य बात ये लोग ग़लत समझें हों । परन्तु उस स्थान को केन्द्र-बिन्दु स्वीकार करके ये लोग झरने और दलदल तक पहुंच चुके थे । इसका मतलब यह हुआ कि, वाकई उनका वह ख़याल ठीक था कि मुख्य जगह यही है । उस जगह पहुँचकर उन लोगों ने नक्शे के क्रम के अनुसार जैसे वापसी का इरादा किया तथापि ये लोग बजाए उत्तर-पश्चिम की तरफ़ ऊपर जाने के पूरब-दक्षिण की तरफ़ नीचे उतरने लगे और नाप कर आठ फुट नीचे उतरे होंगे कि आफ़ताब ने उनको रोक दिया ।

"बस जनाब । इसी जगह के आस-पास इस मिसरे की सरह;[*] मालूम करो और बिच्छू को तलाश कीजिये ।"

विलियम ने कहा—"मिसरे[†] लिखे हैं सालों ने मानो बड़े शायर ही तो हैं ।"

आफ़ताब ने कहा—"सुन लीजिये मुनीर साहब ! यह अपने पुलिसपन पर उतर आए, साले-बहनोई शुरू कर दी और रात को मुझ से लड़ रहे थे कि पुलिस वाले हरगिज़ शराफ़त का दामन हाथ से नहीं छोड़ते ।"

मुनीर ने कहा—"मगर मैंने तो तुम्हारा ही अनुमोदन किया था । गालियाँ तो जैसे हम लोगों की वर्दी में शामिल हैं ।"

---

[*]मतलब । [†]पद ।

विलियम ने हँसकर कहा—"यह तो बड़ी मुसीबत है। अब आप का मतलब यह है कि इतनी हलकी-सी गाली भी न बकी जाय। इसका मतलब तो यह हुआ कि पुलिस वालों के लिए आप यह चाहते हैं कि वह वज़ीफ़ा* पढ़ा करें।"

आफ़्ताब ने कहा—"जी नहीं, बल्कि मेरा विश्वास, जिससे आप सहमत थे, यह था कि पुलिस वालों के लिए यह असम्भव है कि वे ज़बान को ख़राब किये बग़ैर अपना काम निकाल सकें। यद्यपि अब वह अंग्रेज़ों का वक़्त नहीं रहा है जब पुलिस में गरजदार आवाज़ के साथ गाली देने वाले ही कामयाब अफ़सर बन सकते थे। अब तो लिखे-पढ़े लोग भी पुलिस में आने लगे हैं जिनको गालियों के अलावा और भी बहुत कुछ सिखाया-पढ़ाया जाता है।"

मुनीर ने कहा—"यह ठीक है मगर पुलिस वाले अपने बुज़ुर्गों की रीति को भी एक दम नहीं भूल सकते। यही क्या कम है कि अब पुलिस वाले इनसान की सूरत के होने लगे हैं। पहले तो पुलिस वालों का एक ख़ास हुलिया हुआ करता था। मसलन—मूँछें ऐसी जैसे मुँह में अबाबीलें दबाए हुए हैं। एक-से-एक बल खाई हुई। दाढ़ी अत्यन्त लम्बी-चौड़ी और तोंद, सब मिलाकर इन्द्र-सभा के काले देव के क़रीबी रिश्तेदारों में से हैं मानो। मगर अब मानो देव की बजाए इनसान भी भर्ती होने लगे हैं। पुलिस में रह गई यह बदज़बानी और गाली-गलौज, यह भी कुछ दिनों में चली जायगी।"

आफ़्ताब ने कहा—"शुक्र है कि मैंने तुमको अब तक गाली बकते नहीं सुना।"

विलियम ने कहा—"अरे भाई अब मुझको भी न सुनोगे। अब मालूम हो गया कि पुलिस का रौब इस हद तक ख़त्म हो चुका है कि वह बदमाशों को गाली तक नहीं कह सकते। तो मेरा मतलब यह था कि इन बदमाश साहब ने जगह-जगह पर जो शेरो-सुख़न° से काम लिया है और मैं हमेशा [illegible] में पेश हुआ हूँ।"

आफ़्ताब ने कहा—"आप शेर या मिसरे पर ग़ौर न कीजिये यही बताइये

---

*ईश्वर-स्तुति। ° काव्य के पद।

इस कमबख्त विच्छू से क्या मतलब है ?"

विलियम ने कहा—"देखिये साहब ! मेहनत-मशक्कत, रोब-दबदबा, ताकत और कूवत के तमाम काम आप मुझसे ले सकते हैं मगर दिमागी काम की मुझसे उम्मीद न रखिये। हाँ, इतना बताए देता हूँ कि यहाँ एक जंगली पौधा भी होता है जिसको बिच्छू कहते हैं। यह पौधा देखिये, वह रहा झुंड-का-झुंड है पौधों का।"

आफ़ताब ने पौधों की तरफ ध्यान देते हुए कहा—"हो सकता है कि विच्छु से मुराद यही पौधे हों।"

विलियम ने आफताब को उस तरफ बढ़ते हुए देखकर कहा—"मगर मेहरबानी करके इन पौधों की पत्तियाँ न छू लीजियेगा। इनका नाम बिच्छू इसीलिए है कि इन पत्तियों के ज़रा भी बदन से छूते ही जलन होती है मानो सचमुच विच्छू ने डंक मार दिया हो।"

उन पौधों के पास पहुँचकर और उनको अच्छी तरह देखकर मुनीर ने कहा—"इन पौधों को हटाया कैसे जाए या पार कैसे किया जाए ?"

आफ़ताब ने कहा—"मेरा ख्याल है कि इन पौधों को बिलकुल हटाने की जरूरत नहीं है। इसलिए कि ये सम्भवतः हटाए नहीं जाते वरना इनकी यह सूरत न होती। स्पष्ट है कि यदि यह सही है तो एक हफ्ते पहले इनको हटाया गया होता, मगर उसके कोई चिन्ह नहीं हैं। अब सवाल यह है कि इस मिसरे से क्या मतलब है ?"

अख्तर वक्त सहर† महर‡ दरमे खाना है।

एक सब-इन्स्पेक्टर ने आगे बढ़कर कहा—"हुजूर यह देखिये इस पत्थर पर यह क्या बना हुआ है ?"

आफ़ताब ने सुनते ही एक छलांग लगाई और जाकर गौर से देखा तो एक बहुत बड़े पत्थर पर एक तरफ़ एक सितारा और दूसरी तरफ़ सूरज बना हुआ था। ये दोनों चीजें लोहे की बनी हुई थीं और मालूम होता था कि जैसे पत्थर पर इनको जड़ दिया गया है। आफ़ताब, मुनीर और विलियम तीनों

---

† सुबह का सूरज। ‡ चांद।

देर तक उन चीज़ों को देखते रहे। आखिर आफ़ताब ने सितारे को दबाकर इधर-उधर हिलाकर और हर तरह से दबाने की कोशिश करके देखा मगर कोई नतीजा न निकला। आफ़ताब के बाद मुनीर और विलियम ने बारी-बारी अपनी पूरी कारीगरी खर्च कर दी मगर कोई नतीजा न निकल सका। सब-इन्स्पेक्टर ने भी सितारे के साथ पूरी कुश्ती लड़ी। आखिर आफ़ताब ने कहा—"तुम लोग सितारे की तरफ ध्यान इसलिए दे रहे हैं कि इस मिसरे में अख्तर का लफ़्ज मौजूद है। मगर अब मेरी समझ में एक बात आ रही है कि सूरज की तसवीर भी रहस्य से खाली नहीं है। क्या जाने कि 'अख्तरे वक्त सहर' से मतलब सूरज ही से हो।"

यह कहकर आफ़ताब ने उस सूरज की लोहे की किरणों में अपनी उंगलियाँ फँसाकर घुमाने की कोशिश ही की थी, कि एक घड़घड़ाहट के साथ वह पत्थर अपनी जगह से हट गया मगर जैसे ही आफ़ताब ने पत्थर के हिलने से घबराकर अपना हाथ हटाया है, पत्थर ने फिर खोह का मुँह पहले की भांति बन्द कर दिया। अब ये तीनों रह-रहकर ज़ोर मार रहे हैं, तरह-तरह से उस सूरज को मोड़ने, दबाने, घुमाने की कोशिश करते हैं परन्तु वह टस से मस नहीं होता। इस सफलता के पश्चात् यह असफलता ऐसी न थी कि उन लोगों पर उसका असर न होता। पहाड़ की उस सर्दी में भी तीनों सराबोर थे पसीने में, और लगभग तमाम दिन यही हाल रहा परन्तु कामयाब न हो सके और आखिरकार शाम को असफलता लेकर ही वापस होना पड़ा।

इस कमवख्त विच्छू से क्या मतलव है ?"

विलियम ने कहा—"देखिये साहव ! मेहनत-मशक्कत, रौव-दवदवा, ताकत और कूवत के तमाम काम आप मुझसे ले सकते हैं मगर दिमागी काम की मुझसे उम्मीद न रखिये। हाँ, इतना वताए देता हूँ कि यहाँ एक जंगली पौधा भी होता है जिसको विच्छू कहते हैं। यह पौधा देखिये, वह रहा भुंड-का-भुंड है पौधों का।"

आफ़ताव ने पौधों की तरफ ध्यान देते हुए कहा—"हो सकता है कि विच्छु से मुराद यही पौधे हों।"

विलियम ने आफताव को उस तरफ वढ़ते हुए देखकर कहा—"मगर मेहरवानी करके इन पौधों की पत्तियाँ न छू लीजियेगा। इनका नाम विच्छू इसीलिए है कि इन पत्तियों के ज़रा भी वदन से छूते ही जलन होती है मानो सचमुच विच्छू ने डंक मार दिया हो।"

उन पौधों के पास पहुँचकर और उनको अच्छी तरह देखकर मुनीर ने कहा—"इन पौधों को हटाया कैसे जाए या पार कैसे किया जाए ?"

आफ़ताव ने कहा—"मेरा ख्याल है कि इन पौधों को विलकुल हटाने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए कि ये सम्भवतः हटाए नहीं जाते वरना इनकी यह सूरत न होती। स्पष्ट है कि यदि यह सही है तो एक हफ्ते पहले इनको हटाया गया होता, मगर उसके कोई चिन्ह नहीं हैं। अव सवाल यह है कि इस मिसरे से क्या मतलव है ?"

अख्तर वक्त सहरां† महरां‡ दरमे खाना है।

एक सव-इन्स्पेक्टर ने आगे वढ़कर कहा—"हुजूर यह देखिये इस पत्थर पर यह क्या वना हुआ है ?"

आफ़ताव ने सुनते ही एक छलाँग लगाई और जाकर गौर से देखा तो एक वहुत वड़े पत्थर पर एक तरफ़ एक सितारा और दूसरी तरफ़ सूरज वना हुआ था। ये दोनों चीज़ें लोहे की वनी हुई थीं और मालूम होता था कि जैसे पत्थर पर इनको जड़ दिया गया है। आफ़ताव, मुनीर और विलियम तीनों

† सुवह का सूरज। ‡ चांद।

देर तक उन चीज़ों को देखते रहे। आख़िर आफ़ताब ने सितारे को दबाकर इधर-उधर हिलाकर और हर तरह से दबाने की कोशिश करके देखा मगर कोई नतीजा न निकला। आफ़ताब के बाद मुनीर और विलियम ने बारी-बारी अपनी पूरी कारीगरी ख़र्च कर दी मगर कोई नतीजा न निकल सका। सब-इन्सपेक्टर ने भी सितारे के साथ पूरी कुश्ती लड़ी। आख़िर आफ़ताब ने कहा—"हम लोग सितारे की तरफ़ ध्यान इसलिए दे रहे हैं कि इस सितारे में पत्थर का सबब मौजूद है। मगर अब मेरी समझ में एक बात आ रही है कि सूरज की तसवीर भी रहस्य से ख़ाली नहीं है। क्या जाने कि 'सितारे वक़्त सहर' से मतलब सूरज ही से हो।"

यह कहकर आफ़ताब ने उस सूरज की लोहे की किरणों में अपनी उंगलियाँ फँसाकर घुमाने की कोशिश ही की थी, कि एक घड़घड़ाहट के साथ वह पत्थर अपनी जगह से हट गया मगर जैसे ही आफ़ताब ने पत्थर के हिलने से घबराकर अपना हाथ हटाया है, पत्थर ने फिर खोह का मुँह पहले की भाँति बन्द कर दिया। अब वे तीनों रह-रहकर ज़ोर मार रहे हैं, तरह-तरह से उस सूरज को मोड़ने, दबाने, घुमाने की कोशिश करते हैं परन्तु वह टस से मस नहीं होता। इस सफलता के पश्चात् यह असफलता ऐसी न थी कि उन लोगों पर उसका असर न होता। पहाड़ की उस सर्दी में भी तीनों सराबोर थे पसीने में, और लगभग तमाम दिन यही हाल रहा परन्तु कामयाब न हो सके और आख़िरकार शाम को असफलता लेकर ही वापस होना पड़ा।

२२

खोह में आज विशेष प्रकार की दौड़-धूप और कुछ गदर की-सी दशा नज़र आ रही थी। लोग चकित, घवराए-घवराए-से फिर रहे थे। हद यह है कि तिवारी-जैसे दृढ़ निश्चयी व्यक्ति के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं फिर भी वह अपने रौव को कायम रखे हुए अपने आदमियों को ज़रूरी चेतावनी दे रहा था। आज उसने अपना सम्पूर्ण ध्यान का विन्दु उस दरवाजे को वना रखा था जिसका नाम वृहस्पति दरवाज़ा था। हरेक व्यक्ति हथियारवन्द भी था और चौकन्ना भी। तिवारी अपने तमाम आदमियों को सावधान रहने की चेतावनी देने के वाद खुद अपनी चेतना एकत्रित करने के लिए विल्कुल इस तरह टहल रहा था जैसे नैपोलियन के सम्वन्ध में सुना है कि अपने कमरे में रात-रात-भर कमर पर हाथ रखे टहला करता था। हद यह है कि नसीम ने दो मर्तवा उसको वुलवा भेजा, मगर वह न आ सका। आखिर आनन्द ने आकर जव कुशलता पूछी और इस परेशानी की वजह मालूम की तो उसने जैसे चौंक कर कहा—"कुछ नहीं दोस्त ! आओ चलो, नसीम के पास वैठकर वातें करें।" यह कहकर उसने अपने एक साथी को ज़रूरी खयाल रखने वाली वातें वताईं और नसीम के कमरे में चला आया। नसीम ने भी उसके चेहरे से उसकी परेशानी को पढ़ लिया, यद्यपि वह मुसकराने की कोशिश कर रहा था।

नसीम ने कहा—"यह आखिर किस्सा क्या है ? कल से मैं यह हाल देख रहा हूँ। अगर कोई विशेष रहस्य न हो तो शायद हम लोग कोई सलाह दे सकें। मुझको तो तुम कल से कुछ वीमार से नज़र आते हो ?"

मेरा कोई हाथ नहीं है। यह बिलकुल प्राकृतिक बात है कि जो बेहद आराम तुमने मुझे और मेरे साथियों को पहुंचाया है, इससे आजादी कुछ और ही चीज़ है। आज़ादी की कल्पना-मात्र से एक विशेष प्रकार की शान्ति अब भी मिलती है। लेकिन मैं निहायत सफ़ाई से तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि अगर तुमको मुझ पर विश्वास हो और पुलिस के इस हस्ताक्षेप को खत्म करना चाहते हो तो मुझको सिर्फ़ एक घन्टे के लिए खोह से बाहर निकलवा दो ताकि मैं ।"

तिवारी ने हंसकर बात काटते हुए कहा—"ताकि आप पुलिस को मना कर दें कि चूंकि तुमको मेरी खोज है और मैं इस खोह के सरगना तिवारी से वचन दे चुका हूं अतः अब कष्ट न करो। क्या बात करते हो तुम भी ?"

आनन्द ने कहा—"फिर सवाल यह है कि आखिर इस सूरत का मुकाबला कैसे किया जाएगा ?"

तिवारी ने अत्यन्त सन्तोषपूर्वक मुसकराते हुए कहा—"आपको मालूम है कि यह खोह एकमात्र मेरी सम्पत्ति या राज्य नहीं है। मैंने इसको उस जाति का केन्द्र बनाने का प्रयत्न किया था जो डकैती, लूट और कत्ल तथा गारतगिरी को अपना पेशा बनाए हुए हैं परन्तु शिक्षा से वंचित हैं, अतः अपनी उस कला को अपराध के रूप में अपनाए हुए हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यह कला उन्नतिशील रूप में भी अपराध ही रहता है। मगर कम-से-कम अपराध के लिए जिस सलीके की ज़रूरत है वह अवश्य उत्पन्न हो जाता है। खैर यह बहुत लम्बी-चौड़ी बहस है और मैं अपने दृष्टिकोण को आसानी के साथ शायद इस हलचल की स्थिति में समझा भी न सकूं। मेरे कहने का उद्देश्य यह है कि मैंने कभी इस खोह को अपनी सम्पत्ति नहीं समझा बल्कि अपनी जाति की अमानत समझा। यह बात हमेशा अपने गिरोह वालों को बताता रहा कि हमारी सफलता की प्रथम शर्त यह है कि वफ़ादारी और रहस्य गोपनीय रहे और हमारे यहाँ सबसे बड़ा दण्ड द्रोही को दिया जा सकता है ताकि इसकी वजह से हम सबको समान रूप से कोई हानि न पहुंच सके। परन्तु हर जाति में हर प्रकार के लोग होते हैं। याद रखिये कि किसी भी जमाअत को दुश्मनों से उस

क नुकसान पहुच ही नही सकता है जब तक कि अपने ही दोस्त उस
मे शामिल न हो। हमारे यहाँ भी कुछ ऐसा ही हुआ है कि यह रहस्य
ही मे से ग़द्दारी के नतीजे के रूप मे या असावधानी से पुलिस तक पहुँच
है, और अब हमको कोई हक नही कि हम पुलिस की इस सफलता पर
सोस करें। जिस सस्था का कोई व्यक्ति द्रोही या असावधान हो उस संस्था
सजा यह है कि जिस पर हम पहुचने वाले है।"

नसीम ने कहा—"तुमने तो लेक्चर शुरू कर दिया। मैं संस्था के खयाल
नहीं बल्कि तुम्हारे व्यक्तिगत खयाल से सख्त फ़िक्र में हूँ कि तुमने अपने
लिए क्या सोचा है।"

तिवारी से कहा—"मेरी तरफ़से तुम निश्चिन्त रहो हालांकि एक सरदार
की इससे बढ़कर और कोई कायरता नही हो सकती कि वह जान बचाकर
कायरो की भाँति भागे, मगर मैं द्रोहियो का सरदार बनना नही चाहता। मैं
और मेरे वफ़ादार साथी जब तक हो सकेगा मुकाबला करेंगे। स्पष्ट है कि
मुकाबले की दो ही सूरत हो सकती हैं, जय या पराजय। जीत अगर हुई तो
बहुत थोड़े समय के लिए होगी। एक बार इस रहस्य के प्रकट हो जाने के बाद
हम तनिक भी सुरक्षित नही हैं और हर समय हम पर आपत्ति आ सकती है।
हारने के रूप मे कोशिश इस बात की होगी कि कम-से-कम जान बचा सकें।
और इसका इन्तज़ाम मेरे पास है कि मैं और मेरे आदमी इस खोह से निकल
जाएँ। तुम विश्वास रखो कि तुमको या तुम्हारे साथियो को, जिस वक्त तक
मैं मौजूद हूँ कोई नुकसान नही पहुँच सकता। मैं इस वक्त सिर्फ यही क
सकता हूँ कि अपने उद्दण्ड कैदियों को जो मेरे सद्व्यवहार के पश्चात् भी उद
ही रहे, उद्दण्डता की सज़ा देकर और अपने उन कैदियों को मेरे दोस्त बने
दुआ देकर चला जाऊँ। तुम और तुम्हारे साथी इन दोनों की गिनती मे
आते। तुमसे तो मानो दोस्ती भी नही घनिष्ठता हो रही है। और इसका
खुद मेरा दिल ही अनुभव कर रहा है कि नसीम एक कैदी की सूरत मे
पास आया, मेरे निकट हुआ, मुझमे समाया और आज भाई बन कर
रहा है।"

ये शब्द एक डाकू, एक ठग, एक बटमार और एक अपराध-वृत्ति के थे मगर वातावरण कुछ इस प्रकार का बन गया था कि गजाला के आँसू न रुक सके और सलमा ने भी आंखों पर साड़ी का आँचल रख लिया। यह दृश्य देखकर तिवारी ने कहा—"कीतने किमती हैं ये आंसू, आज तक किसी डाकू के लिए किसी सद्चरित्र और पवित्र स्त्री का हृदय इस प्रकार न पसीजा होगा। मुझको अपने व्यवहार का मूल्य मिल गया और मैं खुश हूँ कि मैं जितना बड़ा अपराधी हूँ मेरा हृदय उतना अपराधी नहीं है।"

आनन्द ने कहा—"तिवारी तुम वक्त से पहले इतना दिल क्यों तोड़ रहे हो? क्या वाकई यह मुमकिन नहीं कि तुम हम लोगों को किसी दरवाजे से निकाल दो। प्रकट है कि पुलिस को जब हम लोग मिल जाएंगे तो उसकी यह तलाश खत्म हो जाएगी। और एक सज्जन व्यक्ति होने के नाते हम यह वादा करते हैं कि तुम्हारा रहस्य हमारा रहस्य रहेगा, और हम किसी काल्पनिक जगह के सम्बन्ध में बता देंगे कि हम वहाँ कैद थे और अब आजाद कर दिये गये हैं तथा हमारे कैद करने वाले भाग चुके हैं।"

तिवारी ने कह—"नहीं आनन्द भाई तुम नहीं समझते, इससे पहले पुलिस इस खोह पर कब्जा करेगी और अपनी उस खोज को जिसमें वह कामयाब हो चुकी है, हरगिज अधूरा न रहने देगी।"

उसी वक्त एक व्यक्ति दौड़ा हुआ आया और फूली हुई साँस से कहने लगा—"सरदार खोह के मुँह पर लोग पहुँच चुके हैं और उसकी आवा-जाई शुरू हो गई है।"

तिवारी ने उसे सन्तोष दिलाते हुए कहा—"तो आखिर इस कदर परेशान होने की क्या जरूरत है? तुम चलो मैं अभी आता हूँ।"

नसीम और आनन्द विस्मय के भाव से तिवारी की ओर देख रहे थे। तिवारी ने उस वक्त भी मुसकराने की चेष्टा करते हुए कहा—"अच्छा भाई! यार जिन्दा सोहबत बाकी, जो बचे तो तुमसे फिर मिलेंगे। लेकिन खुदा से दुआ करो कि इस तरह न मिलें बल्कि एक शान्तिप्रिय नागरिक और एक सज्जन मनुष्य की भाँति मिलें। मैं कोशिश करूंगा कि तुम लोगों से

लखनऊ ग्राकर कभी-न-कभी जरूर मिलूँ । ग्रब तुम निश्चिन्त रहो नसीम तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी सुलेमान कदर तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगा । उसकी पीठ पर मेरी ही ताकत काम कर रही थी । ग्रौर मैं या वह तुम्हारे शत्रु न थे बल्कि मैं तो उस व्यक्ति को जानता भी नहीं, न वह मुझको जानता है । उद्देश्य केवल इतना था कि नवाब फलक रफग्रत साहब की तमाम सम्पत्ति इस सोह के कब्जे में ग्रा जाए । इसका जरिया सुलेमान कदर को बनाया गया था । ग्रब वह सम्पत्ति भी तुम्हारी है ग्रौर हम भी तुम्हारे हैं। सुलेमान कदर हद से ज्यादा बेवकूफ इन्सान है ग्रौर बेवकूफ से बदला लेना चूँकि तुम्हारी शान के लायक नहीं ग्रतः उसको माफ़ कर देना । वह ग्रपनी सजा को खुद ही पहुँच पाएगा। ग्रम्मन साहब ग्रौर दुलारे मिर्जा ग्रगर तुमको मिल सकें तो हैं वाकई हर सजा के लायक ग्रौर मुझको भी सन्देह है कि यह रहस्य उन्हीं के द्वारा प्रकट हुग्रा है ।"

एक दूसरे ग्रादमी ने ग्राकर सूचना दी—"सरदार ! उन लोगों को सम्भवतः उस दरवाजे के खोलने की तरकीब मालूम हो चुकी है । इसलिए कि दरवाजा बराबर हिल रहा है ।"

तिवारी ने उठते हुए कहा—"ग्रच्छा भाई नसीम ! खुदा हाफ़िज़ । ग्रानन्द दोस्त भूल न जाना, ग्रजाला बहिन ग्रौर सलमा बहन ! ग्राप दोनों भी मेरी मुँह बोली बहनें हैं तो ग्रपने डाकू भाई को याद रखियेगा ।"

विचित्र दृश्य था यह भी, कि तिवारी की ग्राँखें भी डबडबाई हुई थीं ग्रौर नसीम तथा ग्रानन्द की ग्राँखों में भी ग्राँसू चमक रहे थे । ग्रजाला ग्रौर सलमा तो वाकई गंगा-यमुना बहा रही थी । तिवारी ने पहले ग्रानन्द से हाथ मिलाया, फिर नसीम को गले लगाया ग्रौर ग्राखिर में हाथ जोड़कर दोनों स्त्रियों को प्रणाम किया । इसके बाद वह कमरे के बाहर चला गया । परन्तु फिर लौटकर—"देखो जिस वक्त तक शान्ति न हो जाए, तुम लोग कमरे के बाहर न निकलना; इसलिए कि मुकाबला सख्त होगा ।"

तिवारी ग्रभी दो-चार ही कदम गया होगा कि एक सख्त फड़फड़ाहट-सी

१. भगवान मालिक है ।

प्रतीत हुई और साथ-ही-साथ गोलियों की आवाज़ गूंजने लगी। एक ओर, एक हुल्लड़, कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देती थी। सहसा नसीम का दरवाज़ा खुला और नसीम एकदम खड़ा हो गया। देखता क्या है कि जहानदार मिर्जा साहब हांफते हुए चले आ रहे हैं कमरे में।

"अरे बेटा यह क्या आफत शुरू हो गई है? बाहर निकल कर तो देखो एक प्रलय-सी मची हुई है। आखिर यह माजरा क्या है? मैं तो नमाज़ पढ़ रहा था कि प्रलय-सी शुरू हो गई।"

नसीम ने दरवाजा बन्द करते हुए कहा—"पुलिस ने खोह का पता चला लिया है।"

जहानदार मिर्जा साहब ने कहा—"पुलिस ने पता चला लिया? अरे भाई तिवारी से कह दो कि कम्बख्त कहीं भाग जाए।"

नसीम ने जहानदार मिर्जा साहब को बिठाते हुए कहा—"आप तसल्ली रखिये वह खुद होशियार है।"

अब जहानदार मिर्जा साहब की बड़बड़ शुरू हो चुकी थी कि आखिर पुलिस ने पता चला लिया ना। वह तो मैं जानता ही था कि पुलिस से ये लोग बच नहीं सकते—वह बक रहे थे और ये लोग उस सख्त मुकाबले को धमाकों की आवाज से अनुभव कर रहे थे।

२३

लगभग दो घंटे तक मैदान की रहस्य की-सी स्थिति रही, इसके बाद आध घंटे तक बिल्कुल सन्नाटा। सहसा नसीम के कमरे का दरवाजा खुला और आफ़ताब ने प्रसन्नता के नारे लगाते हुए कहा—"अस्सलामअलेकुम!" आफ़ताब के पीछे मुनीर अपनी वर्दी में रिवाल्वर ताने हुए मौजूद था। कुछ न पूछिए

यह कि नवाव साहब नंगे पांव बाहर निकल आये और बेगम साहिबा भी पर
वरदा छोड़कर बाहर के कमरे में आ गई। कुछ न पूछिए कि थोड़ी देर त
दशा क्या थी। कोई रो रहा है तो कोई हँस रहा है, किसी की बलाएँ ली ज
रही हैं, कोई सदके हो रहा है, किसी से मारे खुशी के बात तक नहीं होती
अब तो ज़रा होश ठीक हुए तो सबने देखा कि ग़ज़ाला, वही मोटर ड्राइव कर
वाली लड़की, वही रिवाल्वर चलाने वाली निडर सुन्दरी और वही सात पर्दों
रहकर बेनकाब होकर निकल आने वाली नवाबज़ादी, एक कोने में अत्याधि
मौन भाव से खड़ी नमाज़ का शुक्राना अदा कर रही थी। नवाब साहब क
भी अब होश आया। जल्दी-जल्दी वुज़ू[1] करके नमाज़ अदा करने लगे।

इधर ये नमाज़ से फ़ारिग़ हुए उधर यह स्वागत और बिछड़ों से मिला
के तूफान ने दम लिया तो आफ़ताब ने कहा—"आप लोग देख रहे हैं नसी
को ? मेरे खयाल में तो इनकी तन्दुरुस्ती ईर्ष्या करने की हद तक अच्छी ह
गई है।"

बेगम साहिबा ने कहा—"अरे भैया इस तरह तो मुँह भर कर न कहो
उसका हज़ार-हज़ार शुक्र व एहसान कि उसने मुझ दुखियारी की सुन ली।"

नवाब साहब ने कहा—"जी और क्या, आप ही की तो उसने सुनी होगी
बेग़म साहिबा सुनी गई है मेरी।"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"मियां रफ्फू मैं तुम से बयान नहीं क
सकता कि क्या लुत्फ आया है उस कैद बन्द में। और यह सब हमारे बरखु
दार मियाँ नसीम की जादूगरी का नतीजा था कि उस कैदखाने को भी आप
जैसे हम लोगों के लिए जन्नत बना दिया था। हाय ! हाय ! मालूम नह
वह ग़रीब तिवारी किस हालत में होगा ? खुदा उसको खुश रखे।"

नवाब फलक रफअत साहब ने कहा—"यह तिवारी कौन बुज़ुर्ग हैं ?"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"उन डाकुओं का सबसे बड़ा सरदार।"

बेग़म साहिबा ने कहा—"अल्लाह की मार निगोड़े मारे पर, झाड़ू फेर
उसकी सूरत पर।"

[1] मुंह हाथ धोना।

ग़ज़ाला ने माँ का मुँह बन्द करते हुए कहा—"न अम्मीजान, उस बेचारे को ऐसा न कहिए। आपको नहीं मालूम कि वह क्या है ?"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"वाक़ई फ़रिश्तों-जैसा स्वभाव का डाकू है।"

फ़लक रफ़अत साहब ने हँस कर कहा—"सुब्हान अल्लाह ! फ़रिश्ता स्वभाव और फिर डाकू ? भाई साहब की भी क्या बातें हैं ?"

आनन्द ने कहा—"यह बड़ी लम्बी-चौड़ी दास्तान है मगर यह सच्चाई है कि उस डाकू में इतनी शराफ़त थी कि कम-से-कम मुझ शरीफ़ में तो है नहीं। इस पर तो बाद में रोशनी डाली जा सकती है मगर माफ़ कीजियेगा मैं इस हंगामे में बिल्कुल बेपरदा† यहाँ मौजूद हूँ—ना मुहर्रम—"

इस पर एक कहकहा पड़ा। जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"अरे साहब ! इस बच्चे ने उस खोह में पहुँचने के बाद कम-से-कम मेरा तो हर ग़म भुला दिया था। वह ख़िदमत की है मेरी, कि मैं तो भूल सकता नहीं उस नेकी को। मियाँ आनन्द परदा होता है ग़ैरों से, तुम सौ प्यारों के प्यारे हो, अब तुमसे क्या परदा ? यह तुम्हारी बहन है ग़ज़ाला, यह तुम्हारी चची हैं और यह बच्ची। यह ? इसको तो मैं भी नहीं जानता ?"

आफ़ताब ने कहा—"यह मेरी बहन है नाहीद। ये हैं सलमा बहन।"

नवाब फ़लक रफ़अत साहब ने कहा—"यह बेड़ा इन ही सब की कोशिशों से पार लगा है। सच्चाई यह है कि अगर ये लोग न होते और ये कारनामे इन नौजवान लड़कियों ने न किये होते तो ख़ुदा जाने क्या नतीजा होता हमारा ? और वह कहाँ हैं डिप्टी साहब ?"

आफ़ताब ने कहा—"वह और नैनीताल के डिप्टी मिस्टर विलियम दोनों उस खोह की तलाशी ले रहे हैं और वहाँ पहरे का इन्तज़ाम वग़ैरह कर रहे हैं, थोड़ी देर में आते होंगे।"

नसीम ने कहा—"मुझे तो रह-रहकर तिवारी का ख़याल आ रहा है। उसके गुम होने में वह ऐसा कीमती इन्सान हमको मिलकर हमसे छूटा है कि यह

† अपरिचित।

यह कि नवाव साहब नंगे पांव वाहर निकल आये और वेगम साहिवा भी पर्दा वरदा छोड़कर वाहर के कमरे में आ गई। कुछ न पूछिए कि थोड़ी देर तक दशा क्या थी। कोई रो रहा है तो कोई हँस रहा है, किसी की वलाएं ली जा रही हैं, कोई सदके हो रहा है, किसी से मारे खुशी के वात तक नहीं होती। अव तो जरा होश ठीक हुए तो सवने देखा कि ग़ज़ाला, वही मोटर ड्राइव करने वाली लड़की,वही रिवाल्वर चलाने वाली निडर सुन्दरी और वही सात पर्दों में रहकर वेनकाव होकर निकल आने वाली नवावजादी, एक कोने में अत्याधिक मौन भाव से खड़ी नमाज का शुक्राना अदा कर रही थी। नवाव साहब को भी अव होश आया। जल्दी-जल्दी वुज़ू‡ करके नमाज़ अदा करने लगे।

इधर ये नमाज़ से फ़ारिग़ हुए उधर यह स्वागत और विछड़ों से मिलाप के तूफान ने दम लिया तो आफ़ताव ने कहा—"आप लोग देख रहे हैं नसीम को ? मेरे खयाल में तो इनकी तन्दुरुस्ती ईर्ष्या करने की हद तक अच्छी हो गई है।"

वेगम साहिवा ने कहा—"अरे भैया इस तरह तो मुँह भर कर न कहो। उसका हज़ार-हज़ार शुक्र व एहसान कि उसने मुझ दुखियारी की सुन ली।"

नवाव साहब ने कहा—"जी और क्या, आप ही की तो उसने सुनी होगी, वेग़म साहिवा सुनी गई है मेरी।"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"मियां रफ़्फ़ू मैं तुम से वयान नहीं कर सकता कि क्या लुत्फ़ आया है उस कैद वन्द में। और यह सव हमारे वरखुरदार मियाँ नसीम की जादूगरी का नतीजा था कि उस कैदखाने को भी आपने जैसे हम लोगों के लिए जन्नत वना दिया था। हाय ! हाय ! मालूम नहीं वह ग़रीव तिवारी किस हालत में होगा ? खुदा उसको खुश रखे।"

नवाव फलक रफ़अत साहब ने कहा—"यह तिवारी कौन वुज़ुर्ग हैं ?"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"उन डाकुओं का सवसे वड़ा सरदार।"

वेग़म साहिवा ने कहा—"अल्लाह की मार निगोड़े मारे पर, झाड़ू फेरो उसकी सूरत पर।"

‡ मुँह हाथ धोना।

ग़ज़ाला ने माँ का मुँह बन्द करते हुए कहा—"न अम्मीजान, उस बेचारे को ऐसा न कहिए। आपको नहीं मालूम कि वह क्या है ?"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"वाकई फरिश्तों-जैसा स्वभाव का डाकू है।"

फ़लक रफ़अत साहब ने हँस कर कहा—"सुब्हान अल्लाह ! फ़रिश्ता स्वभाव और फिर डाकू ? भाई साहब की भी क्या बातें हैं ?"

आनन्द ने कहा—"यह बड़ी लम्बी-चौड़ी दास्तान है मगर यह सच्चाई है कि उस डाकू में इतनी शराफत थी कि कम-से-कम मुझ शरीफ़ में तो है नहीं। इस पर तो बाद में रोशनी डाली जा सकती है मगर माफ़ कीजियेगा मैं इस हंगामे में बिल्कुल बेपरदा† यहाँ मौजूद हूँ—ना मुहरम—"

इस पर एक कहकहा पड़ा। जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"अरे साहब ! इस बच्चे ने उस खोह में पहुँचने के बाद कम-से-कम मेरा तो हर ग़म भुला दिया था। वह ख़िदमत की है मेरी, कि मैं तो भूल सकता नहीं उस नेकी को। मियाँ आनन्द परदा होता है गैरों से, तुम सो प्यारों के प्यारे हो, अब तुमसे क्या परदा ? यह तुम्हारी बहन है ग़ज़ाला, यह तुम्हारी चची हैं और यह बच्ची। यह ? इसको तो मैं भी नहीं जानता ?"

आफ़ताब ने कहा—"यह मेरी बहन है नाहीद। ये हैं सलमा बहन।"

नवाब फ़लक रफ़अत साहब ने कहा—"यह बेडा इन ही सब की कोशिशों से पार लगा है। सच्चाई यह है कि अगर ये लोग न होते और ये कारनामे इन नौजवान लड़कियों ने न किये होते तो खुदा जाने क्या नतीजा होता हमारा ? और वह कहाँ हैं डिप्टी साहब ?"

आफ़ताब ने कहा—"वह और नैनीताल के डिप्टी मिस्टर विलियम दोनों उस खोह की तलाशी ले रहे हैं और वहाँ पहरे का इन्तज़ाम वगैरह कर रहे हैं, थोड़ी देर में आते होंगे।"

नसीम ने कहा—"मुझे तो रह-रहकर तिवारी का ख़याल आ रहा है। उसके गुम होने में वह ऐसा कीमती इन्सान हमको मिलकर हमसे छूटा है कि यह

† अपरिचित।

याद मुश्किल से भुलाई जा सकती है।"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने अनुमोदन किया—"निहायत मुश्किल से। कम-से-कम मैं तो उसको, उसकी खिदमत को, उसकी शरारत को भूल ही नहीं सकता। विचित्र इन्सान है वह शख्स ! और देख लेना वह निहायत कीमती इन्सान साबित होकर रहेगा।"

फ़लक रफ़अ़त साहब ने निहायत प्यार में नसीम के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"बेटा सबसे पहला काम तो यह करो कि इसी वक्त अपने वालिद को तार के जरिये इत्तला दे दो कि तुम वापस आ गये हो। उनका एक खत मेरे पास आया था तुम्हारे मुतालिक। इस खयाल से कि वह परेशान न हों, मैंने उनको लिख दिया था कि नसीम मियाँ काश्मीर गए हुए हैं। क्या करता यह लिखकर कि तुम पर अब से दूर मुसीबत पड़ी है।"

जहानदार मिर्ज़ा साहब ने कहा—"मुसीबत पड़े इसके दुश्मनों पर। इसने तो कैदखाने को भी सबके लिए गुल-व-गुलजार बना दिया था। इसी के नाम का सिक्का चलता था वहाँ। मैं तो इस बच्चे के जादूगर होने का क़ायल हो चुका हूँ। ऐसा बस में किया है इसने डाकुओं को कि इसी के नाम का कलमा पढ़ते थे सब।"

बेग़म साहिबा ने कहा—"कुछ भी हो भाई साहब ! मगर नसीम ने वह काम किया है जो मैं ग़ज़ाला के लिए नहीं कर सकती और ग़ज़ाला मेरे लिए नहीं कर सकती।"

उसी वक्त ग़फ्फ़ूर ने आकर सूचना दी कि डिप्टी साहब आ गये हैं। नवाब फ़लक रफ़अ़त साहब की राय तो यह थी कि मुनीर को भी यहाँ बुला लिया जाए परन्तु नसीम ने विलियम की मौजूदगी में इसको उचित नहीं समझा। अतः बेग़म साहिबा, मिसेज़ जावेद, ग़ज़ाला, नाहीद और सलमा हट गईं और सब मर्द-ही-मर्द रह गये तो उन दोनों को बुलाया गया।

मुनीर ने कमरे में प्रवेश करते हुए नवाब फ़लक रफ़अ़त साहब को सलाम करते हुए कहा—"मुबारक हो किबला-व-काबा[1]।"

---

[1] पूज्य।

नवाब साहब ने कहा—"मियाँ मुबारकबाद तुम वसूल करो, जिसका यह कारनामा है।"

मुनीर ने कहा—"कारनामा अगर सच पूछिए तो आफ़ताब का है। अगर उस मस्त की अक्ल हमारे साथ न होती तो कयामत तक हम उस पहेली को हल नहीं कर सकते थे। अच्छा जनाब नसीम साहब यह लीजिए वह तमाम कागज़ भी मिल गये जिन से जाल बनाए गए हैं। अरे साहब यह खोह तो अजायबखाना है। नोट बनाने का कारखाना उसमें मौजूद है, असलाह खाना उसमें है। शफ़ाखाना उसमें, और मुदा जाने क्या-क्या चीजें हैं। मेरे खयाल में सिर्फ़ जवाहरात ही इतने ज्यादा हैं कि उनकी कीमत का अन्दाज़ा मेरे खयाल में करोड़ों में हो सकता है। लेकिन यह विचित्र स्थान आप ही की बदौलत मालूम हुआ है।"

आफ़ताब—"कुछ अन्दाज़ा किया तुमने, कि खोह के कितने आदमी मारे गये होंगे ?"

मुनीर ने कहा—"चौदह लाशें मिली हैं। दो जख्मी हैं, बाकी जो लोग वहाँ सलामत गिरफ्तार हुए थे उनका इल्म तुमको खुद ही है। और हाँ, खोह के सात नहीं बल्कि असल में दस दरवाज़े हैं जिनमें से दो हम लोगों को खुले हुए मिले। सम्भवतः इन ही दरवाज़ों से वे भागे हैं। और जनाबवाला तलाशी में जो रजिस्टर-मेम्बरान हम लोगों को मिला है उससे मालूम होता है कि अम्मन साहब और दुलारे मिर्ज़ा के अलावा दिलबरजान की खाला साहिबा श्रीमती यानी सबिहा उस गिरोह की मेम्बर थीं। मैंने अभी टेलीफ़ोन कर दिया है कि इन तीनों को मय जनाब नवाब सुलेमान कदर बहादुर के और उनकी श्रीमती दिलबर जान के फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया जाए। उम्मीद तो है कि अब तक सब सरकारी ज़ेवर पहन चुके होंगे।"

नसीम ने कहा—"यानी सुलेमान कदर भी ?"

नवाब फ़लक रफ़अत साहब ने गुस्से में कहा—"क्यों ? आखिर उस मरदूद को क्यों छोड़ा जाए ?"

[1]शस्त्रागार।

नसीम ने कहा—"मुझसे तिवारी ने चलते वक्त कहा था कि सुलेमान कदर निहायत वेवकूफ आदमी है और वेवकूफ से वदला लेना हम लोगों की शान से गिरी हुई वात है।"

मुनीर ने कहा—"अब जनाववाला अपनी इस इन्सानियत और शराफत को तो रखिये ताक पर और सरकारी मामले में दखल न दीजिए। हां साहव! हमको इस मौके पर अपने सबसे वड़े एहसान करने वाले मियां शकूर को न भूलना चाहिए।"

आफ़ताव ने कहा—"जिन्दावाद शकूर। यह असलियत है कि इस व्यक्ति ने जो काम किया है उसकी तारीफ की जा सकती है उसका वदला हम लोग नहीं दे सकते हैं।"

मिसेज जावेद ने आकर कहा—"अच्छा अव आप सव चलिये खाना खाने के कमरे में। यह क्या मिस्टर विलियम, आप तो जा ही नहीं सकते। तशरीफ ले चलिये मेज पर, आप खिसकने की कोशिश कर रहे थे।"

विलियम की वांह मुनीर ने पकड़ ली और ये सव खाने के कमरे में पहुंच गए। खाने से निवृत होकर जव सव अपनी-अपनी तरफ हो लिये तो नसीम ने मौका पाकर ग़ज़ाला से कहा—"सरकार, अव मेरी तरफ से भी मुवारकवाद कुवूल कर लें।"

ग़ज़ाला इन दिनों में वेहद खुल चुकी थी। उसने कहा—"आप मुवारकवाद को लिए फिरते हैं मैं खुद आप ही को कुवूल किए वैठी हूं।" और यह कहकर एक दम से हँसकर जो मुंह मोड़ा है तो नसीम को अपनी ग़लती का अनुभव हुआ कि वह ग़ज़ाला समझकर सलमा से कह गया था। सलमा ने जल्दी से कहा—"आपको घोखा देने के लिए वलिक यों ही मैंने अभी ग़ज़ाला का चेस्टर पहन लिया था। मगर घोखा रहा खूव! अच्छा ठहरिये मैं ग़ज़ाला को अभी भेजती हूँ।"

थोड़ी देर वाद ग़ज़ाला भी आ गई और उन दोनों में जो वातचीत हुई उस को केवल वही दोनों समझ सके।

---

[1] एहसान करने वाला।

लखनऊ पहुँचकर जिस वक्त ये लोग हवेली में दाखिल हुए हैं, सामने है मियाँ शकूर एक मूढ़े पर बैठे हुक्का सामने रखे अपने तजरबों से बाकी नौकरों को फ़ायदा उठाने के लिए कह रहे थे, कि नवाब जहानदार मिर्जा साहब को सबसे पहले देखकर हुक्के की चिलम उलटाते हुए दीवानों की भाँति उनकी तरफ दौड़ा, उनके पाँव पकड़ लिये। जहानदार मिर्ज़ा साहब ने शकूर को उठाकर गले लगाते हुए कहा—"मोहसिन की जगह वह नहीं यह है। तुम हमारे मोहसिन हो और इस खानदान के मोहसिन। हममें से हरके के मोहसिन।"

शकूर ने उनसे छूटकर नसीम के साथ वही हरकत करनी चाही। नसीम ने उसको गले लगाते हुए कहा—"मुझको तुम से यही उम्मीद थी और मुझको तुम पर नाज़ है।"

इसी तरह ये लोग एक-एक से मिलते हुए हवेली के अन्दर पहुंचे तो अब शुरू हो गया पास-पड़ोस के लोगों का आना। फिर हर तरफ से लोग आने लगे। नसीम को लोग इस प्रकार देख रहे थे मानो किसी बहुत बड़े लीडर के दर्शनों के लिए बेकरार हों। यह सिलसिला इतना लम्बा खिंच गया कि नसीम को मौका न मिल सका कि वह शकूर से विस्तारपूर्वक वार्तालाप कर सके। आखिर उसने किसी-न-किसी बहाने से खिसक कर अपने कमरे में आश्रय लिया, ताकि उससे यहाँ का विवरण तो मालूम हो जाए।

शकूर खुद हाल सुनाने और सुनने के लिए बेचैन थे। एकान्त मिलते ही कहने लगे—"मुझको तो मालूम था ही कि हमारे आकाए नामदार पर से जो वक्त गुजर रहा है, टल रहा है—चुनांचे कल सुबह ये लोग सोकर भी न उठे थे कि पुलिस ने कोठी को घेर लिया। सबसे पहले अमान साहब को गिरफ्तार

†गौरव। †मालिक।

नसीम ने कहा—"मुझसे तिवारी ने चलते वक्त कहा था कि सुलेमान कदर निहायत वेवकूफ आदमी है और वेवकूफ से वदला लेना हम लोगों की शान से गिरी हुई वात है।"

मुनीर ने कहा—"अव जनाववाला अपनी इस इन्सानियत और शराफत को तो रखिये ताक पर और सरकारी मामले में दखल न दीजिए। हाँ साहव! हमको इस मौके पर अपने सवसे वड़े एहसान करने वाले मियाँ शकूर को न भूलना चाहिए।"

आफ़ताव ने कहा—"जिन्दावाद शकूर। यह असलियत है कि इस व्यक्ति ने जो काम किया है उसकी तारीफ की जा सकती है उसका वदला हम लोग नहीं दे सकते हैं।"

मिसेज़ जावेद ने आकर कहा—"अच्छा अव आप सव चलिये खाना खाने के कमरे में। यह क्या मिस्टर विलियम, आप तो जा ही नहीं सकते। तशरीफ ले चलिये मेज़ पर, आप खिसकने की कोशिश कर रहे थे।"

विलियम की वांह मुनीर ने पकड़ ली और ये सव खाने के कमरे में पहुंच गए। खाने से निवृत्त होकर जव सव अपनी-अपनी तरफ हो लिये तो नसीम ने मौका पाकर ग़ज़ाला से कहा—"सरकार, अव मेरी तरफ से भी मुवारकवाद कुवूल कर लें।"

ग़ज़ाला इन दिनों में वेहद खुल चुकी थी। उसने कहा—"आप मुवारकवाद को लिए फिरते हैं मैं खुद आप ही को कुवूल किए वैठी हूँ।" और यह कहकर एक दम से हँसकर जो मुंह मोड़ा है तो नसीम को अपनी ग़लती का अनुभव हुआ कि वह ग़ज़ाला समझकर सलमा से कह गया था। सलमा ने जल्दी से कहा—"आपको धोखा देने के लिए वल्कि यों ही मैंने अभी ग़ज़ाला का चेस्टर पहन लिया था। मगर धोखा रहा खूव! अच्छा ठहरिये मैं ग़ज़ाला को अभी भेजती हूँ।"

थोड़ी देर वाद ग़ज़ाला भी आ गई और उन दोनों में जो वातचीत हुई उस को केवल वही दोनों समझ सके।

---

[1]एहसान करने वाला।

लखनऊ पहुँचकर जिस वक्त ये लोग हवेली में दाखिल हुए हैं, सामने ही मियाँ शकूर एक मूढ़े पर बैठे हुक्का सामने रखे अपने तजरबों से बाक़ी नौकरों को फ़ायदा उठाने के लिए कह रहे थे, कि नवाब जहानदार मिर्ज़ा साहब को सबसे पहले देखकर हुक्के की चिलम उलटाते हुए दीवानों की भाँति उनकी तरफ़ दौड़ा, उनके पाँव पकड़ लिये। जहानदार मिर्ज़ा साहब ने शकूर को उठाकर गले लगाते हुए कहा—"मोहसिन की जगह यह नहीं यह है। तुम हमारे मोहसिन हो और इस खानदान के मोहसिन। हममें से हरके के मोहसिन।"

शकूर ने उनसे छूटकर नसीम के साथ वही हरकत करनी चाही। नसीम ने उसको गले लगाते हुए कहा—"मुझको तुम से यही उम्मीद थी और मुझको तुम पर नाज़ है।"

इसी तरह ये लोग एक-एक से मिलते हुए हवेली के अन्दर पहुँचे तो अब शुरू हो गया पास-पड़ोस के लोगों का आना। फिर हर तरफ़ से लोग आने लगे। नसीम को लोग इस प्रकार देख रहे थे मानो किसी बहुत बड़े लीडर के दर्शनों के लिए बेकरार हों। यह सिलसिला इतना लम्बा खिंच गया कि नसीम को मौका न मिल सका कि वह शकूर से विस्तारपूर्वक बातचीत कर सके। आखिर उसने किसी-न-किसी बहाने से खिसक कर अपने कमरे में [illegible] लिया, ताकि उससे यहाँ का विवरण तो मालूम हो जाए।

शकूर खुद हाल सुनाने और सुनने के लिए बेचैन थे। [illegible] कहने लगे—"मुझको तो मालूम था ही कि हमारे आक़ा [illegible] वक्त गुज़र रहा है, टल रहा है—चुनांचे कल सुबह [illegible] थे कि पुलिस ने कोठी को घेर लिया। सबसे पहले [illegible]

---

[1]गौरव। [2]मालिक।

किया गया। उसके बाद दुलारे मिर्जा को, और आखिर में दिलवर तथा नवाब वेमुल्क की बारी आई।"

नसीम ने कहा—"उन लोगों ने कोई मुकाबला तो नहीं किया ?"

शकूर ने कहा—"मुकाबला क्या करते, पड़े सो रहे थे। सुलेमान क़दर ने अलबत्ता लौंडियों की तरह रोना शुरू कर दिया। उनसे ज्यादह खामोशी से तो दिलवर ने हथकड़ियाँ पहनीं।"

नसीम ने कहा—"और दिलवर की माँ ?"

शकूर ने कहा—"दिलवर की खाला कहिये। उसको भी उसी वक्त गिरफ्तार किया गया है। मेरी बीवी ने उसको और मैंने उन सबको विदा किया। अब हमारे नकली नवाब के मकान पर असली सरकारी ताला पड़ा हुआ है और उस चुड़ैल के घर को भी बन्द कर दिया गया है। अब आप बताइये ! आप तो अच्छे रहे ? माशा अल्लाह सेहत तो बुरी नहीं मालूम होती। मेरी आँखों में खाक, कुछ अच्छी ही है।"

नसीम ने हँसकर कहा—"मैं तो जैसा नजर आ रहा हूँ उससे भी कुछ ज्यादा ही तन्दुरुस्त हूँ मगर मियाँ शकूर मेरी समझ में वाकई यह नहीं आता कि मैं तुम्हारी इस मुहब्बत, इस कुर्बानी, और वफ़ादारी का क्या बदला दूँ ?"

शकूर ने बड़ी उम्दा बात कही—"मियाँ ! अगर इन चीजों का बदला हो सकता है तो दे दीजिये, ताकि ये चीजे झूठी साबित हों।"

नसीम ने शकूर को फिर लिपटाते हुए कहा—"बड़ी अच्छी बात कही तुमने, मगर अब अपने फ़र्ज को भी महसूस कर रहा हूँ।"

शकूर ने कहा—"नमक का हक भी होता है सरकार। जो कुछ अदा कर सका अदा किया, जो बाकी रह गया है उसके लिए जिन्दगी बाकी है।"

नसीम ने कहा—"अब किसको अदा करोगे, मुझको तो तुम खरीद चुके ?"

शकूर ने हाथ जोड़ कर कहा—"लिल्लाह ! हुजूर कानों को गुनहगार न बनाइये। बस अब तो यही तमन्ना है कि आपके सेहरे के फूल देख लूँ। मैंने तो, सच्ची बात यह है कि अपनी इस तमन्ना के लिए सब कुछ किया है।"

दरवाजे पर एक भूचाल-सा आ गया। मालूम होता था कि दरवाजा

तोड़ डाला जाएगा। शकूर ने उठकर दरवाजा खोल दिया। यह दरअसल आनन्द साहब थे जो बैंड-मास्टर का अभ्यास कर रहे थे। कमरे में प्रवेश करते हुए बोले—"मियाँ मुनीर और आफताब तो गये कोतवाली वगैरह और मैं यह गौर करने आया था कि इस कमरे मे मैं क्या करूँ, यहाँ राज़ो नियाज़† के बीच महमूद व अयाज़ वाला किस्सा है।"

नसीम ने कहा—"मेरी राय यह है कि जनाब वाला पहले तो करें गुसल इसी गुसलखाने में, इसके बाद शकूर साहब पिलवाएँगे हम दोनों को निहायत उम्दा चाय, इसी कमरे में। फिर हम लोग यह गौर करने के काबिल हो सकेंगे कि अब क्या होना चाहिये।"

आनन्द ने कहा—"तजवीज तो माकूल है लेकिन तुम्हारी तजवीज है इस-लिए माकूल होने पर कुछ शक-सा हो रहा है। फिर भी वहाँ एक तूफ़ान-सा आया हुआ है। खुदा जाने सारा शहर उमड़ आया है या क्या बात है? और लुत्फ यह है कि हरेक बाध्य कर रहा है कि शुरू से आखिर तक के तमाम हालात सुनाये जाएँ। लाख-लाख कहा कि आप लोग आदमियों की तरह बैठ जाइये मैं उन घटनाओं को सबके सामने वर्णन कर दूँगा, कहिये तो पम्फलेट छपवा दूँ, कहिये तो रेडियो पर बयान कर दूँ? मगर यह भी किसी को स्वीकार नहीं है। बिना किसी आनाकानी के सात मर्तबा तो मुझको यह कहानी शुरू से आखिर तक सुनानी पड़ी, और अब बनारस वाले नवाब साहब सुना रहे हैं। मर्दाना से ज्यादा जनाना में धूम है। वहाँ सम्भवतः औरतें कोरस मे यह कहानी सुना रही हैं। इसलिए कि एक आम चीख-पुकार है। मैं तो बाब भागा वहाँ से, जरूरत से फ़ारिग होने का बहाना करके; हालाँकि सबसे बड़ी जरूरत यही थी कि उन हज़रात से छूट जाऊँ।"

नसीम ने कहा—"इसका मतलब यह है कि मुझको भी अब उधर का रु न करना चाहिए।"

आनन्द ने कहा—"अरे तोबा। तुम अगर गये तो तबर्रक‡ की तरह तु को बाँट खायेंगे। कहीं ऐसा गज़ब भी न करना। और मियाँ शकूर कहाँ गाय

---

†रहस्य वाली बातें। ‡प्रसाद।

हो गये ?"

नसीम ने कहा—"चाय का इन्तज़ाम करने गये होंगे। उनके लिए तो यह नामुमकिन है कि मेरे मुँह से बात निकल जाए और वह उसको पूरा न करें। मगर साहब इस जंग का असली हीरो तो वही है।"

आनन्द ने कहा—"हीरो तो खैर थोड़ा बहुत मैं भी हूँ मगर वाह रे मेरे शेर तिवारी, ऐश करा दिये जेल में भी। यार वह आएगा जरूर हम लोगों से मिलने।"

नसीम ने कहा—"यक़ीनन आएगा और अगर आ गया तो फिर मैं उसको जाने न दूँगा।"

दरवाजा तो खुला हुआ था ही एक साहब सूँघते हुए आखिर पहुँच ही गये कमरे में। और आते ही नसीम से बोले—"माफ़ कीजिएगा, क्या जनाब ही का नाम है नसीम साहब ?"

नसीम ने कहा—"जी हाँ ! इसी खाक़सार† को नसीम कहते हैं।"

उन साहब ने कहा—"मैं (रोजाना कौम) का रिपोर्टर हूँ, मुझको आप इन्टरव्यू दीजिए और अपनी कोई ताजा तसवीर या कहिए तो तसवीर मैं खुद लूँ।"

आनन्द ने कहा—"ठहर जाइए। पहले मैं नसीम साहब से इजाजत ले लूँ तसवीर खेंचने की, इन्टरव्यू मैं ले चुका हूँ।"

उन साहब ने कहा—"आप ? किस अखबार के नुमाइन्दे हैं ?"

आनन्द ने अत्यन्त गम्भीरतापूर्ण स्वर में कहा—"मुल्क का ! हम दोनों मिलकर मुल्क व कौम होते हैं। आप क्यों जहमत फ़रमा रहे हैं मैं आप को मिस्टर नसीम के इन्टरव्यू की नकल दे दूँगा और तसवीर भी।"

उन साहब ने शुक्रिया के ढंग से कहा—"यह तो बहुत ही अच्छा होगा। तो मैं बाहर ठहरूँ ?"

नसीम ने कहा—"मैं एक ही इन्टरव्यू आप दोनों को नहीं देना चाहता। आप मेरे साथ तशरीफ़ लाइये, मैं आपको जो कुछ कहें बताये देता हूँ।"

†सेवक।

· नसीम उन साहब को लेकर बाहर निकल गया और आनन्द ने गुसलखाने का रुख किया। इधर आनन्द नहाने से और उधर नसीम इन्टरव्यू से फारिग़ होकर कमरे में इकट्ठे हुए कि चाय के साथ-ही-साथ मुनीर और आफ़ताब भी आ गये। आफताब ने आते ही कहा—"तुम्हारे प्रतिद्वन्दी काले मुँह वाले से मिल कर आ रहे हैं। बैठे हैं बरखुरदार हवालात में।"

नसीम ने कहा—"यार मुझे तकलीफ होती है इस ज़िक्र से।"

आनन्द ने नारा गुँजाया—"नाराए तकबीर†।"

आफताब और मुनीर ने कहा—"अल्लाह अकबर।"

आनन्द ने कहा—"मौलाना नसीम ?"

आफताब और मुनीर ने कहा—"जिन्दाबाद।"

आनन्द ने कहा—"चाय की प्याली ?"

आफताब और मुनीर ने कहा—"लेके रहेंगे।"

उस वक्त बी खुशकदम एक लम्बी चौड़ी किश्ती लिए हुए तशरीफ़ लाईं। उस किश्ती में तेल माश‡ थे। आपने अत्यधिक श्रद्धा के साथ सदका उतारा—एक एक हार उन तीनों को और एक शकूर को पहनाया तथा नसीम की बलाएँ लेकर कहा—"अल्लाह ने वह दिन तो दिया कि हमारे सरकार घर लौटकर आ गये।"

नसीम ने कहा—"बूआ रौनक यह सब तुम्हारी दुआओं से हुआ है।"

आनन्द ने कहा—बूआ रौनक ! मेरा यह हार तो मेरी होने वाली भाभी को जाकर पहना दो।"

रौनक ने कहा—"कौन भाभी सरकार ? आपकी होने वाली भाभी कौन ?"

नवाब फलक रफअत साहब ने प्रवेश करते हुए कहा—"वेवकूफ कहीं की, ग़ज़ाला को कह रहे हैं।"

नवाब साहब को देखकर ये सब-के-सब खड़े हो गये तो नवाब साहब ने खुद जल्दी से बैठकर कहा—"मियाँ नसीम ! तुमको अन्दर बुलाया गया है। कुछ औरतें तुमको इस घटना के हीरो की हैसियत से और कुछ ग़ज़ाला के होने

†श्रद्धा से भगवान का नाम लेना। ‡उड़द

वाले दूल्हा को हैसीयत से देखना चाहती हैं। इसलिए चन्द मिनट के लिए मेरे साथ आ जाओ।"

नसीम नवाब साहब के साथ हो लिया। घर के अन्दर प्रवेश करते ही बेगम साहिबा ने हाथ पकड़ लिया—"लो भाई, देख लो तुम लोग मेरे दामाद को, है ना चांद का टुकड़ा ?"

बुआ रौनक ने फ़िर बढ़कर बलाएँ ले डालीं चटाचट, और एक निहाय-खस्ता और खुर्राट बड़ी बी ने आकर दुआएँ देते हुए सिर पर हाथ रखक पोपले मुँह से कहा—"बुलन्द इक़बाल है लड़का, माथे से ज़ाहिर है। अल्ल बख्शे इसके नाना को। इसकी समझ से दूर, मेरा मतलब है कि ननिया-स का भी इतना ही चौड़ा माथा था।"

बेगम साहिबा ने उसके कान में चिल्लाकर कहा—"खाला! पसन्द आ मेरा दामाद ?"

बड़ी बी ने कहा—"अल्लाह बड़ी उम्र करे। है ही लालों का लाल, क्यों न पसन्द आता।"

फ़लक रफ़अत साहब ने आवाज़ दी—"अरे भाई इस ग़रीब को अब बाहर भेज दो।

बड़ी बी ने कहा—"कौन है भिश्ती ?"

औरतों में एक कहकहा पड़ा और नसीम उसी से फायदा उठाकर हँसत हुआ बाहर आ गया।

शादी के घर में जो चहल-पहल हो सकती है वह इस घर में इसी वक्त नज़र आने लगी और नसीम को दूल्हा समझ कर देखने वालों की तादाद ब बर बढ़ती रही। आनन्द ने आखिरकार टिकिट लगाने का पक्का इरादा लिया और वाकई अगर यह सूरत हो जाती तो आमदनी काफ़ी होती।